मार्च 2008 ■ Rs.15 /-

चन्दामामा

1947 60 2007

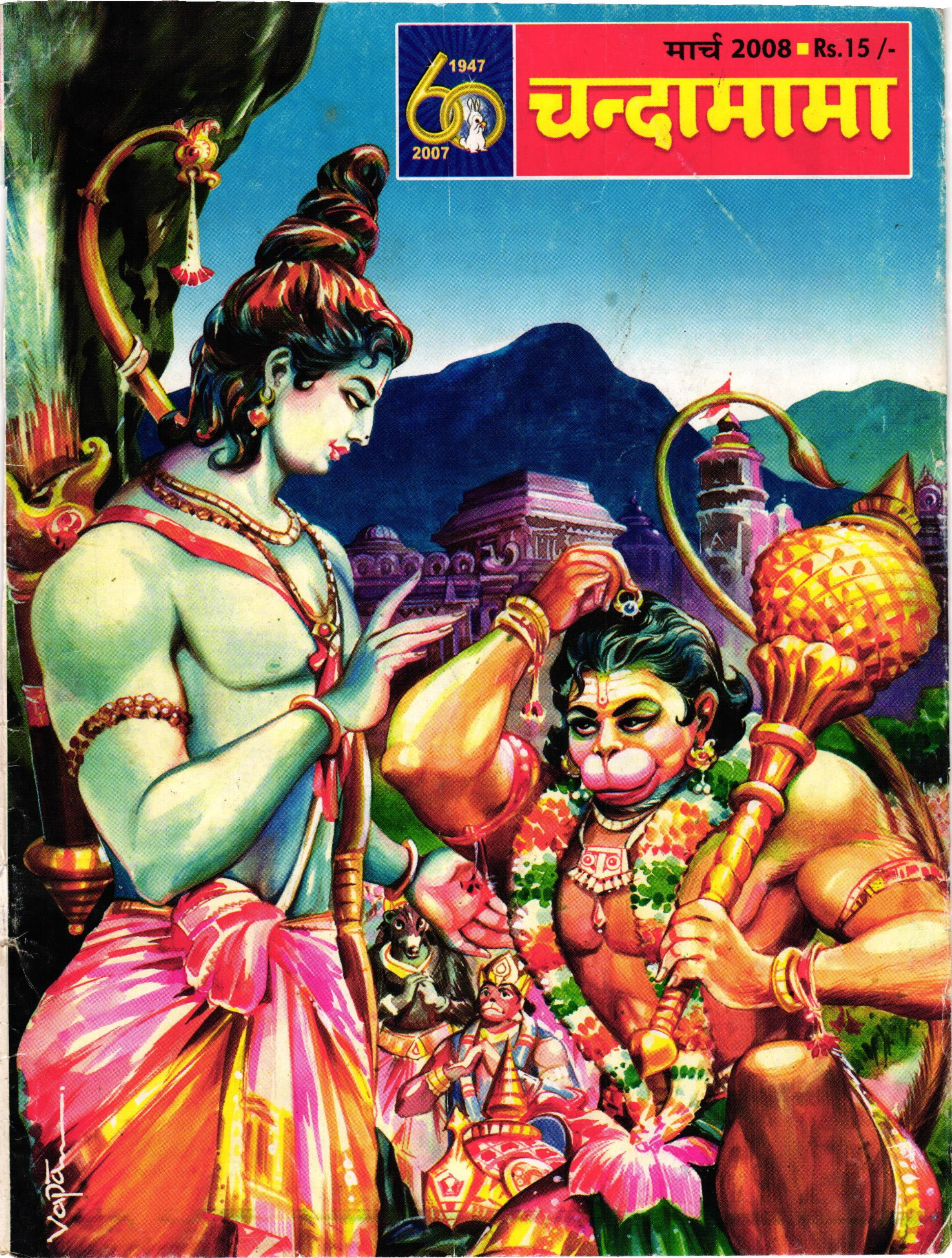

PARLE
Ram and Shyam
यम्मी... पॉपिन्स!
Winning the De-Colouriser
POPPINS
एक दिन राम और श्याम ट्रैकिंग का मज़ा ले रहे थे. तभी अचानक धमाके की एक अजीब सी आवाज़ आती है. लोग घबराकर यहां-वहां भागने लगे.
क्या कोई जंगली जानवर पिंजरे से भाग निकला है?
NATIONAL PARK
चलो पता लगाते हैं.
वो, वहां पर कुछ अजीब सी रौशनी आ रही है?
शऽऽऽऽ!
100 सालों बाद बच्चू आख़िर हाथ आ ही गए. डीकलराइज़र को मेरे हवाले कर दो, नहीं तो...
लगता है वो उस नन्हे प्राणी की जान ले लेगा.
हमें उसकी मदद करनी चाहिए.
राम उस पर पत्थर से वार करते हुए उसका ध्यान बंटाता है.
ईऽऽऽऽ!
इसी बीच श्याम झट से अंतरिक्ष के उस नन्हे प्राणी को आज़ाद कर देता है. बेहोश हो रहे उस प्राणी को श्याम पॉपिन्स खिलाता है.
और तभी अचानक...
शुक्रिया दोस्त ! अब इससे मैं निपटूंगा.
जैसे ही वो राक्षस क़रीब आता है, नन्हा प्राणी उसे अपनी बंदूक से सबक सिखाता है.
राम और श्याम उस भले प्राणी के दोस्त बन जाते हैं.
शुक्रिया दोस्तों ! आपने इस ब्रम्हाण को अंतरिक्ष के दुश्मनों से बचाकर मुझे पॉपिन्स का अनमोल तोहफ़ा दिया है.
मेरी ओर से ये लो डीकलराइज़र का उपहार. ये किसी भी दुश्मन से उसका रंग और शक्ति छिन सकता है.
राम, श्याम और वो नन्हा प्राणी मज़े से पॉपिन्स खाने लगते हैं.
PARLE POPPINS
GOLI RAINBOW WALI

CALL IT A MAGAZINE PLUS!

Junior CHANDAMAMA

MUCH MORE THAN A MAGAZINE FOR TINY-TOTS – TO KINDLE YOUR YOUNG ONE'S IMAGINATION

The young and the old react thus:

The info-park pages are very useful as they help us to know various facts about different topics. (January 2008)
- S. Athreya Uppili (8), Bangalore

The page for Parents and Teachers is a wonderful addition to the unique **Junior Chandamama.** Very often, I see my son poring over the pages when he runs to me for a meaning, explanation or clarification. (January 2008)
- Kamaljit Arora, Chandigarh

For your gift subscriptions, send the coupon below along with the remittances.

Name of child .... Age .... Class .... School ....

Home Address ....

.... Pin Code ....

Please enter 1 year subscription (12 issues delivered at door) for Rs. 170/-

DD / Cheque* No.......................on.......................Bank for Rs.......................enclosed.

* Add Rs. 90/- on outstation cheques.

M.O. for Rs. 170 sent from .... Post Office Receipt No. .... Date ....

Cheque / DD / MO in favour of **Chandamama India Ltd.**
Mail to : **Chandamama India Ltd.**, JVL Plaza, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet
Chennai - 600 018. Note : Allow 4 weeks for the first copy to arrive by post.

Date **Signature**

चन्दामामा सम्पुट-५९ मार्च २००८ सञ्चिका-३

विशेष आकर्षण

चार कार्यदक्ष (वेताल कथाएँ) ...१९

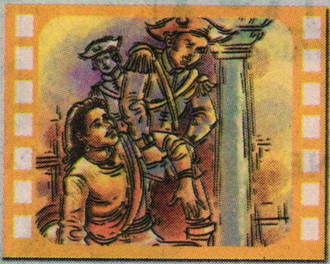

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-६ ...३६

बिहार की एक लोक कथा ...४४

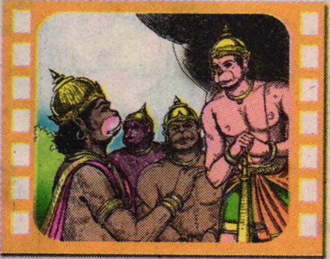

रामायण (किष्किन्धा काण्ड-५) ...५७

अंतरंग

* पाठकों का पन्ना ...०६
* नेत्र संजीवनी ...०७
* अक्षय निधि ...१०
* भयंकर घाटी-३१ ...१३
* भारत दर्शक ...२५
* कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-९ ...२६
* समाचार झलक ...२९
* आधी रात ...३०
* महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-२७ ...३४
* अद्भुत सरसफल ...४०
* चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-२ ...४३
* भगवान को मौक़ा ...४८
* बीरबल की कहानियाँ-७ ...४९
* ओलम्पिक समय के गलियारे से ...५३
* जातक कथा ...५४
* राजा की प्रतियोगिता ...६३
* अपराजेय गरुड़ - २६ ...६७
* भारत के धरोहर स्थल ...७१
* बच्चे अखबार की सुर्खियों में ...७२
* आप के पन्ने ...७३
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

देवता क्षीर सागर के रत्नों से तृप्त न होकर, कालकूट विष से न घबराकर, अमृत के पाने तक प्रयत्न करते रहे, इसी प्रकार साहसी व्यक्ति अपनी इच्छा के पूरा होने तक प्रयत्न को नहीं त्यागते।

प्यासा है संसार

धरती का केवल एक तिहाई भाग थल है, अन्य दो तिहाइयों में महासागरों और समुद्रों, नदियों और झीलों, तालाबों और पोखरों तथा मानव निर्मित कूपों का जल है। इस प्रकार जल का अभाव एक असंगत स्थिति है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि दुनिया में करीबन ४,५०० बच्चे हर रोज स्वच्छ और सुरक्षित जल के अभाव में काल-कवलित हो जाते हैं। आंकड़ों के अनुसार चार साल पहले- २००४ में– २२ लाख व्यक्ति असुरक्षित जल से मृत्यु के ग्रास हो गये और उनमें ९० प्रतिशत ५ वर्ष से छोटे बच्चे थे। भाग्यवश, हाल के दिनों में लोग पेय जल के वर्तमान अभाव के कारणों तथा समस्या के समाधान पर विचार करने लगे हैं।

एक प्राकृतिक कारण है ग्लोबल वॉर्मिंग– भूमण्डलीय तापन-जिसने पर्वतीय हिम नदियों (ग्लेसियर्स) को, जो नदियों के जल-स्रोत हैं, प्रभावित किया है। सन १९७५ तक पर्वतों पर के हिमखण्ड एक आकलन के अनुसार आधे हो गये हैं। हिम का कुछ २५ प्रतिशत १९७५ और २००० के मध्य पिघल गया; और अन्य १० से १५ प्रतिशत तब से अब तक के बीच पिघल गया। क्या तुम्हें विश्वास होगा कि गंगा, नील तथा नाइगर जैसी नदियाँ कभी सूखी रेत के ढेर बनकर रह जायेंगी? भूमण्डलीय तापन को, निस्सन्देह, प्रकृति के प्रति मानव के अनादर, उसके द्वारा अन्धाधुन्ध वृक्षों के विनाश, कीमती जल की बर्बादी, सुरक्षित जल के प्रदूषण तथा अन्य कारणों का परिणाम बताया गया है।

क्या तुम्हें यह ज्ञात है कि अधिकांश भारतीय ग्रामों में बच्चों को अपनी माताओं की सहायता करने के लिए मीलों दूर से ढोकर जल लाना पड़ता है। परिणाम स्वरूप, वे न केवल शिक्षा, बल्कि बाल्य जीवन के स्वाभाविक मनोरंजन और आनन्द के सुख से वंचित रह जाते हैं।

जल के अभाव की समस्या के समाधान की खोज करना कितना महत्वपूर्ण और अनिवार्य है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। अब भी समय है, वर्धनशील पीढ़ी को दृष्टि में रखते हुए, हमें एक आन्दोलन की आवश्यकता है। बाइस मार्च को विश्व जल दिवस के लिए एक चिन्तन!

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com

चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar)
Gandhi Ayya, P. Mahesh
Layout Design: R. Sudha
Assistants: D. Revathy, B.A. Hemalata Malini
Research : R. Vaasugi

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar, *National Sales Manager***
Mobile +9199620 70014
email: ravishankar.tn@chandamama.com
Mumbai : **Sanjay Thorat, *Business Development Manager***
Mobile +91 98210 17787
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry
Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road
No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email: sanjay.thorat@chandamama.com
New Delhi : Sushil Sharma, Circulation Manager-North
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,
C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : P. Murali, Asst. Circulation Manager -Karnataka
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street
Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage
Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : Ananth Prakash, Circulation Manager-East
Mobile +91 98351 82202
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Online and Interactive : **Surajit Agarwal**
Mobile +91 99620 70015
email: surajit.agarwal@chandamama.com
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet
CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,
Fax +91 44 2432 2103
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

शुल्कः

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा **'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'** के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

पुरस्कृत पत्र :

लम्बे अर्से से, मैं *चन्दामामा* का पाठक हूँ। जब से होश संभाला है मैंने अपने इर्द गिर्द केवल *चन्दमामा* ही पाया। आज मैं ५५ वर्ष का हूँ किन्तु *चन्दामामा* को पढ़ने का चाव वैसा ही है जैसा आज से ५० वर्ष पूर्व था। *चन्दामामा* इस पत्रिका का यह नाम इतना सही, इतना सटीक, इतना स्थायी है कि दुनिया में शायद ही कोई बाल पत्रिका होगी जिसका नाम इतना विलक्षण (यूनिक) होगा।

चन्दामामा में चूँकि चंदा और मामा दो शब्द हैं जो कि हर बच्चे को प्रिय लगते हैं, उनसे हर बच्चे का जुड़ाव है। फिर नानी दादी भी अक्सर चन्दा और मामा से जुड़ी या उनके आसपास की कहानियाँ सुनाती हैं। इसलिए *चन्दामामा* का अलंकरण चन्दामामा किया जाना सर्वथा उपयुक्त है।

चन्दामामा का सबसे उजाला व सशक्त पहलू है इसकी भाषा, इनमें प्रकाशित होनेवाली कहानियों का चित्रांकन जो किसी माया से कम नहीं।

चन्दामामा को पढ़ते हुए या इसके चित्रों को देखते हुए लगता है किसी मायालोक में पहुँच गये हैं।

वर्तमान में जो धारावाहिक कहानियाँ जैसे भयंकर घाटी, रामायण व २५ वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानियों के साथ अन्य कहानियाँ जो प्रकाशित होती रहती हैं, उनके अलावा *चन्दामामा* की जो जान है, प्राण है, धड़कन है वह है इसकी वेताल कथाएँ।

चन्दामामा इस समय ६० वें वर्ष में चल रहा है किन्तु क्या मजाल की इसकी लोकप्रियता में कमी आई हो। मैं तो उसे ताउम्र पढ़ता रहूँगा।

- ओम उपाध्याय, भोपाल

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

नेत्र संजीवनी

कन्नवर का वैद्य चिंतामणि रोग निर्धारण, चिकित्सा तथा हस्त कौशल के लिए सुप्रसिद्ध था। हर साल गर्मी के दिनों में आसपास के गाँवों के लोग एक अजीब नेत्र रोग से पीड़ित होते थे, जिसे ठीक करने में वह सफल नहीं हो पाता था। इसी को लेकर वह बेचैन रहता था। इस नेत्र रोग के लक्षण थे, अकस्मात् आँखों का सूजना, आँखों से पानी का बहना तथा आँखों में जलन। इस रोग के कारण दृष्टि धुंधली हो जाती थी।

वह इस रोग की चिकित्सा-पद्धति से परिचित था, पर इससे संबंधित नेत्र संजीवनी जड़ी-बूटी के न मिलने की वजह से वह चिकित्सा नहीं कर पाता था। अपनी असहायता पर उसे बहुत दुख होता था। वह जड़ी-बूटी कन्नवर के दक्षिण में स्थित चंद्रावलि पर्वत के नीचे उपलब्ध है, यह वह बखूबी जानता था। परंतु नरभक्षक राक्षस दंपति वहाँ निवास करते थे, इसलिए कोई भी वहाँ जाने का साहस नहीं करता था।

विजयचंद्र नामक एक हाल ही में उसका शिष्य बना। उस जड़ी-बूटी को पाने की उसकी तीव्र इच्छा थी। एक दिन वह गुरु से यह कहकर निकल पड़ा कि आसपास में पायी जानेवाली जड़ी-बूटी ले आऊँगा। पर वह सीधे चंद्रावलि पर्वत की ओर चल पड़ा और दुपहर तक वह पर्वत के पास पहुँच गया। वहाँ पहुँचने के बाद उसने, नेत्र संजीवनी जड़ी-बूटी को इकट्ठा कर लिया, वहाँ के पेड़ों से फल तोड़कर खा लिया और एक वृक्ष के नीचे बैठ गया।

उस समय एक भयंकर आवाज़ सुनायी पड़ी, "कौन हो तुम?" वह उस आवाज़ को सुनकर चौंक उठा और सिर उठाकर देखा।

एक राक्षस पत्नी समेत चट्टानों के बगल में

राम शास्त्री

से उसी की तरफ़ बढ़ा चला आ रहा था। उसके भयंकर आकार को देखकर विजयचंद्र पहले डर तो गया, पर बाद में संभल गया। उसने जान लिया, डरने से कोई फ़ायदा नहीं। वह साहस बटोर कर उठ खड़ा हुआ।

''तुमने मेरे सवाल का जवाब ही नहीं दिया। इतनी हिम्मत, इतना घमंड? मुझे देखकर भी तुम नहीं डरते?'' कहता हुआ राक्षस दो क़दम आगे आया।

इतने में राक्षसी ने उसे रोकते हुए कहा, ''तुम्हारा चेहरा देखकर कौन डरेगा? देखना, क्षण भर में उसके मुँह से जवाब उगलवाऊँगी,'' कहती हुई वह आगे आयी। ''मैं मर्द ठहरा। जब मुझी से यह मुमकिन नहीं हो पा रहा है तो औरत होकर तुमसे क्या हो पायेगा?'' कहते हुए क्रोध भरी आँखों से देखते हुए विजयचंद्र से पूछा, ''बताना, मुझे देखकर तुम्हें डर नहीं लगता?''

विजयचंद्र भाँप गया कि पति-पत्नी में सौहार्द नहीं और वे छोटी-सी छोटी बात पर भी आपस में झगड़ते रहते हैं। उसने फ़ौरन कहा, ''तुम दोनों को देखकर डरने की ज़रूरत ही क्या है? हाल ही में तुमसे भी भयंकर राक्षस को देखा। उसने मुझे पर्याप्त धन भी दिया।''

राक्षस ने जोर से हँसते हुए कहा, ''डींग खूब हाँकते हो बालक। मुझ जैसा राक्षस भला तुम्हें क्यों धन देगा और बिना निगले तुम्हें क्यों छोड़ेगा?''

''उसे मेरी सलाह अच्छी लगी। इसीलिए उसने मुझसे दोस्ती की'', विजयचंद्र ने कहा।

''क्या उस राक्षस को तुम्हारी सलाह की ज़रूरत आ पड़ी? आश्चर्य की बात है! बताना तो सही, वह सलाह क्या थी?'' राक्षस ने पूछा।

''अब मैं तुम्हारी बात का जवाब दूँगा।'' उस राक्षस ने पूछा, ''तुम मानव बहुत अक़्लमंद हो, समझदार हो। पत्नियों को अपने काबू में रखना हो तो यह कैसे मुमकिन है? इसके लिए कोई उपाय हो तो बताना।''

अपनी आवाज़ को कम करते हुए राक्षस ने पूछा, ''क्या तुमने उपाय बताया?''

''क्यों नहीं। इसी के लिए तो उसने मुझे भेंट भी दी।'' विजयचंद्र ने बिना हिचकिचाये कह डाला।

यह सुनते ही राक्षस सोच में पड़ गया। उसकी

पत्नी एकदम चुड़ैल थी। हर छोटी-सी बात पर झगड़ती रहती थी। उसकी परवाह ही नहीं करती थी। अपने को उससे बड़ा मानती थी। इसलिए उसे लगा कि पत्नी को काबू में रखने का उपाय जान जाऊँगा तो अच्छा होगा। इसलिए उसने धीमे स्वर में कहा, ''बालक, ज़रा इधर आना।'' फिर विजयचंद्र को थोड़ी दूर ले गया और उससे पूछा, ''वे उपाय क्या हैं, ज़रा मेरे कानों में भी डाल देना। तुम्हें भेंट दूँगा।''

विजयचंद्र कहता रहा, ''ज़रूर बताऊँगा, ज़रूर बताऊँगा'', परन्तु इतने में राक्षस की पत्नी वहाँ आ धमकी और बोली, ''मुझे काबू में रखनेवाले उपाय मेरे पति को बताओगे तो देखना, मैं तुम्हारी क्या हालत करती हूँ। मैं तुम्हें अभी निगलती हूँ।'' वह गरजती हुई उसे पकड़ने के लिए झपटी।

''जा, इससे तुम्हारा क्या जाता है? तुम तो अधम राक्षसी हो। मेरे पैरों पर पड़ी रहने की ही तुम्हारी औक़ात है। इसे निगल डालने का इरादा रखती हो क्या? मैं कदापि यह होने नहीं दूँगा।'' राक्षस ने उसे रोकते हुए कहा।

''तुम्हारे पैरों पर पड़ी रहने की ही औक़ात है मेरी? इसके लिए किसी और को ढूँढ़ लेना। जब तक ज़िन्दा हूँ, यह नामुमकिन है,'' कहती हुई वह और भड़क उठी।

फिर वे दोनों एक-दूसरे को गालियाँ देने लगे। चिकोटीं करने लगे, नाखूनों से एक-दूसरे को काटने लगे और खुलमखुल्ला लड़ने लग गये। विजयचंद्र ने इसे बचने का अच्छा मौक़ा समझा और वहाँ से चुपके से बच निकला।

शाम को नेत्र संजीवनी लेकर गुरु के पास आ गया। गुरु उसकी सफलता पर बेहद खुश हुए।

उन्होंने विजयचंद्र से कहा, ''तुमने साबित कर दिया कि धैर्य होने पर ही अक़्लमंदी काम आती है। तुम्हारी होशियारी अत्यंत प्रशंसनीय है। यही धैर्य मुझमें बिलकुल नहीं था, इसीलिए इस जड़ी-बूटी को अब तक मैं पाने में असमर्थ रहा। तुम्हारी उपकार भरी बुद्धि से यहाँ के लोगों की आँखों की बीमारी दूर हो जायेगी। तुम्हारी इस उपकार से मैं बहुत खुश हूँ। आयुष्मान भव।'' कहकर वैद्य ने शिष्य को आशीर्वाद दिया।

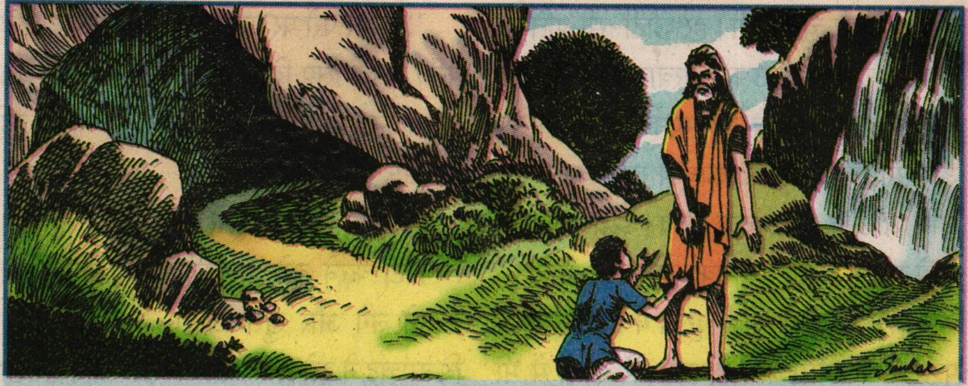

अक्षय निधि

लक्ष्मण एक गरीब किसान था। दिन भर पत्नी समेत खेत में काम करता था। मेहनत न करे तो उनका पेट नहीं भरेगा, उन्हें भूखा ही रहना पड़ेगा। फिर भी वे अपने इकलौते बेटे धनुंजय को बड़े ही लाड़ प्यार से पालने लगे। उनकी चाह थी कि कम से कम उनका बेटा धनुंजय शिक्षित हो।

किन्तु, धनुंजय अव्वल दर्जे का सुस्त था। लिखने-पढ़ने से वह कोसों दूर रहता था। पढ़ने का नाम ही नहीं लेता था। व्यापारी बनने की उसकी तीव्र इच्छा थी। पर, यह संभव नहीं था। उसके लिए आवश्यक पूँजी कहाँ से लायेगा? युद्ध विद्याएँ सीखनी हो तो उसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। साथ ही, वह ऐसी कलाओं से डरता भी था। वह चाहता था कि बिना कुछ विद्या सीखे आराम से रहूँ, सुखी जीवन बिताऊँ और कोई काम न करूँ। इन्हीं सपनों में वह खोया रहता था।

ऐसी स्थिति में धनुंजय को एक महिमावान तपस्वी के बारे में मालूम हुआ, जो उस पार की पहाड़ी गुफाओं में रहता था। उसे यह भी मालूम हुआ कि जब महिमावान वह तपस्वी सरोवर में स्नान करके लौटने लगे तब जो भी उन्हें पहले प्रणाम करता था और अपनी इच्छाएँ प्रकट करता था, वह उनकी इच्छाएँ पूरी करता था। धनुंजय ने उस तपस्वी के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की और उन्हें ढूंढ़ता हुआ निकल पड़ा।

उस दिन सूर्योदय के समय जब वह तपस्वी स्नान करके लौट रहा था, तब धनुंजय ने उसे प्रणाम किया और उसने पैरों को झुककर स्पर्श करते हुए कहा, ''सुलभ मार्ग में वैभवपूर्वक जीने के लिए मुझे आपके आशीर्वाद चाहिये।''

''परिश्रम किये बिना कुछ भी संभव नहीं है। चूँकि इस समय आये व्यक्ति की प्रार्थना को

राम प्रसाद

स्वीकार करना मेरा नियम है, अतः यह ताबीज़ तुम्हें दे रहा हूँ। इसकी सहायता से बड़ा बनने की कोशिश करना। परंतु यह अच्छी तरह से याद रखना कि एक ही बार इसका उपयोग करना चाहिये। मनोरथ सिद्धि प्राप्तिरस्तु।'' कहते हुए उसने आशीर्वाद दिया और वहाँ से चला गया।

महिमामयी ताबीज़ को पाकर धनुंजय बेहद खुश हुआ। उसने सोचा ही नहीं था कि महिमावान ताबीज़ इतनी आसानी से मिल जायेगी। वह वहाँ से निकलकर एक नगर में पहुँचा। दिन भर जब वह नगर की गलियों में इधर-उधर घूम रहा था, तब उसने विधन व विवेक नामक दो मित्रों की बातचीत सुनी।

''मैंने सुना है कि तुम्हें एक ही दिन में व्यापार में एक लाख रुपयों का फ़ायदा हुआ। नगर में जहाँ देखो, वहाँ चोरियाँ हो रही हैं। इतनी बड़ी रक़म कहाँ छिपा रहे हो? सावधान रहना।'' विवेक ने कहा।

''मेरे घर में कोई भी मेरी अनुमति के बिना घुस नहीं सकता। इसके लिए आवश्यक इंतज़ाम भी मैंने कर दिया। मेरी बात छोड़ो, अपने बारे में भी सावधान रहना। आजकल तुम्हारे सम्मानों की पंक्ति लग गयी है। इससे जो रक़म मिलती है, वह कहाँ छिपा रहे हो? ऐसे तो तुम्हारे घर की देखभाल करनेवाला कोई है भी नहीं'', विधन ने कहा।

इसपर विवेक ने हँसकर कहा, ''जो भी संपत्ति मुझे प्राप्त हो रही है, उसे अक्षय निधि में परिवर्तित कर रहा हूँ। चोर चोरी भी कर लें, तब भी कुबेर का कोशागार कभी भी ख़ाली नहीं होता। समझ लो, मेरा घर भी कुबेर के कोशागार के समान है।

मुझे इसकी देखभाल करनेवाले की कोई ज़रूरत ही नहीं है।'' विवेक ने कहा।

उनकी बातें सुनकर धनुंजय का मन आनंद से फूल उठा। भाग्यवश उसे मालूम हो गया कि विवेक के घर में अक्षय निधि है। उस निधि को लूटने पर जीवन आराम से कट जायेगा, किसी बात की कमी नहीं होगी। वह विवेक के पीछे-पीछे गया और जान लिया कि उसका घर कहाँ है। वह बड़ा महल था, इसलिए उसे लगा कि अवश्य ही यहाँ बहुत बड़ी निधि होगी।

रात होते ही वह उस महल के पास आ गया, अपने हाथ में ताबीज़ बांध ली और तपस्वी का नाम तीन बार स्मरण करते हुए महल के अंदर आ गया। अंदर सुंदर चित्र, मनोहर पत्थर के शिल्प भरे पड़े थे। अनगिनत ताल ग्रंथ थे। उसने सोचा कि वहाँ हीरे, जवाहरात, धन राशियाँ होंगी, पर वहाँ उसे ये सब दिखायी नहीं पड़े। ढूँढ़ ढूँढ़कर वह थक गया और निराश होकर लौटा।

विवेक की अक्षय निधि के रहस्य के बारे में तपस्वी से पूछने वह गया।

जो भी हुआ, वह सब सुनकर तपस्वी ने हँसते हुए कहा, ''पंडितों के लिए उनका अक्षय धन ज्ञान है। वह ज्ञान पुस्तकों में भरा हुआ होता है। विवेक जो भी कमाता है, उससे पुस्तकें खरीदता है। उन्हीं के लिए वह धन खर्च करता है। इसीलिए उसे चोरों का भय नहीं होता, क्योंकि चोर भला इन पुस्तकों को ले जाकर क्या करेंगे।''

''अब मैं क्या करूँ? क्या आपका दिया ताबीज़ व्यर्थ हो गया?'' दीन स्वर में धनुंजय ने पूछा।

''तुमने विवेक का घर चुना है, इसलिए फिर से उनके घर जाओ। उनका आश्रय पाकर ज्ञान का अर्जन करो। ताबीज़ की महिमा के कारण तुम्हें शीघ्र ही ग्रहण शक्ति प्राप्त होगी और तुम ज्ञानी बनोगे। वही ज्ञान तुम्हारे लिए अक्षय निधि साबित होगा और तुम वैभवपूर्वक रह सकते हो।'' तपस्वी ने कहा।

उनके कहे अनुसार ही उसने विवेक का आश्रय पाया, ज्ञान प्राप्त किया और जल्दी ही वह महान पंडित बनकर सुख के साथ जीवन बिताने लगा।

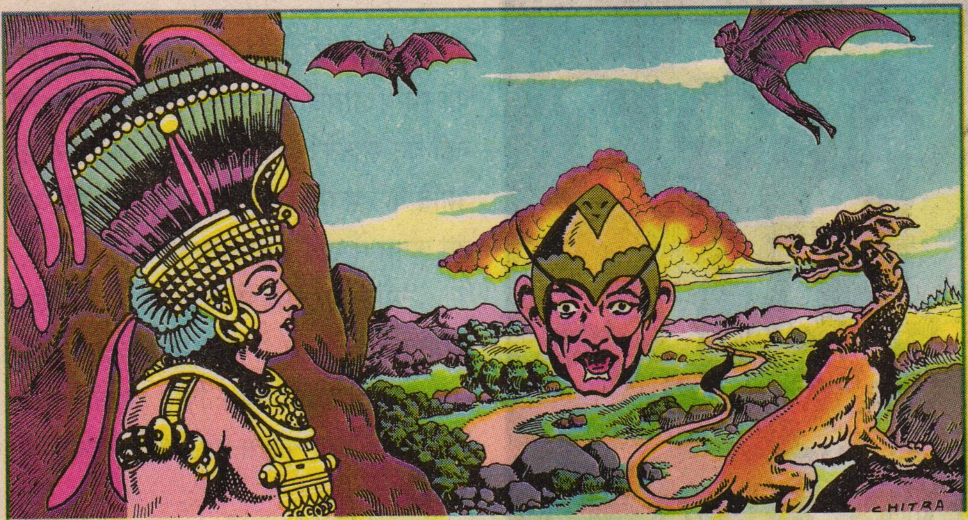

भयंकर घाटी

31

(जंगली आदमियों की सहायता से केशव और उसके साथी कैद से छुड़ा दिये गये। फिर उन्होंने पंखवाले मनुष्यों के झोंपड़ों को आग लगायी। तब जो हो हल्ला मचा, उसमें वे निकल भागे। परन्तु उनको शत्रुओं ने मगरोंवाली झील के पास रोका। बिडाली और श्वानकर्णी केशव को पुकारने लगे। बाद में)

केशव और उसके साथियों को बचाने के लिए जो दो जंगली नवयुवक आये थे वे अपने सरदारों का चिल्लाना सुन बड़े आश्वस्त हुए। एक दो मिनट वे यदि पंखवाले मनुष्यों से मैदान लेते रहे, तो बाद में उनके लोग उनकी मदद के लिए आ जायेंगे, यह वे जानते थे। केशव और जयमल्ल भी जान गये कि क्या हो रहा है। वे भी जंगली गोमान्ग को उकसाने लगे और पंखवाले मनुष्यों को मगरोंवाली झील में धकेलने लगे। इतने में गोमान्ग ने नीचे पड़े भाले को उठाया और उससे पंखवाले मनुष्यों को भोंकने लगा। ''केशव, अब हमें कोई खतरा नहीं है। अब हथियार मिल गया है, तुम भी इन दुष्टों से कुश्ती करना छोड़कर, हथियार लेकर लड़ो।''

गोमान्ग से मार खाकर पंखवाले मनुष्य चीखते-चिल्लाते, मगरोंवाली झील में गिरने लगे।

कष्ट काल है। ग्रह स्थिति अच्छी नहीं मालूम होती। कालभैरव नाराज़ हो गये हैं। अब हम कुछ भी नहीं कर सकते। इन गुहावासियों और जयमल्ल आदि के हम पर हमला करने से पहले ही चलो हम जंगल में भाग जायें। जल्दी करो।''

''मान्त्रिक, यही मैं सोच रहा हूँ। हम गरुड़ जातिवालों को रात में कुछ नहीं दिखाई देता। सूर्योदय होने दीजिये। फिर अपना प्रताप दिखायेंगे।'' यह कहता वह जल्दी-जल्दी भाग चला।''

इतने में जित और शक्तिवर्मा वहाँ भागे भागे आये। उनकी हाथ की तलवारें आधी टूटी हुई थीं। उनके शरीर खून से लथपथ थे।

जित और शक्तिवर्मा को देखते ही ब्रह्मदण्डी के प्राणों में प्राण आये। उसने उनके पास आकर कहा, ''जित, शक्ति, अभी क्या तुम जीवित ही हो। मैं तो इस ख्याल में था कि उन दुष्टों ने तुम्हारी हत्या कर दी है।''

''वे ...और हमारी हत्या।'' जितवर्मा ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, ''देखो, ये हमारी नंगी तलवारें और खून से लथपथ हमारे शरीर। कितने शत्रुओं को हमने मार गिराया है, हम नहीं जानते। तलवारों के टूट जाने के कारण हमें पीछे लौटना पड़ा।''

जितवर्मा की बात पर ज़ोर से हँसते हुए स्थूलकाय ने कहा, ''तुम दोनों में यदि किसी एक ने भी कहा कि उसने शत्रु देखा है, तो मैं उसका विश्वास नहीं करूँगा। तुम दोनों अभी तक किसी पेड़-पाड़ पर छुपे हुए होगे।''

यह देख बाकी लोग सिर पर पैर रखकर भागने लगे। ''सरदार, खतरा। गुहावासी सैकड़ों, हज़ारों की संख्या में हम पर हमला करने आ रहे हैं।'' वे चिल्लाये।

यह सुनते ही पंखवाले मनुष्य, वहाँ से जंगल की ओर भागे। गरुड़ के मुँहवाले सरदार ने भी सोचा कि अपने आदमियों को उकसाकर, जंगलियों से युद्ध करना ठीक नहीं होगा। परन्तु यदि एक बार पीठ दिखाई गई, तो बाद में, ये लोग हमें कुछ समझेंगे ही नहीं, उसने यह भी सोचा। पर अब क्या किया जाये? वह दुविधा में पड़ गया। एक तरफ कुआँ और दूसरी तरफ खाई।

गरुड़ के मुँहवाले की दुविधा जानकर, ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने मन्त्रदण्ड उठाकर कहा, ''जय क़ालभैरव, गरुड़ महाराज! यह हमारे लिए

यह सुनकर जित और शक्तिवर्मा को क्रोध आ गया और वे स्थूलकाय पर अपनी टूटी हुई तलवारों से हमला करने ही वाले थे कि गरुड़ के मुँहवाले ने उनको रोकते हुए कहा, ''छी, जानते हो? तुम्हारे कारण ही हमारे राज्य पर आपत्ति आयी है। तुम्हारे पहरे में से, ये दुष्ट कैसे भाग निकले? यह बात मुझे अभी मालूम होनी चाहिए। नहीं तो तुम्हें पक्षी माता पर बलि चढ़ा दूँगा।'' उसने उन पर भाला उठाया।

इतने में गुहावासी उधर आते हुए मालूम हुए। ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने गरुड़ के मुँहवाले सरदार का हाथ पकड़कर कहा, ''गरुड़ महाराज! आप ज़रा शान्त होइये। इन जंगलियों का गिरोह इसी तरफ़ आ रहा है। यदि हम यहाँ से पहले भागे नहीं, तो खतरा आ पड़ेगा... ''

ब्रह्मदण्डी अभी कह ही रहा था कि गरुड़ के मुँहवाला जंगल की ओर भागने लगा। स्थूलकाय, ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक, जितवर्मा और शक्तिवर्मा भी उसके पीछे भागे।

जितवर्मा ने शक्तिवर्मा से कहा, ''देखा शक्ति, हमने शत्रुओं को मारने काटने में जो शूरता दिखाई, वह किसी काम की न रही। उस पंखवाले आदमी के साथ, यह ब्रह्मदण्डी भी हमारी शूरता पर सन्देह करता-सा मालूम होता है। अब तुम ही बताओ, आगे क्या किया जाए?''

''दोनों ही नहीं, यह माँस का लोथड़ा स्थूल-काय भी हमारा अपमान कर रहा है। अब तो हमारी तलवारें खुण्डी हो गई हैं। अच्छी तलवारें मिलते

ही पहले इन सब का काम तमाम करेंगे।'' शक्तिवर्मा ने कहा।

इतने में उनको ''बिड़ाली की जय'' का जयकार सुनाई पड़ने लगा, चमचमाते भाले भी उनकी ओर आने लगे। ''कुछ और तेज़ी से भागो। लगता है, हमें शत्रुओं ने देख लिया है। जित और शक्ति, तुम अपनी बकवास बन्द करो,और चुपचाप रहो।'' यह कहता हुआ ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक हरिण की तरह आगे कूदा।

केशव अपने साथी, बिड़ाली और श्वानकर्णी के गिरोहों को साथ लेकर, गरुड़ के मुँहवाले सरदार की झोंपड़ी के पास गया, पर वहाँ कोई पंखवाला आदमी दिखाई न दिया। केशव और जयमल्ल जान गये कि वे आपत्ति की आशंका करके, जंगलों में भाग गये होंगे। परन्तु अन्धेरे में उनका पीछा

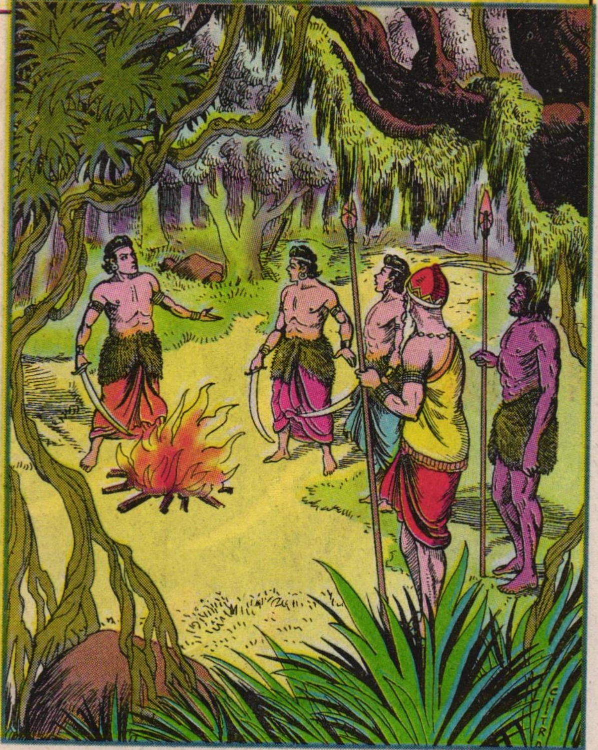

करना सम्भव न था। इसलिए केशव ने एक-दो जंगली आदमियों को जंगल में जाकर पंखवाले आदमियों को मारने के लिए कहा। ऐसे एक जुट के हाथ ब्रह्मदण्डी और गरुड़ के मुँहवाला सरदार भी मारा जाता। परन्तु वे सौभाग्यवश भाग गये।

रात केशव और उसके साथियों ने गरुड़ के मुँहवाले सरदार के जलते झोंपड़े के पास ही काट दी। सूर्योदय हो गया। पंखवाले मनुष्य जिन पंखों का, पेड़ों पर से कूदने के लिए उपयोग करते थे, उनके ढेर के ढेर दिखाई दिये। उनको देखकर बिडाली और श्वानकर्णी जान गये कि उतने दिन तक उन्हें उन्होंने कैसे धोखा दिया था। वे पंख स्वाभाविक न थे।

"हम सोच रहे थे कि वे उनके सचमुच पंख थे। हम सोच रहे थे कि वे पक्षियों की तरह आकाश में उड़ सकते हैं, आकाश के कोई मायावी प्राणी हैं और अद्भुत शक्ति रखते हैं। पर ये तो हमारी तरह जंगली हैं। और बनावटी पंख बना रखे हैं। पर यह सब धोखा है।" बिड़ाली ने कहा।

"उनका धोखा अब मालूम हो गया है। अब उनका भी जंगली जानवरों की तरह हम पीछा करेंगे। वे बड़े डरपोक भी हैं। उनमें कितना साहस है, यह तो हम पहले ही जान गये हैं।" श्वानकर्णी ने कहा।

केशव और जयमल्ल, जंगलवासियों के सरदारों का हौसला देख बड़े सन्तुष्ट हुए। सूर्योदय के बाद बिड़ाली और श्वानकर्णी ने केशव और जयमल्ल और जंगली गोमान्न के गौरवार्थ दावत दी। उस दावत में गाना बजाना भी हुआ। युवक गुहावासियों ने मल्ल युद्ध किये और कई तरह के व्यायाम और करामातों के प्रदर्शन किये।

दावत में जयमल्ल ने बिड़ाली और श्वानकर्णी को एक सलाह दी। चूँकि अब पंखवाले मनुष्यों का भय नहीं रह गया था इसलिए गुफाएँ छोड़कर, समतल प्रदेश में घर बनाकर वहाँ रहने के लिए उनसे कहा।

इस सलाह को अस्वीकृत करते हुए, श्वानकर्णी ने कहा, "हम बाप-दादाओं के ज़माने से गुफाओं में रहते आये हैं। वहाँ हम हर तरह से सुरक्षित महसूस करते हैं। शत्रुओं, जंगली जानवरों और प्राकृतिक प्रकोपों से बचे रहते हैं। और सबसे बड़ी बात है कि पूर्वजों की परम्परा को तोड़ नहीं सकते। खुले आसमान के नीचे सुरक्षा नहीं रहेगी।

अब गुफाएँ छोड़कर, कैसे पेड़ों के नीचे रहें?'' बिड़ाली ने भी यही कहा।

जयमल्ल ने हँसकर कहा, ''एक काम करो। खैर, सब एक साथ गुफाओं में से न आओ, कम से कम आपके जवान लोग तो आयें। गुफाओं में रहने की अपेक्षा रोशनी और हवा में रहना, अधिक स्वास्थ्य प्रदायक है और जब यह कुछ लोग जान जायेंगे, तो और भी उनकी देखा देखी आ जायेंगे। कुछ भी हो- उन पंखवाले मनुष्यों को फिर से यहाँ झोंपड़े न बनाने दो। इस जगह पर पानी आदि की अच्छी सुविधा है। समृद्ध है, इसे न छोड़ना। हमारी बात मानो।''

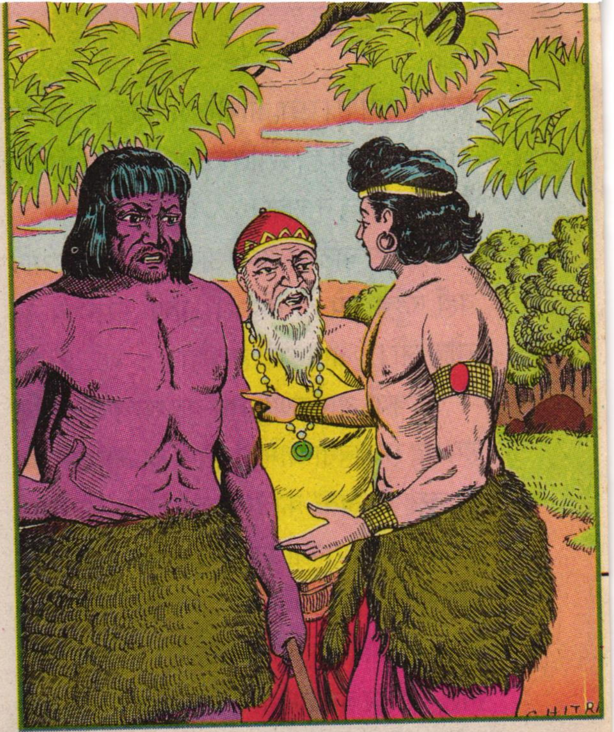

''उन पंखवाले मनुष्यों से हमें कोई भय नहीं है। तुम्हारी सहायता के कारण मैं अपने मूल पुरुष की महिमावाली गदा पा सका। उसी गदा के कारण हम लोगों में शत्रुता हो गई थी। बीड़ाली और मुझ में अब शत्रुता नहीं है। हम मित्र हैं, हमारे गुटों की जो तुमने मदद की है, हम उसे नहीं भूल सकते। तुम जो सहायता चाहो, वह माँगो। हम मुश्किल से मुश्किल काम कर सकते हैं।'' श्वानकर्णी ने कहा।

श्वानकर्णी की बात पर बिड़ाली ने भी अपना सिर हिलाया।

जयमल्ल ने अपने साथियों को देखकर, बिड़ाली और श्वानकर्णी से कहा, ''हम जानते हैं, जो कुछ हम सहायता माँगेंगे, वह तुम करोगे। हमें भयंकर घाटी में जाना है। वहाँ हमें एक जरूरी काम से जाना है, पर वहाँ का रास्ता हमें नहीं मालूम। तुम में अगर कोई ऐसा आदमी है, जो वहाँ जाकर आया हो, तो हमें बताओ।''

जयमल्ल के यह कहते ही बिड़ाली और श्वानकर्णी ने एक दूसरे को देखा। दोनों के मुँह पर आश्चर्य और भय थे।

श्वानकर्णी ने एक बार खंखार कर कहा, ''हमारी पीढ़ी में कोई ऐसा नहीं है, जो वहाँ जाकर जीवित लौटा हो। पर हमने उसके बारे में सुना है। वह विंध्यारण्य के परे एक बड़ी खतरनाक घाटी है। वहाँ पहुँचना बड़ा कठिन है। पर तो भी, तुम वहाँ क्यों जाना चाहते हो?''

''बिड़ाली, तुम्हारी बातों से ऐसा लगता है, जैसे तुम वहाँ जाने का रास्ता जानते हो, वह रास्ता कहाँ है, इतना भर दिखा दो। उस घाटी में एक औषधि है, हमें वह चाहिए। ब्रह्मपुर के राजा को

एक बीमारी है। उस औषधि से राजा की बीमारी ठीक हो सकती है। इसलिए राज-वैद्यों ने हमें भेजा है।'' जयमल्ल ने कहा।

''उस घाटी में जाना असम्भव है, और यदि वहाँ पहुँच गये तो वहाँ से आना असम्भव है। सोच लो।'' श्वानकर्णी ने कहा।

''क्यों श्वानकर्णी, तुम यह सोच रहे हो कि हम वह सब बिना जाने ही इतनी दूर आये हैं। हम हर तरह के खतरे का मुकाबला करने को तैयार हैं। हमें सिर्फ रास्ता दिखा दो। तुम हमारी एक और मदद भी कर सकते हो। इस गरुड़ के मुँहवाले के साथ ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक भी है। यदि वह तुम्हें मिले, तो जब तक हम वापस न आ जायें, तब तक उसे या तो पकड़ लेना या उसे मार देना। हमें कोई एतराज नहीं है।'' जयमल्ल ने कहा।

''हाँ, हम वह देख लेंगे। परन्तु अब हम तुम्हें भयंकर घाटी का सिर्फ रास्ता ही न दिखायेंगे, बल्कि मैं और बीड़ाली तुम्हारे साथ आयेंगे भी। हमलोगों को प्राणों का डर नहीं है। हम भी देखना चाहते हैं कि वह कैसी खतरनाक घाटी है। वहाँ क्या है ऐसा खतरा? और फिर तुम जैसे साहसी शूरवीर साथ में हों तो हम राक्षसों से भी लड़ सकते हैं। हमें तुम्हारे एहसानों का ऋण भी चुकाना है। क्यों बिड़ाली?'' श्वानकर्णी ने कहा।

बिड़ाली ने जोश दिखाते हुए कहा, ''मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मैं अपने जुट के लिए एक नौजवान को सरदार चुनकर तुम्हारे साथ आ सकता हूँ।''

इस पर जयमल्ल और केशव ने आपत्ति की। उसने कहा, ''तुम दोनों को जाने की जरूरत नहीं है। रास्ता बताने के लिए दो-चार आदमियों को साथ भेज दो। फिर कुछ बातचीत हुई। सूर्यास्त के बाद, जयमल्ल और केशव और जंगली गोमान्त को वहाँ के ऊँचे पर्वत की चोटी से, बड़ी जड़ों की सहायता से बिडाली और श्वानकर्णी के लोगों ने एक घाटी में उतारा। उन्होंने बताया कि उस घाटी के सुरंग में से वे चलते गये, तो वे एक भयंकर घाटी में पहुँचेंगे।

जड़ों की सहायता से उतरे हुए केशव और उसके साथियों को कुछ दूरी पर ढोल ढमाका सुनायी दिया। जब उन्होंने उस तरफ़ मुँह फेरा, तो एक व्यक्ति, उनके सामने उछल कूद रहा था। उसके हाथ में एक भयंकर पक्षी था। ***(अभी है)***

चार कार्यदक्ष

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "राजन्, इस श्मशान में भूत-प्रेत घूमते रहते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि अद्भुत शक्तियों को प्राप्त करने के लिए इनकी भी परवाह किये बिना बेरोकटोक परिश्रम करते जा रहे हो। किसी भी प्रकार के खतरे को मोल लेने के लिए सन्नद्ध हो। तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिये कि ऐसी अद्भुत शक्तियों को प्राप्त करने के बाद भी सही समय पर वे काम नहीं आतीं और उल्टे वे तुम्हारे दुश्मन बनकर तुम्हारे विरुद्ध काम करने लगती हैं और तुम्हें विपत्ति में डाल सकती हैं। उदाहरण स्वरूप तुम्हें उन चार कार्यदक्षों की कहानी सुनाऊँगा,

वेताल कथा

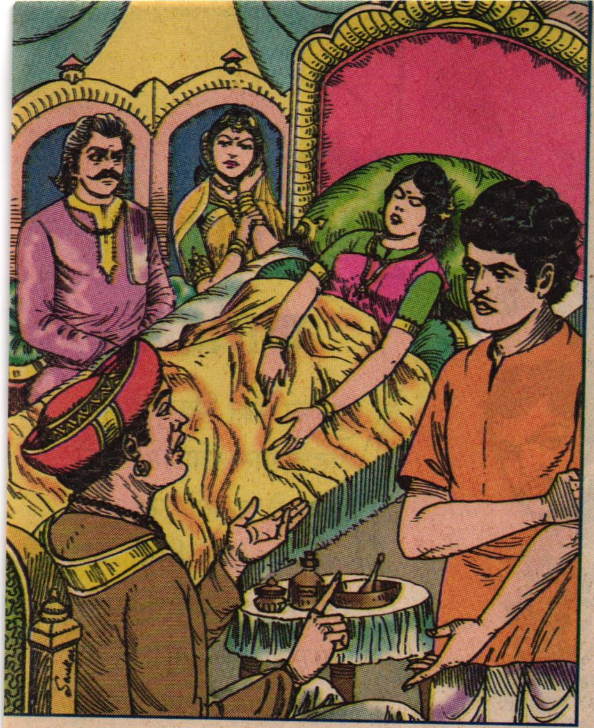

जिनके साथ ऐसा हुआ है।'' फिर वेताल उन चार कार्यदक्षों की कहानी यों सुनाने लगाः

माणिक्यपुर के वज्रों के व्यापारी पद्मनाभ की इकलौती पुत्री थी प्रत्यूषा। उसके बालिग़ हो जाने पर पद्मनाभ चाहता था कि अपने बाल्य मित्र के बेटे के साथ उसका विवाह किया जाये। किन्तु विवाह के कुछ दिनों के पहले प्रत्यूषा एक विचित्र रोग का शिकार हो गयी। वह बोल नहीं पाती और सदा अचेत स्थिति में पड़ी रहती थी। दुखी और परेशान पद्मनाभ ने कितने ही वैद्यों को बुलवाया और उसका इलाज करवाया। पर, कोई फ़ायदा नहीं हुआ। अंत में कृपाल नामक सुप्रसिद्ध वैद्य ने प्रत्यूषा की परीक्षा करने के बाद कह दिया, ''यह नब्ज संबंधी रोग है। इसकी चिकित्सा के लिए दशमूल नामक जड़ी-बूटी की आवश्यकता है, जो दिरसवंचपुर में उपलब्ध होती है। परंतु इस जड़ी-बूटी को ले आना असाध्य कार्य है।'' उसने लंबी सांस खींचते हुए कहा।

''यह दिरसवंचपुर है कहाँ?'' वहीं उपस्थित हेमानंद ने पूछा।

''पूर्वी समुद्र में सौ कोसों की दूरी पर मसूरद्वीप के मध्य यह उपलब्ध होगा। मुझे इसकी जानकारी ताल पत्रों को पढ़ने पर प्राप्त हुई है। इसके बारे में और विवरण मैं नहीं जानता।'' वैद्य ने कहा।

''अपने प्राण की परवाह किये बिना मैं वहाँ जाऊँगा और उस जड़ी-बूटी को ले आऊँगा।'' हेमानंद ने दृढ़ स्वर में कहा।

''उस जड़ी-बूटी को ले आने पर केवल प्रत्यूषा को ही हम बचा नहीं सकते, बल्कि ऐसे रोगों से पीडित होनेवालों की भी रक्षा की जा सकती है। तुम्हें मैं आशीर्वाद देता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस काम में तुम्हें सफल बनावें।'' वैद्य ने कहा।

हेमानंद के साथ उसका मित्र शिवनाथ और वैद्य का शिष्य संजीवराय निकल पड़े। यह विषय जानकर साहसप्रिय कपर्दि नामक एक और युवक ने भी उनके साथ जाने की इच्छा प्रकट की और उनकी अनुमति लेकर वह भी उनके साथ निकल पड़ा।

चारों समुद्र के तट पर पहुँचे और नाव में बैठकर समुद्र में यात्रा शुरू कर दी। पाँच दिनों तक उनकी यात्रा में कोई रुकावट नहीं आयी। छठवें दिन दुपहर को दस हाथियों के वज़न का एक

तिमिंगल सामने आया और नाव को अपनी पूंछ से मारा, जिससे नाव हवा में उड़ी और दूर जाकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी। हेमानंद डूबने ही वाला था, शिवनाथ ने नाव के एक टुकड़े को उसकी ओर बढ़ाया और कहा, ''इसकी सहायता से किनारे पर पहुँच जाना।''

किनारे पर पहुँचे हेमानंद, संजीव राय और कपर्दि शिवनाथ का बड़ी ही बेचैनी से इंतज़ार करने लगे, पर उसका कोई पता नहीं चला। दुःखी हो वे आगे बढ़ने लगे और तीन दिनों तक चलते रहे। तब जाकर उन्होंने पर्वत श्रेणियों को देखा और वे एक चट्टान पर बैठ गये।

थोड़ी देर बाद उन्होंने आकाश में एक विचित्र गाड़ी देखी। वे उसे देखते ही रहे। थोड़ी ही देर में वह उनके सामने आकर रुक गयी। उसमें बहुत ही वृद्ध एक व्यक्ति उन्हें दिखायी पड़ा। उन तीनों ने उस वृद्ध से पूछा, ''दादाजी, आप जानते हैं, दिरसवंचपुर पहुँचने के लिए किस तरफ़ जाना है।''

''वह पर्वतों के बीच में है पर वहाँ पैदल नहीं जा सकते। इस वायु शकट में यात्रा करने पर ही आप वहाँ पहुँच सकते हैं। इसके बिना कोई दूसरा मार्ग नहीं है। बचपन से ही आकाश में विचरने की मेरी प्रबल इच्छा थी। मैंने इसके लिए बहुत ही प्रयोग किये। दूर देशों से यंत्र सामग्री मँगवायी। आखिर आकाश में उड़नेवाले इस वायु शकट का निर्माण कर सका। मेरी उम्र सौ सालों से अधिक है। जीवन में किसी भी प्रकार के सुख का मैंने अनुभव नहीं किया। अभी-अभी मुझमें आशा

जाग रही है। तुममें से यदि कोई अपना यौवन मुझे देने को तैयार हो, तो मैं यह वायु शकट देने को तैयार हूँ। इसमें बैठकर आप लोग दिरसवंचपुर जा सकते हैं।'' बूढ़े ने कहा।

संजीवराय अपना यौवन देने को आगे आया। हेमानंद ने उसे रोका तो उसने कहा, ''अद्‌भुत औषधि को बनानेवाले इस यज्ञ में मैं समिधा बन जाऊँ, इससे बढ़कर भाग्य क्या और हो सकता है? मुझे रोकने की कोशिश मत करना।''

इसके बाद वृद्ध के कहे अनुसार संजीवराय ने मंत्र का पठन किया, जिससे वह वृद्ध बन गया और वह वृद्ध युवक। किन्तु वृद्ध होते ही संजीवराय बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया। अब उस युवक वृद्ध ने उन्हें वायु शकट को चलाने का उपाय बताया और कहा, ''अपने मित्र के बारे में

तुम दोनों निश्चिंत रहो। उसकी देखभाल का भार मुझपर छोड़ दो।''

दोनों दोस्त संजीवराय की स्थिति को देखकर चिंतित हो उठे। पर वे कर भी क्या सकते थे। हेमानंद और कपर्दि वायु शकट से यात्रा करके दिरसवंचपुर पहुँचे। उन्होंने वहाँ देखा कि नगर की गलियों में जंतुओं के सिरों और मानव शरीरधारी विचित्र प्राणी विचार रहे हैं। उन्होंने वायु शकट को झाड़ियों में छिपा दिया और दोनों एक झोंपड़ी में घुस गये। वहाँ एक बूढ़ी ने उन्हें देखा, पर वह जान नहीं पायी कि ये कौन हैं।

''दादी, हम परदेशी हैं। दशमूल नामक जड़ी-बूटी के लिए आये हैं। यहाँ जो रहते हैं, वे मानव हैं या जंतु?'' हेमानन्द ने पूछा। ''जिस जड़ी-बूटी की बात तुम कर रहे हो, वह क़िले के उद्यानवन में है। जिन्हें आपने देखा, वे सब मानव ही हैं। सविस्तार कहूँ भी, तो भी मेरी पीड़ाओं को थोड़े ही तुम दूर कर सकते हो?'' उस बुढ़िया ने कहा।

''दादी, बताना तो सही, इनकी ऐसी दुस्थिति कैसे हो गयी? हम कई विद्याएँ जानते हैं। जितनी सहायता हमसे हो सकेगी, हम अवश्य करेंगे।'' कपर्दि ने कहा।

''हमारे देश की रानी ब्रह्मनंदिनी अद्भुत सुंदरी है। महादंभ नामक मांत्रिक उसके सौंदर्य पर मुग्ध-हो गया और राजकुमार के वेष में आकर उससे विबाह करने के लिए कहा। हमारे देश के संप्रदाय के अनुसार महारानी को जीवन पर्यंत कन्या बनकर ही रहना है। अंतिम दशा में एक और कन्या को महारानी के लिए चुनेगी। इस संप्रदाय का उल्लंघन करने पर देश की प्रजा का अहित होगा। इसलिए उसने मांत्रिक के प्रस्ताव का तिरस्कार किया। मांत्रिक क्रोधित हो उठा और अपने असली रूप में प्रकट हुआ और इस देश के सिपाहियों व वृद्धों को छोड़कर सबको उसने विचित्र रूपों में बदल दिया। अब भी उन्हें सता रहा है। वह समझता है कि ऐसा करने पर रानी उससे विवाह करने के लिए मान जायेगी। वह इसी की प्रतीक्षा में है।'' बुढ़िया ने कहा।

''मांत्रिक को निर्वीर्य बनाने का क्या कोई उपाय है?'' कपर्दि ने पूछा।

''अद्भुत शक्तियों से भरा एक मंत्रदंड उसके हाथ में है। सुना है कि यही उसका बल है।'' जब बूढ़ी उनसे यह बता रही थी तब मांत्रिक उनके

सामने प्रत्यक्ष हो गया और पूछा, "तुम लोग कौन हो? यहाँ कैसे आये?"

"तुम्हारे अत्याचारों का अंत करने आये वीर हैं?" कपर्दि ने कहा।

"जानते हो, मैं मांत्रिक हूँ", कहते हुए महादंभ जब मंत्रदंड को ऊपर उठाने वाला ही था तब कपर्दि ने अपनी ध्वनि को बदलते हुए कहा, "जानते हो, मैं महा मांत्रिक हूँ।" उसकी कंठ ध्वनि सुनकर महादंभ डर गया और उसका मंत्रदंड ज़मीन पर गिर गया। कपर्दि ने छलांग मारकर उस मंत्रदंड को अपने हाथ में ले लिया। यह देखकर मांत्रिक अवाक् रह गया।

तभी वहाँ आयी महारानी ने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे मांत्रिक को गिरफ्तार कर लें और अपने वश में ले लें। मांत्रिक के पकड़े जाने पर महारानी बहुत प्रसन्न हुई और उन दोनों के प्रति कृतज्ञता जतायी। उन्हें दशमूल औषधि के पौधे दिये। मंत्रदंड का नाश करने पर वहाँ की प्रजा को असली रूप मिल जाएँगे, पर कपर्दि ने कहा कि नगर की सरहद पार करने पर मंत्रदंड का नाश करूँगा।

फिर दोनों युवक उस स्थल पर गये, जहाँ उन्होंने वायु शकट को छिपाया था। नगर की सरहद पार करने के बाद हेमानंद ने उस मंत्रदंड का नाश करने के लिए कहा तो कपर्दि ने बताया, "मैंने जो जादू सीखा था, उससे महादंभ का गर्व चूर-चूर कर दिया। पर मंत्रदंड भविष्य में हमारे काम आयेगा। उसे अपने ही पास रखेंगे।" फिर भी, सरहद पार करते ही नगर की प्रजा को उनके

असली रूप मिल गये। वायु शकट से यह दृश्य देखकर हेमानंद बहुत ही खुश हुआ। उसके बाद पर्वत श्रेणियों को पार करने के बाद संजीवराय को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हेमानंद ने शकट को नीचे उतारा। वहाँ संजीवराय और शिवनाथ को देखकर वे बेहद खुश हुए।

"वह वृद्ध दयालु है। अपना मन बदलकर उसने मेरा यौवन मुझे लौटा दिया।" संजीवराय ने कहा। "समुद्र से हम किसी और तट पर पहुँच गये, इसलिए यहाँ आने में देरी हुई", शिवनाथ ने कहा। बाद चारों वायु शकट में बैठकर माणिक्यपुरी पहुँचे। दशमूलारिष्ट तैयार करके प्रत्यूषा को दिया गया। अब वह बिलकुल ठीक हो गयी। प्रत्यूषा का विवाह हेमानंद के साथ संपन्न हुआ।

उस दिन की शाम को कपर्दि ने जादू की

प्रदर्शिनी का आयोजन किया। कपर्दि को आशा थी कि उसकी सफलता पर लोग उसकी बड़ी प्रशंसा करेंगे और मूल्यवान भेंटें प्रदान करेंगे। वह मांत्रिक के मंत्रदंड का उपयोग करनेवाला था। पर उल्टे उस मंत्रदंड ने कपर्दि को खूब मारा पीटा। अपमानित कपर्दि ने मंत्रदंड को तोड़ डाला और शर्म के मारे वहाँ से चला गया।

वेताल ने यह कहानी कह चुकने के बाद अपने संदेह प्रकट करते हुए राजा विक्रमार्क से पूछा, ''हेमानंद के साथ गये कपर्दि ने मांत्रिक को हराया और जड़ी-बूटी को पाने में उसे बड़ी सहायता पहुँचायी। मांत्रिक के मंत्रदंड का नाश किये बिना उसे अपने पास ही रखा। पर वह मंत्रदंड बाद उसके उपयोग में क्यों नहीं आया? क्या यह इस बात का पुष्टीकरण नहीं करता कि अद्भुत शक्तियों का विश्वास करने पर वे किसी दिन, कभी न कभी उल्टे उसे ही दंड देंगे। मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे?''

राजा विक्रमार्क ने कहा, ''जड़ी-बूटियों के लिए निकले हेमानंद को तीनों ने सहायता पहुँचायी। यों वे चारों के चारों कार्यदक्ष थे। हेमानंद जब पानी में डूब रहा था तब शिवनाथ ने काठ का टुकड़ा देकर उसकी जान बचायी और मैत्री धर्म निभाया।

नयी औषधि से मानव जाति की भलाई होगी, इसीलिए संजीवराय ने अपना यौवन त्याग दिया। मांत्रिक को निर्वीर्य करने के लिए चातुर्य व सामर्थ्य दिखाने में सफल हुआ कपर्दि। पर, मंत्रदंड के हाथ आ जाने पर उसमें स्वार्थ बढ़ गया और मंत्रदंड के बल पर उसने लाभ पाना चाहा। मंत्रदंड में हालांकि अद्भुत शक्तियाँ थीं, पर वह महादंभ के कंठस्वर के प्रकंपन पर ही काम करती थीं। जो उसे पाते हैं, उसी की सहायता वह करता है। जो उसका तिरस्कार करते हैं, वह उनकी सहायता नहीं करता। इसीलिए उसने कपर्दि के स्वार्थपूरित कार्यों में साथ नहीं दिया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः काशीराम शास्त्री की रचना)

विजेता के लिए इस्पात की तलवार

राजा पोरस और यूनानी विजेता सिकन्दर के मिलन की कहानी पुनरावृत्ति की माँग करती है। जब सिकन्दर ने पोरस से पूछा कि उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाये, पोरस ने कहा, ''एक राजा के समान।'' सिकन्दर के भारत छोड़ने से पूर्व पोरस उसे एक भेंट देना चाहता था। यह इस्पात की बनी एक तलवार थी, क्योंकि तब इस्पात पश्चिमी दुनिया के लिए अनजान था। विश्वास किया जाता है कि इस्पात का निर्माण प्राचीन काल में भारत के गाँवों में किया जाता था। इस्पात की तलवार सिकन्दर को दो हजार वर्ष से भी अधिक पहले भेंट की गई थी।

भारत में मुद्रण का आगमन

भारत में मुद्रित पहली पुस्तक का विमोचन ठीक ४५० वर्ष पूर्व ६ नवम्बर को किया गया था। ऐतिहासिक प्रलेख के दृष्टिकोण से सन २००७ में आयोजित फ्रैंकफर्ट विश्वपुस्तक मेला में भारत ''सम्मानित अतिथि'' था। भारत के ईसाई धर्मप्रचारक होली बाइबिल को यहाँ प्रचलित अनेक भाषाओं में छापना चाहते थे। सन् १५४२ में स्पेन का एक धर्म प्रचारक फ्रांसिस जेवियर तमिलनाडु के, तरंगमबाड़ी (ट्रांकुबार) में बाइबिल पढ़ाता था। उसने पुर्तगाल के राजा से भारत में एक मुद्रण यंत्र भेजने का अनुरोध किया। यंत्र पहले से ही गोवा में था जो कुछ जेसुइट धर्मप्रचारकों द्वारा लाया गया था। पश्चिमी तट पर बोली जानेवाली कोंकणी भाषा में बाइबिल सन् १५५६ में मुद्रित किया गया। भारत मुद्रण करनेवाला विश्व का दूसरा राष्ट्र था।

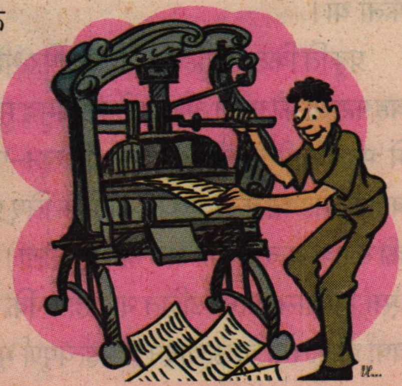

कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - ९

"बच्चों की यह छोटी कहानी मेरे लिए हमेशा प्रिय रही है और जिसे ढेर सारे बच्चों को सुनाना मुझे अच्छा लगता रहा है।" स्वर्गीय डॉ.हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने यह तब लिखा जब २० साल पहले "मेरी प्रिय कहानी" शृंखला में प्रकाशित करने के लिए चन्दामामा के निमन्त्रण पर अपनी कहानी भेजी थी। अपनी बहन सरोजिनी नायडू के समान ही लब्धप्रतिष्ठ हरीन्द्रनाथ, रंगमंच के कलाकार, चित्रकार और वक्ता थे। इनकी कोई औपचारिक उपाधि नहीं होते हुए भी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने इन्हें पी-एच.डी. उपाधि के लिए शोध करने की स्वीकृति दे दी थी। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की जिनमें "लाइफ ऐण्ड माई सेल्फ" शामिल है। इन्हें १९७३ में "पद्म भूषण" से सम्मानित किया गया। हमारी वर्तमान शृखला "मेरी सर्वाधिक पसन्द की कहानी" के लिए जब हम अगली कहानी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, हमलोगों ने आज की पीढ़ी को एक बहुमुखी लेखक की कलम से निकली यह कहानी भेंट करने का विचार किया।

- सम्पादक

विश्व की सर्वाधिक सुन्दर नारी

संगमरमर-नीले आसमान के तले किसानों का एक गाँव था जो आवासीय क्षेत्र से कहीं अधिक खेतों की इतराती और आकाश की नीलिमा से अपनी मिला न करती हरियाली के विस्तार तक फैला था।

प्रकृति कितनी मोहक है, किन्तु फिर भी, यदि वह फसलों को पकने और खेतों की समृद्ध मुस्कान में मदद नहीं करती तो खेतों पर खून-पसीना बहाकर मेहनत करनेवाले किसानों के लिए प्रकति की मोहक सुन्दरता का अर्थ नहीं रह जाता। बच्चो। ऐसा विश्वास करना उचित नहीं होगा कि केवल वर्षा ही फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तुम्हें किसानों की धूसर-भूरी पीठ, छाती तथा कनपटियों से बहती पसीनों की धार को भूलना नहीं चाहिये। उन्हें अपने श्रम का इनाम लेने का हक है।

जो भी हो, अभी मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, जिसे, मुझे आशा है, हर छोटा बच्चा या बच्ची बहुत पसन्द करेगी और हमेशा हमेशा के लिए याद रखेगी।

एक दिन शाम को सूरज मानो किसान की ही तरह अथक परिश्रम करके अपने घर अस्ताचल की ओर लौट रहा था। सचमुच, सूरज को आसमान का एक मात्र अकेला किसान कहा जा सकता है

जो सितारों की दुर्लभ फसल उगाने के लिए अकेला अथक परिश्रम करता है। हाँ, तो सूरज डूब रहा था और किसान-पुरुष-स्त्री दोनों अपनी फसलों को एकत्र कर, जिन्हें मैत्रीपूर्ण सहयोग के साथ बोये थे, अपनी-अपनी झोंपड़ियों में वे लौट रहे थे। उनके साथ उनके बच्चे आनन्द से खेलते-गाते, स्नेह और सुरक्षा के लिए अपनी माताओं से चिपके हुए चल रहे थे।

परन्तु एक छोटा बच्चा तितलियों को पकड़ने में मस्त था। कुछ तितलियों के पंख बड़े और काले थे जिन पर सफेद चित्तियाँ थीं। कुछ के पंख नारंगी और श्वेत रंग के थे और कुछ के लाल चित्तियों के साथ केवल श्वेत थे। तितली भी क्या शानदार चीज़ होती है। यह एक ''फड़फड़ाहट'' है जो एक सुन्दर कविता के समान होती है। यह एक मानो उड़नेवाला फूल है जिस प्रकार फूल, नहीं उड़ सकनेवाली तितली है!

किसान अपनी झोंपड़ियों में लौट रहे थे जो खेतों से कोसों दूर थीं। पर किसान तो कोसों तक पैदल चलने के आदी होते हैं और मार्ग उनके पदचापों के अभ्यस्त हो गये थे। इनके बिना उन्हें आराम नहीं मिलता था।

तितली को पकड़नेवाले छोटे बच्चे ने अचानक अनुभव किया कि वह बहुत दूर निकल गया है, जबकि उसकी माँ विपरीत दिशा में चली गई थी। वह घबरा गया और माँ, माँ चिल्लाने लगा। पर तब तक सूरज पूरी तरह डूब चुका था और अन्धेरा धीरे-धीरे फैल रहा था।

बच्चे की सिसकती आवाज के साथ उसकी माँ माँ की पुकार हवा में गूँजने लगी। खेतों में और उनके आस-पास सन्नाटा था। एक नीरव शान्ति थी।

सौभाग्यवश विपरीत दिशा से पके सेब के रंग का एक मोटा किसान प्रकट हुआ जिसकी आवाज में बिजली की कड़क की प्रतिध्वनि थी। ''क्यों रो रहे हो बच्चे?'' उसने उसकी मदद करने के अन्दाज में पूछा।

''मुझे अपनी माँ चाहिये,'' बच्चे ने सिसकते हुए कहा। लगता था उसकी सांस अभी बन्द हो जायेगी।

Statement about Ownership of
CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 (FormVI), Newspaper
(Central) Rules, 1956

1. **Place of Publication**
   JVL Plaza, Block-A, 6th Floor
   626, Anna Salai, Teynampet
   Chennai-600018
2. **Periodicity of Publication**
   MONTHLY
   1st of each calendar month
3. **Printer's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   Nationality
   INDIAN
   Address
   JVL Plaza, Block-A, 6th Floor
   626, Anna Salai, Teynampet
   Chennai-600018
4. **Publisher's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   Nationality
   INDIAN
   Address
   JVL Plaza, Block-A, 6th Floor
   626, Anna Salai, Teynampet
   Chennai-600018
5. **Editor's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   (Viswam)
   Nationality
   INDIAN
   Address
   JVL Plaza, Block-A, 6th Floor,
   626, Anna Salai, Teynampet,
   Chennai-600018
6. Name and Address of individuals who own the newspaper
   Chandamama India Ltd.
   Board of Directors:
   1. Kiran Kulkarni
   2. Prashant Mulekar
   3. B. Viswanatha Reddi
   JVL Plaza, Block-A, 6th Floor
   626, Anna Salai, Teynampet
   Chennai-600018

*I, **B. Viswanatha Reddi,** do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

(Sd.) B. VISWANATHA REDDI
1st March 2008 *Publisher*

''तुम्हारी माँ किस तरह या कैसी दीखती है?'' किसान ने पूछा।

''वह सुन्दर है।'' बच्चे ने कहा।

''घबराओ नहीं!'' पके हुए सेब के रंग के किसान ने कहा। तभी सड़क पर एक सुन्दर स्त्री प्रकट हुई। ''क्या यही तेरी माँ है? यह सुन्दर है।'' उसने बच्चे से पूछा।

''नहीं, नहीं! मेरी माँ दुनिया की सबसे सुन्दर स्त्री है!''

शीघ्र ही एक और स्त्री वहाँ से गुजरने लगी। ''क्या वह स्त्री तुम्हारी माँ है?''

बच्चा चिल्ला पड़ा, ''नहीं! नहीं! मेरी माँ दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत है!''

एक के बाद एक अनेक औरतें आती गईं पहले से अधिक सुन्दर या पहले की ही तरह सुन्दर। पर बच्चा बेचैन और उदास हो गया और उसे डर हो गया कि अब उसकी माँ फिर कभी नहीं मिलेगी।

पर ऐसा नहीं होता। प्रेम का विधान अपने आप को परिपूर्ण करता है, यदि इसमें विश्वास और श्रद्धा हो।

बच्चे ने एक औरत को अपनी ओर आते हुए देखा और वह खुशी से उछल पड़ा। वह ऊँची आवाज में चीखता हुआ बोला, ''यह है मेरी माँ! वह आ गई, मेरी माँ, आखिरकार!''

लाल पके सेब के चेहरेवाला किसान ठठाकर हँसा जिसे सुनकर स्वर्ग के देवताओं को शक हुआ कि धरती पर क्या हो गया!

बच्चे की माँ बहुत मामूली सी दीखनेवाली एक किसान-औरत थी। वह एक आँख से अन्धी भी थी और चेहरा धूप में पककर काला हो गया था।

''तुम्हारी माँ? हे भगवान! दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत?'' किसान ठठाकर हँसता रहा, अट्टहास करता रहा।

''हाँ, वह विश्व की सर्वाधिक सुन्दर नारी है- मेरी माँ!'' बच्चे ने एक ऐसी आवाज में कहा जिसमें, लगता था, बचपन के वसन्त-काल के सारे सुमन समाविष्ट हों।

बीस की आयु में डॉक्टरेट

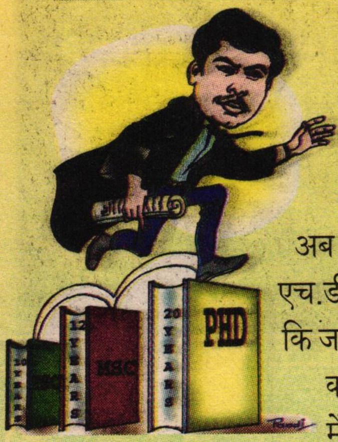

तथागत अवतार तुलसी का नाम क्या तुम्हारे कानों में गूँजता है? इस लड़के ने केवल १० वर्ष की आयु में बी.एस.सी.की उपाधि अर्जित की। दो वर्षों के बाद उसने एम.एस-सी.पास किया। और अब २० की उम्र में इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ साइन्स, बंगलोर से पी-एच.डी. अर्जित करनेवाला यह सबसे कम उम्र का छात्र होगा। कहते हैं कि जब वह ३ साल का था तब उसने नियमित स्कूल में जाने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह पूरा पाठ्यक्रम जानता था। छः वर्ष की आयु में उसने हाई स्कूल कर लिया। उसकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी और वह बहुत तेज गति से पठन कर सकता था। जब वह पहली बार दिल्ली के एक स्कूल में छठी कक्षा में भर्ती हुआ तब वह ८ वर्ष की आयु का था। तभी उसने साथ-साथ सातवीं से दसवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तकें पढ़ लीं। सन १९९७ में उसने जब दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की तब वह केवल दस वर्ष का था।

सागौन का ध्वजदण्ड

केरल के एतुमनूर में महादेव मन्दिर का शीघ्र ही एक नया ध्वजदण्ड होगा, जिसके लिए एक सागौन वृक्ष को काटा गया। इसे इतनी सावधानी से काटा गया कि इसका कोई अंग जमीन पर नहीं गिरा, यह क्रेन की सहायता से सम्भव हो सका। समारोह का आरम्भ उन प्रेतात्माओं के आवाहन से हुआ जिन्होंने इस २०० वर्ष पुराने ऊँचे सागौन को अपना आवास बना रखा था। इसके लिए पूजा प्रधान बढ़ई द्वारा की गई जो ध्वजदण्ड का निर्माण करेगा। प्रेतात्माओं का आवाहन किया गया और प्रतीकात्मक रूप से उन्हें घड़ों में रख कर सील़बन्द कर दिया गया। इसके बाद वृक्ष को काटने की वृक्ष राजा की स्वीकृति के लिए दूसरी पूजा की गई। तब प्रधान बढ़ई ने समारोहपूर्वक एक लकड़हारे को कुल्हाड़ी सौंपी। उसने पूरब की दिशा की जड़ को सबसे पहले काटा। संध्या तक यह काम चलता रहा। और उसके बाद सागौन का कुन्दा जुलूस के साथ मन्दिर के परिसर में पहुँचा दिया गया।

आधी रात

नारायणपुर का भूस्वामी धनुंजय मेहनती किसान था। उसका बेटा प्रसाद अक़्लमंद था, पर वह अव्वल दर्जे का सुस्त था। धनुंजय उसे समझाया करता था, ''बैठकर खाते रहने से पर्वत भी पिघल जाते हैं। पसीना बहाकर काम न करो, पर कम से कम साथ रहकर काम कराओ तो सही।'' पर प्रसाद खेत जाने का नाम ही नहीं लेता था। जोर देने पर अगर जाता भी तो काम करनेवालों से अंटसंट और वे सिर पैर के सवाल किया करता था। उनका काम भी बिगाड़ा करता था। उसके सवालों का कोई मतलब ही नहीं होता था। गाँव में जो भी दिखायी पड़ता, उससे भी ऐसे ही सवाल करता था, जिससे वह नाराज़ हो उठता था। इसलिए प्रसाद को देखते ही लोग उससे दूर भागते थे और उससे पिंड छुडाने पर आराम की सांस लेते थे।

एक बार वह अपने नौकर लच्छू को लेकर मेला देखने राजवर गया। वहाँ से निकलते-निकलते अंधेरा छा गया। गाँव पहुँचने की जल्दी में वे भटक गये और उनकी समझ में नहीं आया कि क्या करें और गाँव कैसे पहुँचें। तब उन्होंने एक झिलमिलाती रोशनी देखी। वे वहाँ गये तो एक झोंपडी में उन्होंने एक बैरागी को देखा। उसे देखते ही प्रसाद पूछने लगा, ''यहाँ तो कोई दूसरा आदमी ही दिखायी नहीं देता। इस जंगल में अकेले ही क्या करते हो, कैसे रहते हो? गाँव से दूर रहने मात्र से क्या सब तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी? यहाँ तो खाने के लिए भी कुछ नहीं है? तुम सचमुच बैरागी हो या पारिवारिक कष्टों को सह न पाने के कारण यहाँ भाग आये हो? कहीं ऐसा तो नहीं कि अपराध करके अपने को बचाने के लिए यहाँ छिपे हो?'' यों आदत के अनुसार सवाल पूछता गया।

काशीराम शास्त्री

बैरागी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''लगता है, बहुत थक गये हो। यह केला खा लेना और आराम से सो जाना। सवेरे तुम्हारे सारे संदेहों को दूर करूँगा।''

प्रसाद ने केला खा लिया और उसी झोंपड़ी में सो गया। लच्छू उससे थोड़ी दूरी पर सो गया।

इतने में प्रसाद को कई लंबे-लंबे पेड़ दिखायी पड़े। वहाँ तो अंधेरा ही नहीं था। बिलकुल दिन जैसा लगता था। प्रसाद तेज़ी से जाकर वहाँ पहुँच गया। उसे देखते ही कुछ लंबे-लंबे लोग पेड़ों से उतरकर ज़मीन पर आ गये। वे सबके सब उसके पास आ गये और उसे घेर लिया।

उनमें से एक लंबे आदमी ने उसे नमस्कार करते हुए कहा, ''महोदय, मेरा नाम मोरी है। लंबे समय के बाद यहाँ आये अतिथि हैं आप। इस गाँव की तरफ़ से आपका स्वागत करता हूँ। हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिये।''

''आप सबके सब पेड़ों पर से उतरे। तो आपके घर कहाँ हैं?'' प्रसाद ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

''हमारे घर पेड़ों पर ही होते हैं'', कहते हुए मोरी ने ऊपर दिखाया।

सिर उठाकर प्रसाद ने देखा कि उन लंबे-लंबे पेड़ों पर खपरैलों के सुंदर घर हैं। उन्हें देखकर चकित प्रसाद ने पूछा, ''जहाँ तक मैं जानता हूँ, यह आधी रात है। फिर यहाँ तो रोशनी ही रोशनी है, मानों दिन हो। यह तो अजीब बात है।''

तब मोरी ने कहा, ''हम सूरजपुर के गाँव के हैं। यहाँ सूर्यास्त नहीं होता। हमारे पूर्वजों ने कहा कि यहाँ जो भी आते हैं, उनका आतिथ्य करना। बड़ों ने जिन नियमों को लागू करने के लिए कहा, उन्हें लागू करना हम अपना कर्तव्य मानते हैं। ऐसा न करने पर सूरज डूब जायेगा और यहाँ अंधेरा ही अंधेरा होगा। अतिथियों के लिए विशेष रूप से एक सुंदर अतिथि गृह का भी प्रबंध किया गया है।''

''क्या वह अतिथि गृह भूमि पर है या इन्हीं में से किसी पेड़ पर?'' प्रसाद ने पूछा।

''वह अतिथि गृह इन पेड़ों से भी लंबे एक पेड़ पर है'', कहते हुए उसने प्रसाद को एक लंबे पेड़ पर बनाये गये अतिथि गृह को दिखाया।

''मुझे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता'', प्रसाद ने कहा। ''आप इस विषय को लेकर परेशान मत

होइये। निश्चिंत रहिये। इसका पूरा प्रबंध हम करेंगे।'' कहते हुए मोरी ने प्रसाद के पैरों में चक्र बांध दिये। प्रसाद उन चक्रों के सहारे पेड़ पर बने अतिथि गृह में पहुँच गया। उसके पीछे-पीछे बाकी लोग आ गये और बांस से बनाये एक सुंदर सिंहासन पर उसे बिठाया।

प्रसाद ने देखा कि वहाँ के पत्थरों के चूल्हे के चारों ओर एक काली बिल्ली इधर-उधर घूम रही है। उस बिल्ली की ओर एकटक देखते हुए प्रसाद से मोरी ने कहा, ''जो लोग सुस्त होते हैं, परिश्रम करना नहीं चाहते और निठल्ले बैठकर खाना चाहते हैं, उन्हें दण्ड के रूप में काली बिल्लियों के रूप में हम बदल देते हैं और उतना ही नहीं हम उनसे सबके लिए रसोई बनवाते हैं।'' यह सुनकर प्रसाद चौंक उठा।

इतने में नीचे शोरगुल सुनायी पड़ा तो प्रसाद ने झुककर नीचे देखा। वहाँ कई लोग नाच रहे थे।

''लंबे अर्से के बाद मेहमान बनकर आप आये हैं, इसलिए इस अवसर पर हम उत्सव मना रहे हैं'', मोरी ने कहा।

ज़मीन पर नाचनेवाले लोग प्रसाद से नीचे आने का इशारा कर रहे हैं। प्रसाद ने फिर से पैरों में चक्र बांधे और नीचे उतरा। उसने देखा कि वे लोग बांस से बने एक पात्र में भरा रस पी रहे हैं। उनमें से एक ने एक पात्र प्रसाद को दिया। उस रस को थोड़ा-सा पी जाने के बाद प्रसाद ने कहा, ''बड़ा ही रुचिकर है। पर यह तो बताना कि इस रस को जो दो लोग बांस के पात्रों में भर रहे हैं, वे मौन क्यों हैं और क्यों दुखी दीख रहे हैं?''

''उन दोनों मौन स्वामियों ने ही पाँच प्रकार के फलों के रस में शहद मिलाकर इस अद्भुत पेय को तैयार किया है। वे व्यर्थ के सवाल पूछ कर सबका समय नष्ट किया करते थे और उन्हें नाराज भी कर देते थे। अर्थहीन प्रश्नों से हमें नाराज़ करनेवाले उन दोनों की जीभों को हमने काट दिया है, जिससे वे ऐसे प्रश्न हमसे फिर से न पूछें और उन्हें इस पेय को बनाने की जिम्मेदारी सौंपी है। ऐसे लोगों को हम इसी प्रकार का दंड देते हैं'', एक लंबे आदमी ने विवरण दिया।

प्रसाद भयभीत हो गया। उसका पूरा शरीर पसीने से भीग गया। इतने में वहाँ आग की वर्षा होने लगी। वे इस वर्षा में बड़े ही उत्साह के साथ नाचने-गाने लगे।

''तुम्हारे आने की ही वजह से आग की यह वर्षा हो रही है। हम तुम्हारे ऋणी हो गये। पूछो, तुम्हें क्या चाहिये? तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी करेंगे'', एक लंबे बूढ़े आदमी ने पूछा।

''मुझे तुरंत गाँव पहुँचाइये। मुझे और कुछ नहीं चाहिये। नहीं तो किसी पेड़ से लिपट जाऊँगा और आत्महत्या कर लूँगा।'' प्रसाद ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

''ऐसा मत कीजियेगा। जैसा आप चाहते हैं, आपको गाँव पहुँचायेंगे।'' यों कहकर चार लोगों ने उसे घुमा-घुमाकर फेंक दिया।

प्रसाद हवा में पल्टियाँ मारता हुआ, 'बचाओ, बचाओ' कहकर चिल्लाने लगा।

पास ही लेटे लच्छू ने प्रसाद को जगाते हुए कहा, ''क्या हुआ मालिक? क्या कोई सपना देखा?''

आँखें खोलकर प्रसाद ने कहा, ''हाँ, सपना देखा था'', लंबी सांस खींचते हुए उसने कहा। ''यह एक बड़ा ही विचित्र असम्भव सा सपना था।''

इसके बाद वह सो नहीं पाया। झोंपड़ी से बाहर आया। कंपा देनेवाली सर्दी में, शरीर पर किसी आच्छादन के बिना एक ही पैर पर खडे बैरागी को देखकर स्तंभित रह गया। सवेरे-सवेरे आँख खोले बैरागी के पैरों पर गिरकर प्रसाद ने प्रणाम किया।

बैरागी ने मुस्कुराते हुए उसे उठाकर पूछा, ''क्या तुम्हारे संदेह दूर हो गये पुत्र?''

प्रसाद ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया।

''समय दैव स्वरूप है। सुस्ती बहुत ही नीच स्वभाव है। अनावश्यक वाचालता से समय को व्यर्थ मत करना। समय का सही उपयोग करना'' बैरागी ने यों कहकर उसे आशीर्वाद दिया।

नौकर के साथ लौटे प्रसाद ने उस दिन से लेकर अनावश्यक प्रश्न पूछने की आदत छोड़ दी। सुस्ती त्यज दी और खेत कर जाकर मेहनत करने लगा। पिता के कहे अनुसार काम करते हुए वह उसके हर काम में सहायता करने लगा। शान्त और गंभीर स्वभाव का प्रसाद अब सबसे योग्य कहलाने लगा।

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-२७

मार्क ट्वेन ने अपनी अशिष्टता की क्षतिपूर्ति कैसे की

मार्क ट्वेन सैमूएल लैंगहोर्न क्लेमेन्स (१८३५-१९१०) का छद्म नाम था। ऐडवेन्चर ऑफ टॉम सॉयर तथा ऐडवेन्चर ऑफ हकलबेरी जैसी अनेक विशिष्ट पुस्तकों का यह विख्यात अमरीकी लेखक अपनी विनोदपूर्ण टिप्पणियों और कार्यकलापों के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।

अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में, जब लेखक के रूप में उसे अपने मुहल्ले के लोग भी नहीं जानते थे, उन्होंने अपने धनी पड़ोसी से, जिसकी अपनी एक लाइब्रेरी थी, यह पूछा कि क्या वे अपनी लाइब्रेरी से पढ़ने के लिए कभी-कभी उसे पुस्तक दे सकते हैं।

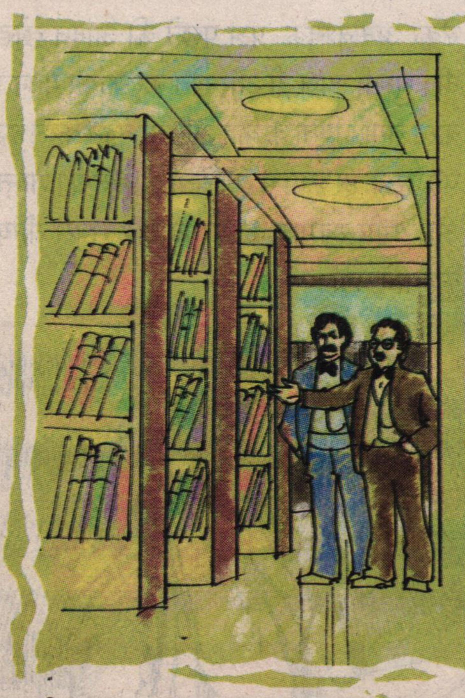

पड़ोसी ने सिर हिलाते हुए स्वीकृति दी पर कहा, "अपनी पसन्द की कोई पुस्तक लाइब्रेरी से ले सकते हो, किन्तु लाइब्रेरी में ही बैठकर पढ़ना होगा। मैं पुस्तक को बाहर ले जाने नहीं देता। मैं इस नियम का कठोरतापूर्वक पालन करता हूँ।"

मार्क ट्वेन को यह शर्त्त मंजूर नहीं था। वह पड़ोसी को 'धन्यवाद' देकर लौट आया।

कुछ महीनों के बाद पड़ोसी ने मार्क ट्वेन के बैठक-कक्ष में झाँककर नमस्कार किया और कहा, "मेरा घास-लावक खराब हो गया है। क्या मैं आपका ले जा सकता हूँ।"

"तुम इसे बेशक ले सकते हो लेकिन तुम्हें इसका उपयोग मेरे लॉन में करना होगा। मैं इसे बाहर ले जाने नहीं देता। मैं इस नियम का कठोरतापूर्वक पालन करता हूँ।" मार्क ट्वेन ने शान्तिपूर्वक कहा।

यद्यपि अनेक लोगों द्वारा इस घटना को मार्क ट्वेन से जोड़ा जाता है, फिर भी कोई निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि यह सचाई है। किन्तु निम्नलिखित प्रसंग आधिकारिक है। इससे पता चलता है कि यह महान लेखक थोड़ा सनकी भी था।

एक बार मार्क ट्वेन "अंकल टॉम का कैबिन" की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती हैरियट बीचर स्टोव से मिलने गया। लौटकर आने पर उसकी पत्नी ने उसका सर्वेक्षण किया। और फिर वह गम्भीर हो गई।

"क्या बात है?" मार्क ट्वेन ने पूछा।

"तुम अपनी पोशाक के मामले में इतने अशिष्ट कैसे हो सकते हो?" उसकी पत्नी ने पूछा।

मार्क ट्वेन ने आइने के सामने खड़ा होकर अपनी वेशभूषा का मुआयना किया, पर उसे समझ में नहीं आया कि उसके पहनावे में क्या दोष है। उसने अपनी पत्नी को कहा कि वह अपनी टिप्पणी को अधिक स्पष्ट करे।

"तुम उस विख्यात महिला से मिलने के लिए बिना नेकटाई पहने कैसे जा सकते हो? उसने तुम्हारे बारे में क्या सोचा होगा?" उसकी पत्नी ने कहा।

मार्क ट्वेन ने कुछ नहीं कहा। पर कुछ पैक करने में व्यस्त हो गया और कोरियर की तलाश करने लगा। उसकी पत्नी को बहुत बाद में पता चला कि वह किस काम में व्यस्त था। उसने अपनी नेकटाई पैक करके श्रीमती स्टोव को इस

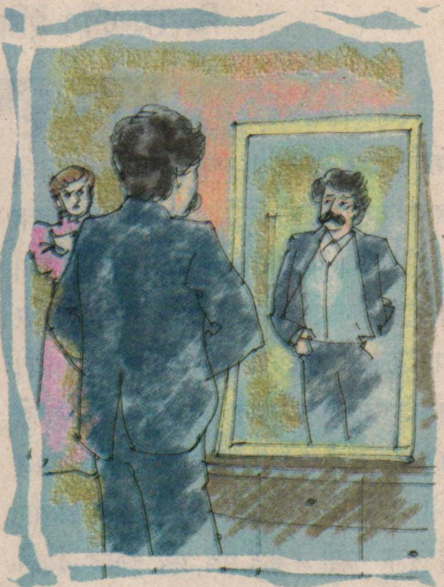

सन्देश के साथ भेज दिया था, "मेरी पत्नी मुझसे नाराज है, क्योंकि मैं बिना नेकटाई पहने आप से मिलने चला आया था। यह रही वह कीमती चीज़। मैं समझता हूँ किं मैं आप के पास करीब आधा घण्टे तक था। इसे आप आधे घण्टे तक देखते रहिये। उसके बाद इसे मुझे लौटा दीजिये, क्योंकि मेरे पास यही एक मात्र टाई है। टाई वाहक को वहाँ प्रतीक्षा करने के लिए हिदायत दे दी गई है। मुझे शिष्ट बनाने में आप के सहयोग के लिए धन्यवाद!"

(एम.डी.)

चन्दामामा इण्डिया प्रश्नोत्तरी-१२ (जनवरी २००८)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर पृष्ठ ४१ दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

मुक्त बृषभराजा!

सैकड़ों साल बीत गये, एक व्यापारिक जहाज माल लेकर स्वदेश लौट रहा था। धीमी-धीमी हवा चल रही थी। वातावरण बड़ा ही प्रशांत था। अकस्मात हजारों छोटी नावों ने जहाज को घेर लिया। कप्तान और अधिकारी चकित रह गये। वे यह जानने की कोशिश में ही थे कि आख़िर हो क्या रहा है, नावों से आदमी त्वरित गति से जहाज में आ पहुँचे और जो-जो उनके हाथ में आया, उन्हें लेकर नावों में कूद पड़े और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गये। व्यापारी बेतहाशा चिल्लाने लगे, ''क्या हुआ, हुआ क्या है।'' उनकी समझ में नहीं आया कि अचानक यह क्या हो गया।

प्राचीन काल में कलिंग राज्य के नाम से प्रसिद्ध वर्तमान उडीसा प्रांत को ब्रिटिश वालों ने १७ वीं शताब्दी में अपना व्यापार केंद्र बनाया। परंतु, तटीय प्रांत के एक राजा को यह बिलकुल पसंद नहीं आया कि पराये उनके राज्य में घुसें और वहाँ की मूल्यवान वस्तुओं तथा निधियों को जबरदस्ती लेकर चले जायें। एक नहीं, दो नहीं, कई बार ब्रिटिश ईस्ट इंडिया के व्यापारिक जहाजों को उस राजा के अनुचर नावों में आकर लूटकर चले गये। उनका यह काम अंग्रेज़ व्यापारियों को बहुत बुरा लगा और उन्हें अपनी असहायता पर क्रोध आने लगा। संपन्न भारत देश के इस भू भाग में वे निष्कंटक व्यापार चला रहे थे और उन्होंने इसे अपना केंद्र बनाया था। लुटेरों का इस प्रकार अकस्मात् आना और लूटकर माल ले जाना उनसे सहा नहीं गया। उन्होंने निर्णय कर लिया कि किसी भी हालत में उस शासक को गिरफ्तार करना होगा, जिसके प्रोत्साहन से यह लूट हो रही है। किन्तु वे जान नहीं पाये कि आख़िर यह शासक है कौन? यह कहाँ रहता है?

समुद्री तट पर तरह-तरह के जंतुओं से भरा एक सुंदर द्वीप था, जो जंगलों से घिरा हुआ था। इसका नाम पारादीप था, जो आकार में छोटा था। कुजांग नामक एक छोटे राज्य की वह राजधानी थी। एक तरफ बंगाल की खाड़ी, और अन्य दिशाओं में महानदी तथा उसकी उपनदी उस राज्य की सरहदें थीं। प्राकृतिक

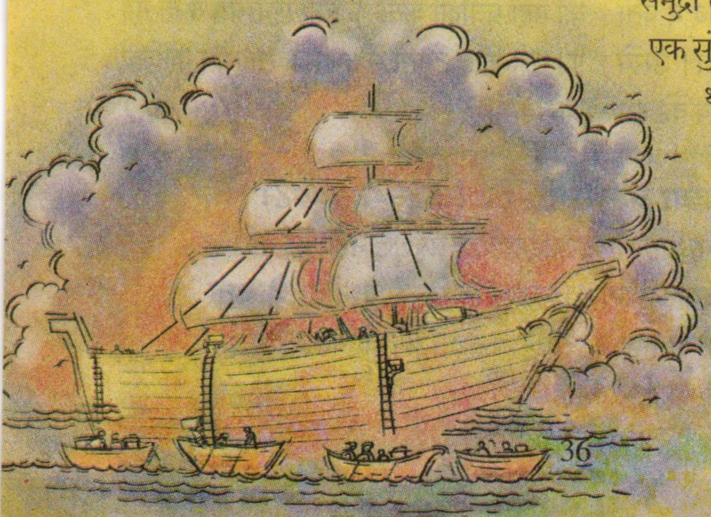

सौंदर्य से भरे इस प्रशांत प्रदेश में चंद्रध्वज राजा का भवन था। वे राजा ही साहसी नाविकों को युद्ध विद्याओं में प्रशिक्षण देते थे। वे साहसी नाविक ही द्वीप के समीप जानेवाले ब्रिटिश व्यापारिक जहाज़ों को लूटते थे।

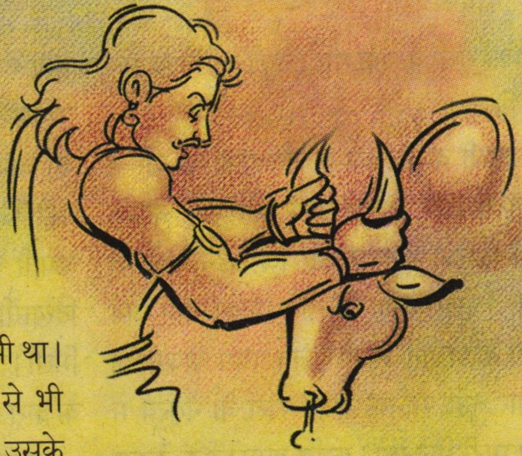

चंद्रध्वज का एक और अजीब नाम भी था। उन्हें षांधाराजा (बृषभराजा) के नाम से भी पुकारते थे। उन्हें जो यह खिताब मिला, उसके विषय में एक घटना का भी जिक्र किया जाता है। कहते हैं कि बहुत पहले कुजांग राजा पवित्र पुरी तीर्थस्थान गये। नगर की गली में जब वे पैदल जा रहे थे, तब उनके रंग बिरंगे पहनावे को देखकर एक सांड उनपर पिल पड़ने तेज़ी से उन्हीं की तरफ़ बढ़ा चला आ रहा था। राजा के इर्द-गिर्द जो भी उनके अनुयायी थे, वे डर के मारे भाग गये। लेकिन राजवंश का एक युवक, राजा को अपना पिता मानते हुए, उस सांड के खड्ग जैसे सींगों को पकड़, उससे भिड़ पड़ा और उसे एक खड्डे में धकेल दिया।

राजा के मेज़बान पुरी के महाराजा अपने भवन के ऊपर से इस सनसनीखेज घटना को देख रहे थे। अद्भुत बल और पराक्रमशाली उस युवक को उन्होंने षांधा (सांड से अधिक बलवान) के खिताब से सत्कार किया। कुजांग राजा की कोई संतान नहीं थी। अपने प्राणों की रक्षा करनेवाले उस साहसी युवक को उन्होंने अपने पुत्र के रूप में स्वीकार किया और उसे अपने सिंहासन का वारिस बनाया। इस युवक से ही बृषभराजाओं के वंश का प्रारंभ हुआ।

बृषभ वंश के ही चंद्रध्वज को कोई हरा नहीं सका, इसीलिए उन्हें, 'जंगली सांड' का खिताब मिला। चंद्रध्वज को ब्रिटिश अधिकारी पकड़ नहीं सके, इसलिए उन्होंने गुप्तचरों को यह जानने का काम सौंपा कि आख़िर यह है कौन और कहाँ रहता है? चंद्रध्वज केवल अद्भुत बलशाली ही नहीं थे, बल्कि अपार आध्यात्मिक चिंतक भी थे, साथ ही ध्यान के प्रति उनकी विशेष रुचि थी। सूर्योदय के पूर्व और सूर्यास्त के बाद जहाँ कहीं भी भले ही वे रहें, ध्यान मग्न हो जाते थे। अरण्य के बीचों बीच वे रहते थे और उनके विश्वासपात्र अनुचरों को ही यह रहस्य मालूम था। एक दिन प्रातःकाल के समय जब वे ध्यानमग्न थे, तब षड्यंत्र रचकर ब्रिटिश सैनिकों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। शत्रुओं को यह कैसे मालूम हुआ कि वे इस प्रदेश में रहते हैं और हर प्रातःकाल वे ध्यानमग्न हो जाते हैं? धन के लोभ

में आकर राजा के एक साथी ने ही यह विश्वास-घात किया।

साहसी व वीर इस कुजांग राजा के बारे में ''ए स्केच आफ हिस्टरी आफ ओडिसा'' नामक ग्रंथ में ब्रिटिश इतिहासकार जि.टाइनबी ने यों लिखा, ''इस परगणे के तीन प्रधान नगर जब ब्रिटिश के अधीन आ गये, तब प्रथम योजना के अनुसार कुछ सैनिक मेजर फोर्स के नेतृत्व में बार्मूल घाटी भेजे गये। कर्नल हारकोर्ड के नेतृत्व में थोड़ी और सेना कुजांग पर आक्रमण करने निकली। इसके पहले ही ब्रिटिश अधिकारियों को इस रहस्य का भी पता चला कि इस प्रांत का राजा, ब्रिटिश सत्ता के ख़िलाफ अपनी रक्षा के लिए और शत्रुओं को चोट पहुँचाने के लिए खुर्दा, कनिक राजाओं से पत्र-व्यवहार कर रहे हैं।''

इतिहासकार आगे कहते हैं, ''कुजांग राजा भाग गया। पर जल्दी ही वह पकड़ा गया और उसे कटक किले में बंद रखा गया। उसके क़िले का ध्वंस कर दिया गया। वहाँ एक तोप दिखायी पड़ी, जिसे कटक भेजा गया। उस पर ईस्ट इंडिया कंपनी की मोहर के पीतल की दो नयी बंदूकें दिखायी पड़ीं। मालूम नहीं कि ये राजा को कैसे मिलीं। जहाज के डूब जाने पर या समुद्री डाकुओं के द्वारा उन्हें ये प्राप्त हुई होंगी।''

राजा महानदी तट पर के ऐतिहासिक नगर कटक के करावती किले में बंदी बनाकर रखे गये। नौ मंजिलों का यह भवन १४ वीं शताब्दी में निर्मित हुआ था। उसका मुखद्वार बहुत ही विशाल था। उसके चारों ओर बीस गजों की खाई थी। 'ईस्ट इंडिया कंपनी ने बहुत हद तक इसे नष्ट कर दिया और इसे अपनी राजधानी बनाया।

क़ैदी चंद्रध्वज राजा को मालूम था कि शत्रुओं से बचकर निकल पाना असाध्य कार्य है, फिर भी वे बिलकुल शांत दिखते थे। उस युवक राजा के उत्साह व मैत्री स्वभाव ने ब्रिटिश अधिकारियों के हृदयों को जीत लिया। वे उनसे बहुत ही प्रभावित हुए। हमारे देश के मल्ल युद्ध तथा अन्य युद्ध कलाएँ भी उन्होंने इन्हीं से सीखीं। क्रमशः वे उन्हें अपना शत्रु नहीं बल्कि मित्र मानने लगे। फिर भी, सदा वे उनपर कड़ी निगरानी रखते थे। यों एक साल गुज़र गया। ब्रिटिश जहाजों पर आक्रमण करने का सिलसिला भी टूट गया।

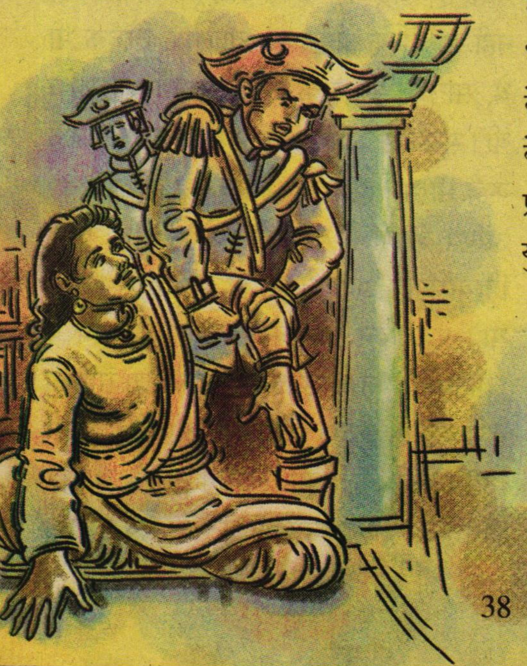

एक दिन शाम को ब्रिटिश अधिकारियों ने एक अद्भुत दृश्य देखा। मोर के आकार की एक बड़ी नाव नदी के तट की ओर आने लगी। रंगों से अलंकृत वह नाव हंस की तरह तैरती हुई निकट आ रही थी। संध्याकाल की कांति में वह अत्यंत मनोहर लगने लगी। ब्रिटिश अधिकारियों को अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। नाव चलानेवाले चौबीस नाविकों के बीच एक आदमी शान से खड़ा था। अधिकारियों ने उससे पूछा, ''क्या यह नाव तुम्हारी है?''

''नहीं। यह सुंदर नाव एक राजवंश की है। दुर्भाग्यवश वह राज परिवार आर्थिक समस्याओं में फंस गया है। इसे बेचने के लिए मेरे सुपुर्द किया गया है'', उस व्यक्ति ने गंभीर स्वर में कहा।

''इसका क्या दाम है?'' अधिकारी ने आतुरता भरे स्वर में पूछा।

उस आदमी के बताये दाम जानकर वे हक्के-बक्के रह गये। उनके आश्चर्य को देखते हुए उस व्यक्ति ने कहा, ''दोस्तो, ऐसी नाव का उपयोग राजा और रानियाँ ही करते हैं। ऐसा व्यक्ति आप में से कोई हो तो उसे दिखाइये। उनके कहे मूल्य पर यह नाव दे दूँगा।''

यह प्रस्ताव अधिकारियों को सही लगा। किन्तु ऐसे व्यक्ति को वे कहाँ से लायें? उन्हें अचानक सूझा कि चंद्रध्वज राजा इसका सही मूल्य आंक सकते हैं। राजा तुरंत वहाँ लाये गये। राजा ने नदी तट से नाव को और नमस्कार करनेवाले व्यक्ति को ग़ौर से देखा। उनके ओठों पर फैली मुस्कान उस व्यक्ति मात्र ने देखी।

राजा उस नाव को देखते रहे, उस व्यक्ति से तरह-तरह के सवाल करते गये और धीरे-धीरे उसके निकट आये। ब्रिटिश अधिकारियों को विश्वास था कि राजा सही मूल्य को निर्धारित करने में सक्षम हैं। तब तक सूर्यास्त हो चुका था। राजा ने उस व्यक्ति से बातें करते हुए, नाव के अंदर प्रवेश किया, मानों वे नाव को ध्यान से देख रहे हों। देखते-देखते चौबीसों नाविक डांडों को हाथों में लेकर नाव तेज़ी से चलाने लगे। नदी के तट पर खड़े अधिकारी जानें कि क्या हो रहा है इतने में नाव दूसरी दिशा में मुड़ी और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गयी।

नाव जो व्यक्ति ले आया था, वह और कोई नहीं, राजा का विश्वासपात्र मंत्री पद्मा जोशी ही था। राजा को छुड़ाने के लिए उसने यह अद्भुत व्यूह रचा और विजयी भी हुआ। ***(ए के डि)***

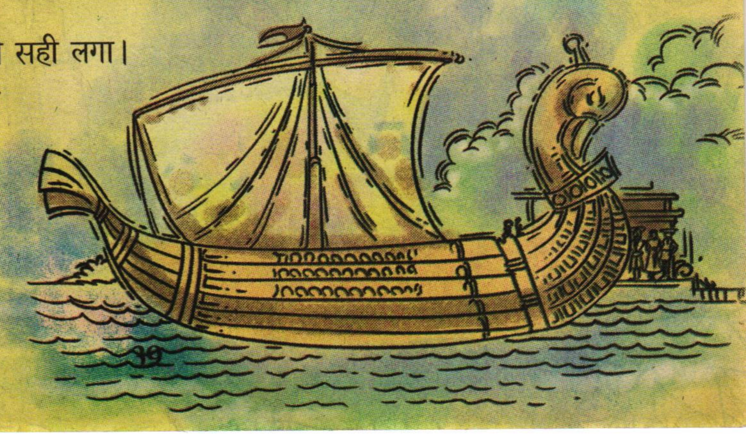

अद्भुत सरसफल

कुछ वर्षों पूर्व, दो वैज्ञानिक केरल में अगस्त्य पहाड़ियों के जंगलों में घूम रहे थे। वे दुर्लभ पौधों के खोज-अभियान पर थे। पास में रहनेवाला, कानी जनजाति का मल्लुन कानी मार्गदर्शन के लिए उनके साथ था। वह इन जंगलों से भली भाँति परिचित था।

मौसम गर्म था, इसलिए वैज्ञानिक जल्दी ही थक गये। परन्तु मल्लुन कानी आराम से चलता रहा। मार्ग में कभी वह झाड़ियों से सरसफल तोड़ने के लिए रुक जाता था। वैज्ञानिक उसकी ऊर्जा पर आश्चर्य करते, 'क्या यह उसकी जीवन शैली के कारण है अथवा उन सरसफलों का कमाल है जो वह कभी-कभी चबाता रहता है?'

उत्सुकता वश वे भी मल्लुन से कुछ सरस फल लेकर चबाने लगे। तुरन्त उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनमें काफी शक्ति आ गई है।

वैज्ञानिक अब काफी उत्तेजित हो गये। उनके मन में तरह-तरह के विचार आने लगे। यदि इस सरसफल को नगर वासियों के लिए उपलब्ध कराया जाये तो कितना अद्भुत होगा? उन्हें कितनी शक्ति मिलेगी यदि इन फलों से दवा बना कर बाजार में बेची जाये? कितने लोगों को लाभ होगा!

वैज्ञानिकों ने सरसफलों के पौधों को दिखाने का मल्लुन कानी से अनुरोध किया। किन्तु मल्लुन ने अनिच्छा प्रकट करते हुए कहा, ''ये पौधे पावन होते हैं और इनके बारे में चर्चा करना मना है, खास कर बाहरी लोगों के सामने। बचपन में हमें बाप-दादों ने यही सिखाया था।'' उसने कहा

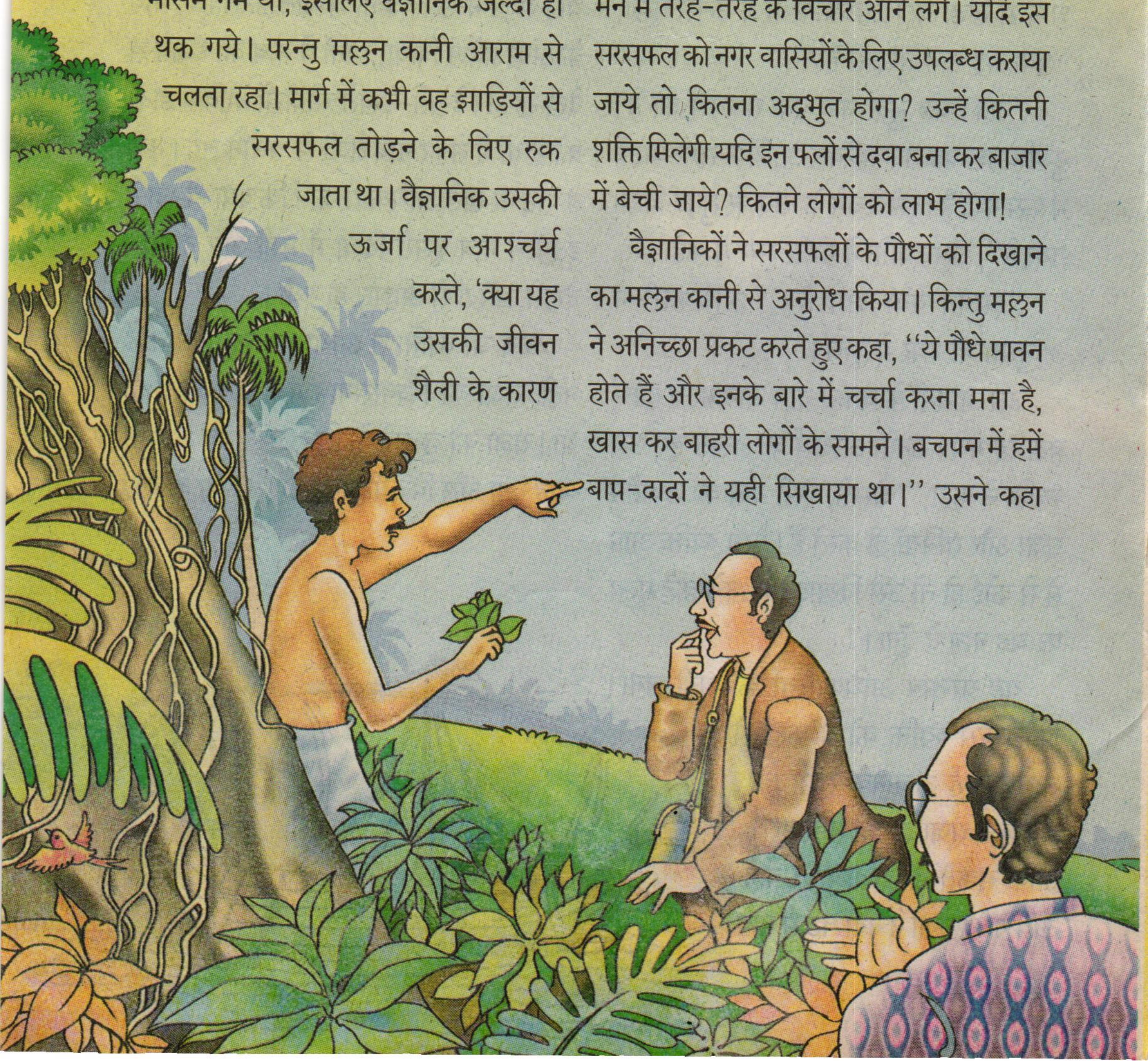

चन्दामामा इण्डिया प्रश्नोत्तरी-१२ (जनवरी २००८) उत्तर :
१) १९२८, २) जयसिंह द्वितीय (जयपुर के), ३) चौदह, ४) बादामी, ५) सातवाँ, ६) किला राय पिथौरा, ७) उत्तरप्रदेश।

कि गाँव के बड़े बुजुर्गों से पूछना पड़ेगा और केवल वे ही इसके बारे में निर्णय दे सकते हैं। फिर वह वैज्ञानिकों को गाँव के बुजुर्गों के पास ले गया।

समुदाय के सभी सदस्यों की एक बैठक बुलाई गई। उसमें इस समस्या पर विचार-विमर्श किया गया। कुछ बड़े बूढ़ों का मानना था कि यदि पौधे का नाम इन्हें बता दिया गया तो उन पर दुर्भाग्य टूट पड़ेगा। वैज्ञानिकों ने उन्हें यह विश्वास दिलाने की पूरी कोशिश की कि जानकारी देने से उनके समुदाय पर कोई आपत्ति नहीं आयेगी।

वैज्ञानिकों ने उनसे कहा कि उस पौधे में यदि औषधीय तत्व पाये गये और यदि उससे दवा बनाने की सम्भावना पाई गई तो इससे समुदाय को आर्थिक लाभ मिलेगा।

बहुत लम्बे विचार-विमर्श के बाद गाँव के बड़े-बूढ़ों ने वैज्ञानिकों को पौधे का नाम और प्राप्ति-स्थान बता देने का फैसला किया। उन्होंने मल्लुन कानी को यह काम सौंपा। फिर एक बार वैज्ञानिक मल्लुन कानी के साथ जंगल की ओर चल पड़े। वहाँ एक छोटी झाड़ी को दिखाते हुए मल्लुन ने कहा, यही है सरसफल का पौधा जिसे हमलोग *आरोग्यप्पाचा* कहते हैं।

वैज्ञानिकों ने उस पौधे के कुछ नमूने लिये और अपनी संस्था की प्रयोगशाला में उसके रासायनिक तत्वों का अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि उस पौधे में कुछ ऐसे रसायन हैं जो थकावट को दूर करने में मदद करते हैं। पौधे की पहचान की गई और उसका वैज्ञानिक नाम 'ट्रिकोपस ज़िलैनिकल ट्रावनकोरिकस' पाया गया। जाँच-पड़ताल से पता चला कि यह पौधा-विशेष केरल के उसी क्षेत्र में तथा तमिलनाडु के कुछ भागों में ही पाया जाता है, विश्व भर में अन्यत्र कहीं नहीं।

बहुत वर्षों के प्रचुर शोध के पश्चात इस पौधे से एक दवा बनाई गई। वैज्ञानिकों का सपना साकार हुआ। व्यापारिक दृष्टिकोण से दवा का उत्पादन किया गया और थकावट दूर करने के लिए इसका उपयोग किया जाने लगा।

लेकिन आप लोगों को सन्देह हो रहा होगा कि कानी जनजातियों के साथ क्या हुआ और उन्हें दिये गये वचन का पालन हुआ या नहीं।

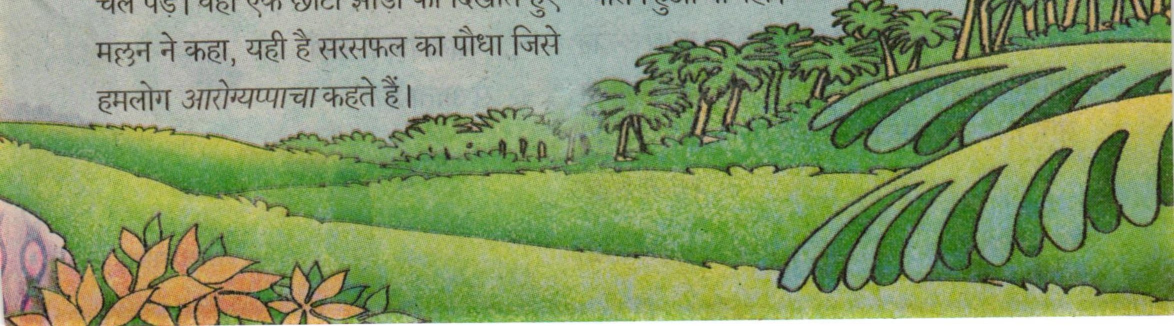

घबराने की बात नहीं है! वैज्ञानिकों ने अपना वचन अवश्य निभाया।

दवा का उत्पादन केवल उस समुदाय की अनुमति से किया गया। दवा के विक्रय से प्राप्त आय का एक भाग उन्हें भी दिया गया। कानियों ने स्वयं अपने कल्याण के हित तथा अपने ज्ञान को प्रलेखित करने के लिए एक ट्रस्ट का निर्माण किया।

संयोगवश, जंगल के उस भाग का प्रबन्ध, जहाँ वह पौधा पाया जाता है, वन विभाग करता है। उनके नियमानुसार व्यापारिक लाभ के लिए जनजाति के लोग सरसफल को नहीं तोड़ सकते।

अब कानियों को इसकी अनुमति के लिए वन अधिकारियों से अनुरोध करना पड़ा। आरम्भ में वे अनुमति देना नहीं चाहते थे, क्योंकि बड़े पैमाने पर फलों को तोड़ने से जंगल नष्ट हो सकता है। पर, अन्त में उन्हें जंगल में उस फल के उत्पादन की स्वीकृति दे दी गई।

अन्य जन-जाति के समुदायों के समान कानियों के पास भी एक विशाल ज्ञान भण्डार है। आरोग्यप्पाचा के अनुभव से उन्होंने सीखा कि उनका पारम्परिक ज्ञान कितना मूल्यवान है और इसका सदुपयोग करने पर कितना लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

इससे उन्हें यह शिक्षा मिली कि अपने ज्ञान को सुरक्षित रखना तथा अपने लाभ के हित इसके प्रयोग को सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है। इससे उन्होंने यह भी सीखा कि बाहरी लोग उनसे कोई अनुचित लाभ न उठायें, इससे कैसे बचें।

- सीमा भट्ट

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी

इस महीने प्रश्नोत्तरी हस्तकलाओं पर केन्द्रित है

१. ''पश्मीना'' का यह नाम कैसे पड़ा?

२. उत्तरप्रदेश में कौन-सा शहर पीतल के बर्तनों के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध है?

३. भारत में हस्तनिर्मित सर्वश्रेष्ठ कालीनें कहाँ बनायी जाती हैं?

४. पंच धातु प्रतिमा में किन पाँच धातुओं का प्रयोग किया जाता है?

५. ''मोगा रेशम' कहाँ से आता है?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-२

Co-sponsored by
Infosys® FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

इस महीने की प्रश्नोत्तरी का विषय है हिन्दू पुराणों के विशिष्ट व्यक्तित्व। संकेतों से सही उत्तर की पहचान करने में मदद मिलेगी।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु. ५० की राशि मिलेगी।*

जो तुम्हें करना चाहिये: १. एक कागज पर उत्तरों को स्पष्ट अक्षरों में लिख लो; २. अपना नाम, उम्र तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर लिखो: **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-२;** ४. डाक से भेज दो, जो हमें ३१ मार्च के पहले मिल जाये। उत्तर मई २००८ के अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

१. भगवान विष्णु के निवास वैकुण्ठ के दो द्वारपाल कौन थे? उन्हें भगवान के तीन अवतारों की अवधि में पुनर्जन्म लेने का शाप दिया गया था।

२. ऋषि बनने से पूर्व वे एक डाकू थे। कौन थे वे?

३. धर्मपरायण राजा अम्बरीष को एक मुनि ने शाप दिया कि वह कृष्ण के सुदर्शन चक्र द्वारा पीड़ित किया जायेगा। मुनि कौन था?

४. देवताओं की माता किसे माना जाता है?

५. देवों और असुरों के गुरु कौन थे?

५. सप्तर्षि कौन थे?

६. भगवान श्रीनिवास को पद्मावती के साथ विवाह करने के लिए किसने ऋण दिया?

८. चित्रगुप्त कौन थे?

९. महिषासुर, नरकासुर तथा ताड़का को वध करनेवाले कौन थे?

१०. एकदन्त किन्हें कहा जाता है?

बिहार की एक लोक कथा

फाँसी का फन्दा किसके लिए

एक जंगल में एक ऋषि का एक प्रसिद्ध गुरुकुल था जिसमें देश के कोने-कोने से विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते थे। विद्यार्थियों में अनेक राज्यों के राजकुमार भी होते थे जो बिना किसी विशेष सुविधा के सामान्य छात्रों के समान ही रहते थे। गुरु सब के साथ एक समान व्यवहार करते थे। सामान्य रूप से छात्र पाँच वर्षों तक वहाँ विद्या अध्ययन करते और उसके बाद अपने घर या राज्य में वापस चले जाते। उसी समय गुरु अपने शिष्यों में से चुने हुए एक शिष्य को अपने साथ लम्बी तीर्थ यात्रा पर ले जाते। तीर्थयात्रा से लौटने के बाद नये छात्रों के साथ नये सत्र का आरम्भ करते।

एक साल गुरु सत्यानन्द ने प्रताप नामक अपने एक शिष्य को अपने साथ यात्रा पर ले जाने का निश्चय किया। उन्होंने उससे पूछा, "प्रताप, मैं तीर्थयात्रा पर जा रहा हूँ, जहाँ मन्दिरों के दर्शन के साथ भिन्न-भिन्न राज्यों के राजाओं से भी मिलकर उन्हें शासन सम्बन्धी सलाह दूँगा। क्या तुम मेरे साथ चलना पसन्द करोगे?"

प्रताप अभी पन्द्रह वर्ष का ही था। उसने सोचा कि गुरु के साथ कुछ दिन और रहने का सौभाग्य मिल रहा है, इसलिए इसका लाभ उठाना चाहिये। वह प्रसन्नतापूर्वक तैयार हो गया।

एक दिन प्रातःकाल गुरु और शिष्य यात्रा के लिए निकल पड़े। प्रचलित प्रथा के अनुसार यात्रा के दौरान चलते समय बातचीत करना मना था। लेकिन मार्ग में कोई दर्शनीय या विचारणीय वस्तु या दृश्य मिलने पर उसका निरीक्षण करना शिष्य के लिए अपेक्षणीय था। गुरु से इसका स्पष्टीकरण शिष्य तभी करता था जब कहीं वे रुककर विश्राम करते थे। विश्राम के समय गुरु या तो शिष्य से प्रश्न करता था या शिष्य के प्रश्नों का उत्तर देता था। इस प्रकार विश्राम का समय दोनों आनन्द के साथ काट लेते।

जब वे किसी मन्दिर के दर्शन करते तो उस गाँव के लोगों का आतिथ्य स्वीकार कर उनके पास एक-दो दिन ठहर जाते। और जब वे किसी राजधानी से होकर गुजरते तो वहाँ के राजा से मिलकर शासन सम्बन्धी समस्याओं पर विचार-विमर्श करते। पर उनका आतिथ्य स्वीकार न कर पुनः यात्रा पर चल पड़ते।

एक बार ये दोनों गुरु-शिष्य-ऋषि सत्यानन्द और प्रताप, बोधपुरी राज्य की राजधानी में पहुँचे। जब वे महल में राजा से मिलने जा रहे थे, तब लोगों से उन्हें मालूम हुआ कि वहाँ का राजा महामूर्ख है। उसकी हर हरकत मूर्खतापूर्ण होती है। वह मूर्खों को अपना मंत्री बनाता है और उन्हें ऊँचे वेतन देता है। उसके दरबार के बुद्धिमान लोगों को इतना कम वेतन दिया जाता है कि उनके परिवार को भर पेट भोजन नहीं मिलता। इसलिए वे भ्रष्टाचार से धन कमाते हैं जो राजा को मालूम नहीं होता। राजा का हुक्म है कि हर चीज-चाहे वह सब्जी, कपड़ा, जूता हो या टेबुल-कुर्सी-एक दाम पर बेचो। उसने गरीबों पर यह कह कर जुर्माना कर दिया कि तुम मूर्ख हो और बीमार पड़नेवाले लोगों को अर्थदण्ड की सजा इसलिए दी कि तुम काम पर क्यों नहीं जाते।

राजा के बारे में यह सब सुनकर, प्रताप ने, जो राज परिवार का था, गुरु से कहा, ''गुरु जी, हमलोगों को इस राजा से नहीं मिलना चाहिये और महल की ओर भी नहीं जाना चाहिये। इस मूर्ख राजा से बात करने पर हो सकता है कि हम परेशानी में पड़

जायें। हमलोग लौटकर मार्ग बदल दें तो अच्छा रहेगा।''

परन्तु गुरु के विचार कुछ और थे। उसने कहा, ''यह कैसे कह सकते हैं कि जो कुछ हमने सुना है, वह सच है? हमें स्वयं इसकी सचाई का पता लगाना चाहिये।''

जब वे महल के मुख्य द्वार पर पहुँचे तब उन्हें द्वारपालों ने कहा कि राजा दरबार कर रहे हैं और आप चाहें तो दरबार में जाकर राजा से आज्ञा ले सकते हैं। गुरु ने जब कहा कि वे गुरुकुल के ऋषि हैं और साथ में उनका शिष्य है तब द्वारपालों ने उन्हें दरबार में जाने की अनुमति दे दी।

अन्दर दो औरतें राजा से अनुरोध कर रही थीं। एक औरत ने कहा, ''महाराज, हमारे पति चोर हैं। वे एक व्यापारी के घर में, उसकी अनुपस्थिति में, सेन्ध लगा रहे थे। दीवार में सेन्ध लगाते समय

दीवार ढह गई और... ।'' औरत यह कहते-कहते भावुक हो उठी और रो पड़ी। दूसरी औरत ने वाक्य पूरा किया, ''...और हम दोनों के पति दीवार के ढहने से उसके नीचे दबकर मर गये। यदि दीवार मजबूत होती तो हमारे पति नहीं मरते। व्यापारी को, इसके लिए सजा मिलनी चाहिये और हमलोगों को उसे भारी मुआवजा देनी चाहिये।''

राजा ने आज्ञा दी, ''व्यापारी को उपस्थित करो।'' यह सुनकर दोनों औरतों ने एक दूसरे को सान्त्वना दी।

शीघ्र ही व्यापारी को दरबार में पेश किया गया। ''महाराज, मेरी गलती से दीवार नहीं गिरी। पिछले वर्ष मैंने राजमिस्त्री को घर की मरम्मत के लिए बुलाया था। लेकिन लगता है कि उसने ठीक से घर की मरम्मत नहीं की। इसलिए यह राजमिस्त्री की गलती है।'' व्यापारी ने अपनी सफाई में कहा।

''राजमिस्त्री को पेश करो।'' राजा ने आज्ञा दी। राजमिस्त्री आते ही राजा के पैरों पर गिरकर बोला, ''महाराज, इसमें हमारी क्या गलती है? मशकवाले ने गारे में ज़्यादा पानी डाल दिया, इसीलिए दीवार कमजोर हो गई। अतः यह गलती मशकवाले की है।''

राजा क्रोध में कड़क कर बोला, ''दुष्ट मशकवाले को पकड़ कर लाओ।''

मशकवाला राजा के सामने खड़ा होकर कुछ कहनेवाला था, परन्तु राजा धीरज खो चुका था। उसने कहा, ''इसे ले जाकर फाँसी पर चढ़ा दो।''

यह सुनकर दरबार का हर आदमी हक्का-बक्का रह गया। ''यह कैसी बेइन्साफी है!'' सब बड़-बड़ाने लगे, लेकिन राजा को सुनाई नहीं पड़ा।

शिष्य दरबार की इन हरकतों को देख कर भौचक्का रह गया। उसने गुरु के कानों में धीमे से कहा, ''गुरु जी, हमलोगों को जल्दी यहाँ से खिसक जाना चाहिये। भगवान ही जानता है कि आगे वह क्या नहीं कर बैठे!''

''नहीं प्रताप'', गुरु ने कहा, ''यदि मैं राजा के मन में कुछ ज्ञान की बातें न डाल सका तो मैं अपने कर्त्तव्य से चूक जाऊँगा।''

ऋषि ने दूसरे क्षण राजा की ओर मुड़कर उसे सम्बोधित करते हुए कहा, ''महाराज, जरा क्षण भर के लिए विचार कीजिये। क्या आप मशकवाले के साथ अन्याय नहीं कर रहे हैं?''

राजा चकित होकर बोला, ''तुम यह कहनेवाले कौन हो कि मैं न्याय कर रहा हूँ अथवा अन्याय।

मैं तुम्हारी यह धृष्टता बर्दाश्त नहीं कर सकता।''

फिर क्रोध में चिल्लाकर सिपाहियों से कहा, ''इसे ले जाओ और मशकवाले के बदले फाँसी पर चढ़ा दो।''

दो सैनिक ऋषि को पकड़कर ले जाने लगे। शिष्य भी उसके साथ साथ जाने लगा। वह गुरु के कानों में कुछ फुसफुसाया। अचानक राजा की ओर मुड़ कर ऋषि बोला, ''कृपया फाँसी से पहले हमारी आखिरी इच्छा पूरी कर लेने दीजिये।''

''तुम्हारी आखिरी इच्छा क्या है? मैं उसे अवश्य पूरी करूँगा।'' राजा ने कहा।

''महाराज, क्या मैं अपने शिष्य से बात कर सकता हूँ।'' ऋषि ने अपनी अन्तिम इच्छा बताई। राजा ने संकेत से उसे अपने शिष्य से मिलने की स्वीकृति दे दी।

शिष्य से बात करने के बाद ऋषि ने राजा से कहा, ''महाराज, मेरे शिष्य ने अपनी अन्तर्दृष्टि से देखा कि स्वर्ग के अधीश्वर अपने रथ में सवार नीचे धरती पर उतर रहे हैं। उन्होंने मेरे शिष्य से कहा, 'तुम्हारा गुरु निर्दोष है। इसलिए मैं उसे स्वर्ग ले जाने के लिए स्वयं आया हूँ।' महाराज, यदि आप मुझे फाँसी पर लटका दें तो मैं प्रसन्नता के साथ स्वर्ग चला जाऊँगा।''

राजा इस पर क्रोधित हो उठा। उसने कहा, ''वैकुण्ठाधीश तुम्हारे लिए क्यों आयेंगे, मेरे लिए क्यों नहीं? मैं एक राजा हूँ और तुम केवल एक ऋषि हो। इसलिए तुम्हारे स्थान पर मैं फांसी पर लटकूँगा और वैकुण्ठ जाऊँगा।'' इतना कहकर वह फाँसी के तख्ते पर आ गया जहाँ जल्लाद फाँसी का फन्दा तैयार कर रहा था।

किन्तु जल्लाद मूर्ख राजा से कहीं अधिक बुद्धिमान था। काँपते हुए हाथों के साथ वह बोला, ''महाराज, आप के सिर के लिए फाँसी का फन्दा बहुत छोटा है।'' राजा निराश होकर अपने सिंहासन पर चला गया।

ऋषि शिष्य से बोला, ''प्रताप, राजा को सुधारने की कोशिश करना व्यर्थ है। इस संसार में कुछ जन्मजात मूर्ख होते हैं, कुछ परिस्थितियों के कारण मूर्ख हो जाते हैं, कुछ अन्य लोग धूर्त व्यक्तियों के द्वारा मूर्ख बनाये जाते हैं। चलो, देखते हैं कि दुनिया में क्या कम से कम कुछ बुद्धिमान लोग भी रहते हैं?''

कहानी का शेषांश आप की कल्पना पर छोड़ दिया जाता है।

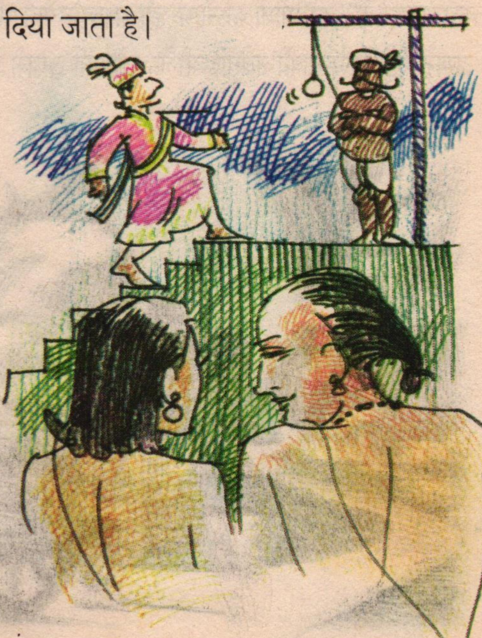

भगवान को मौक़ा

लक्खीपुर का रतन अपने ही बाग में उपजायी तरकारियों को बोरों में भरकर उन्हें बेचने के लिए शहर की हाट में ले जा रहा था। जब वह एक मोड़ पर गाड़ी घुमा रहा था तब गाड़ी का एक पहिया एक तरफ़ झुक गया। ''हे भगवान, मुझे बचाना'' कहता हुआ वह गाड़ी से उतरा और निराश होकर पहिये की ओर देखने लगा। वह हताश होकर सिर पर हाथ रखे बैठ गया। हर भगवान का नाम ले-लेकर वह प्रार्थना करने लगा। किन्तु न ही कोई भगवान आया, न ही किसी ने उसकी सहायता की।

आख़िर एक दृढ़ निश्चय लेकर वह उठ खड़ा हो गया और झुके पहिया को ऊपर उठाने की कोशिश करने लगा। गाड़ी का पहिया जब आसानी से सही जगह पर आ गया तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह कैसे संभव हो पाया। उसने पीछे मुड़कर देखा तो देखा कि एक बलवान आदमी उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर पहिये को उठा रहा है और इसीलिए यह संभव हो पाया। उसने उस बलशाली को प्रणाम किया और कहा, ''भगवान ने जो मदद नहीं पहुँचायी, वह तुमने समय पर आकर पहुँचायी। शुक्रिया।''

''भगवान से बचाने के लिए प्रार्थना करते रहोगे और हाथ पर हाथ धरे बैठोगे तो भगवान भी क्या कर सकते हैं? कोशिश करने पर ही भगवान को भी मदद पहुँचाने का मौक़ा मिलता है'', कहता हुआ उसने पेड़ से सटायी लकडियों के गट्ठे को अपने सिर पर रख लिया और चलता मना।

- आंजनेय शर्मा

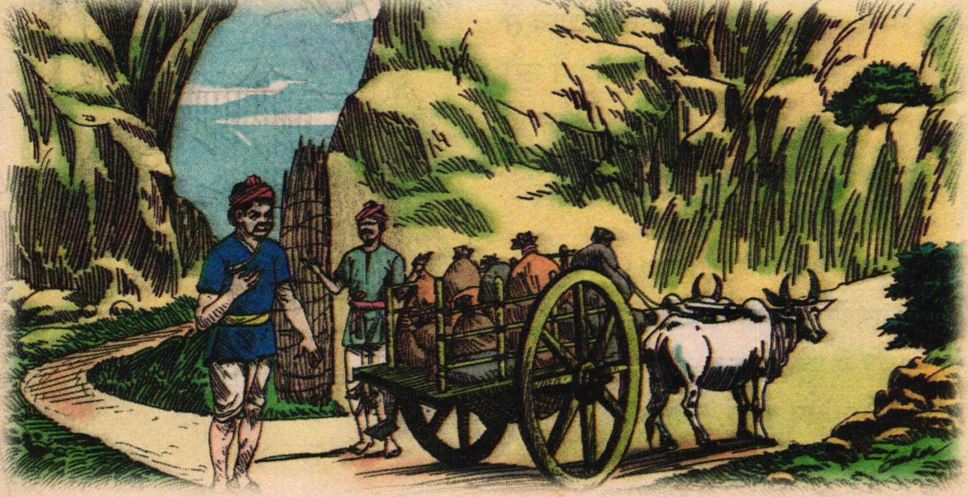

उलटे, मुँह के बल गिरा

अकबर के दरबार के कुछ कर्मचारी बीरबल से जलते थे। सबको मालूम था कि बीरबल बहुत ही अक़्लमंद है। अकबर जब भी कठिन समस्याओं का सामना करते थे तब वही उनके परिष्कार का सरल मार्ग सुझाता था। बादशाह के प्रीति-पात्र होने से उसे मूल्यवान भेंटें दी जाती थीं।

यह सब देखते हुए कई दरबारी ईर्ष्या से जल उठते थे। एक दिन वे सब एक जगह पर इकट्ठे हो गये और आपस में चर्चा करने लगे कि बीरबल को कैसे नीचा दिखायें। इस विषय को लेकर कुछ दरबारियों ने उपाय सुझाये। अंत में दाऊद नामक एक बड़े अधिकारी ने कहा कि इसके लिए उसके पास एक बहुत अच्छा उपाय है। बाकी दरबारियों ने इस उपाय के बारे में पूछा। दाऊद ने उनसे कहा कि बादशाह के मन में उसके विरुद्ध संदेह उत्पन्न करना चाहिये।

एक ने पूछा, ''क्या बादशाह तुम्हारी बातों का विश्वास करेंगे?''

''विश्वास अवश्य करेंगे। देखते जाइये।'' दाऊद ने विश्वास भरे स्वर में कहा।

दरबारी बहुत ही खुश हो उठे। वे उससे कहने लगे, ''अक़्लमंदी में तुम बीरबल से कुछ कम नहीं हो। इस योजना को कार्यान्वित कर सकोगे तो बादशाह मान जायेंगे कि तुम बीरबल से अधिक अक़्लमंद हो। हम तुम्हारी इज़्ज़त करेंगे और तुम बादशाह के प्रीतिपात्र अवश्य बनोगे।'' उस दरबारी की बातों का सबने समर्थन किया।

दाऊद ने कुछ सोचकर कहा, ''तब तुम लोगों को एक काम करना होगा।''

कर्मचारियों ने उत्साह-भरे स्वर में पूछा, ''वह क्या है?'' ''कल तुम लोग हमेशा की तरह दरबार में आओ और अपने-अपने आसनों पर आसीन हो जाना। बादशाह जब आयेंगे तब देखेंगे कि मैं

अपनी जगह पर नहीं हूँ। तब वे मेरे बारे में तुम लोगों से पूछेंगे। तब उनसे कहो, 'दाऊद ने एक अनुचित अपराध देखा, जिसे देखकर उसका मन घायल हो गया। इसी वजह से देरी से आने की उसने अनुमति माँगी।' इसके बाद मैं दरबार में आऊँगा और उस घोर अपराध के बारे में विशद रूप से बताऊँगा। फिर देखते जाना बीरबल पर क्या बीतता है।'' दाऊद ने कहा।

सबने ''हाँ, हाँ'' कहते हुए सिर हिलाया। वे देर तक बातें करते रहे, फिर अपने-अपने घर चले गये।

दूसरे दिन बीरबल सहित सभी दरबारी और कर्मचारी दरबार में उपस्थित हुए। केवल दाऊद नहीं आया।

बादशाह के आते ही सबके सब उठकर खड़े हो गये। बादशाह मुस्कुराते हुए सिंहासन पर आसीन हुए। दो युवतियाँ सिंहासन के दोनों ओर खड़े होकर चंवर डुलाने लगीं।

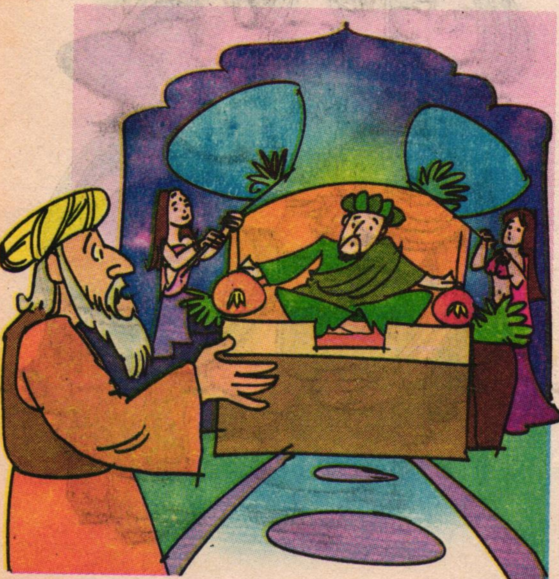

बादशाह ने पूरे दरबार पर सरसरी नज़र डाली। दरबार में बैठा अधेड़ उम्र का एक दरबारी उठकर खड़ा हो गया। बादशाह ने उससे पूछा, ''क्या तुम्हें कुछ कहना है?''

दरबारी ने झुककर सलाम करते हुए कहा, ''दाऊदजी ने कहला भेजा है कि उनके आने में देरी होगी।''

''इसकी वजह?'' अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए बादशाह ने पूछा।

''उन्होंने कोई घोर अपराध होते हुए देखा। बादशाह के दरबार के एक प्रमुख व्यक्ति ने यह अपराध किया। उन्होंने खुद यह देखा और वे निश्चेष्ट रह गये। उस स्थिति से बाहर आकर दरबार में देरी से आने की अनुमति माँगी है उन्होंने प्रभु।'' उस दरबारी ने कहा।

जैसे ही बादशाह ने सुना कि दरबार के एक प्रमुख व्यक्ति ने घोर अपराध किया, वे अशांत हो उठे। दरबार में चुप्पी छा गयी। थोड़ी ही देर बाद दाऊद के आने की आहट सुनायी पड़ी। बादशाह ने उसे ग़ौर से देखा। दाऊद ने सलाम किया।

''मैंने सुना कि तुमने कोई घोर अपराध होते हुए देखा,'' बादशाह ने पूछा।

''हाँ, शाहंशाह'', दाऊद ने कहा।

''यह भी सुना कि दरबार के किसी प्रमुख व्यक्ति ने ही यह घोर अपराध किया। क्या यह सच है?'' बादशाह ने पूछा।

''हाँ, प्रभु, मैं वह देखकर स्तंभित रह गया'', दाऊद ने क़हा।

''बोलो, वह अपराधी कौन है?'' बादशाह ने क्रोध भरे स्वर में सिंहासन पर से उठते हुए पूछा।

''शाहंशाह, उस घटना को भुलाना ही अच्छा होगा। अपने सहकर्मचारी के बारे में बुरा कहा नहीं जा रहा है।'' दाऊद ने दुःख का नाटक करते हुए कहा।

''कोई भी कानून के परे नहीं है। बोलो, वह अपराधी कौन है?'' बादशाह ने पूछा।

''कोई और नहीं शाहंशाह। स्वयं बीरबल हैं'', दाऊद ने कहा। दरबार में उपस्थित सबकी आँखें बीरबल की ओर मुड़ीं।

सब यह जानने के लिए आतुर थे कि इस आरोप को दाऊद कैसे साबित करेंगे।

''बीरबल!'' बादशाह ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा। उस स्वर से स्पष्ट लग रहा था कि बादशाह को इसप्रर विश्वास नहीं हो रहा है।

''हाँ, शाहंशाह, मैं कल शाम को घर लौट रहा था तब मैंने अपनी आँखों से देखा कि सड़क के किनारे पड़े सोने के एक हार को बीरबल ने उठाया। उन्होंने उसे अपने कपड़ों में छिपा लिया और तेज़ी से वहाँ से चले गये। थोड़ी देर बाद एक युवक वहाँ आया और पूछने लगा, 'क्या किसी ने मेरा हार देखा? वह सोने का हार है। रास्ते में यहीं कहीं गिर गया।' मैं उस युवक के बारे में और विवरण पूछने ही वाला था, पर वह वहाँ से चला गया।'' दाऊद बोला।

''बीरबल'', बादशाह ने कठोर स्वर में बुलाया।

''हाँ, प्रभु'', बीरबल खड़ा हो गया।

''क्या यह सच है?'' बादशाह ने पूछा।

''नहीं प्रभु'', बीरबल ने कहा।

''शाहंशाह, शायद उस आदमी को पहचानने में मुझी से ग़लती हुई होगी'', दाऊद ने दया का अभिनय करते हुए कहा।

''तो यह कैसे साबित कर सकते हो कि बीरबल निरपराधी है।'' बादशाह ने सफ़ाई माँगी।

''शाहंशाह, आप माफ़ करेंगे तो यह साबित करने के लिए कि बीरबल निरपराधी है या नहीं, एक परीक्षा है।''

''वह परीक्षा क्या है?'', बादशाह ने पूछा।

''मैं जलती हुई एक लाल सलाख लेकर

आऊँगा। बीरबल उसे अपने हाथों में ले लें। अगर उनके हाथ नहीं जलें तो यह साबित हो जायेगा कि वे निरपराधी हैं।'' दाऊद ने कहा।

''हाँ, तुमने सच कहा,'' फिर बीरबल की ओर मुड़ते हुए बादशाह ने कहा, ''तुमपर यह आरोप है। तुम्हें साबित करना होगा कि यह आरोप झूठा है। कानून के सामने सब समान हैं न?''

''हाँ, प्रभु''। बीरबल को लगा कि वह बहुत बड़ी आफ़त में फंस गया। फिर भी, उसने फ़ौरन कहा, ''मेरे आदरणीय सहकर्मचारी जो भी परीक्षा लेंगे, उसके लिए मैं सन्नद्ध हूँ। किन्तु...'' बीरबल कहता हुआ रुक गया।

''कहो, क्या कहना है?'' अकबर ने पूछा।

''दाऊद का कहना है कि वे सच कह रहे हैं। मैं उनका विश्वास करता हूँ। पर मैं समझता हूँ कि, वे अपनी सच्चाई का सबूत दें तो बेहतर होगा। उन्हें सिर्फ इतना ही करना होगा। वे जलती हुई सलाख को अपने खाली हाथों में लें और मेरे हाथों में रख दें।'' इतना कहकर बीरबल रुक गया।

दाऊद घायल कुत्ते की तरह चिल्ला पड़ा, ''यह मुमकिन नहीं, मुमकिन नहीं।'' वह ताड़ गया कि उसने बीरबल पर जो प्रहार किया, वह उलटे उसी पर प्रयोग कर रहा है।

डर के मारे दाऊद कांपने लगा और कहने लगा, ''शाहंशाह, मुझे माफ़ कर दीजिये। मैंने जिस आदमी को देखा, वह बीरबल नहीं था। वह आदमी इनसे थोड़े ऊँचे क़द का था। पहचानने में मुझसे भूल हो गयी। बीरबल भला ऐसे ओछे काम करने पर कैसे तुल जायेंगे।'' कहते हुए उसने बादशाह के सामने घुटने टेके।

''इस अधम और झूठे आदमी को ले जाकर जेल में बंद कर दो। मैं फिर सोचूँगा कि इसे कैसी सज़ा देनी है'', अकबर ने हुक्म दिया और बीरबल की ओर मुड़कर कहा, ''क्षण भर के लिए उसकी बातों में आकर मेरी मति भ्रष्ट हो गयी, मुझे माफ़ कर दो बीरबल।''

''प्रभु, मैं सदा आपका ईमानदार और विश्वास-पात्र हूँ और यह मेरा सौभाग्य है।'' बीरबल ने झुककर सलाम करते हुए कहा।

ओलम्पिक समय के गलियारे से

ओलम्पिक मोटो

लैटिन के तीन शब्द, जिनके अर्थ हैं- द्रुततर, उच्चतर, प्रबलतर और जो आधुनिक ओलम्पिक्स के मोटो निर्धारित करते हैं, आधुनिक खेलों के संस्थापक बैरन पियरे डि कुबरटिन के एक मित्र हेनरी डायडन द्वारा चुने गये थे।

ओलम्पिक का प्रतीक

व्यापक रूप से लोकप्रिय पाँच अन्तर्गूथित वलयों को ओलम्पिक प्रतीक के रूप में सन् १९१३ में मान्यता दी गई थी। यह ओलम्पिक ध्वज के लिए श्वेत पृष्ठभूमि पर प्रदर्शित किया गया। पाँच वलय पाँच महादेशों– अफ्रीका, अमरीका, एशिया, आस्ट्रेलिया तथा यूरोप – का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रथम और अन्तिम

उद्घाटन समारोह में, भाग लेनेवाले देशों की टीमें मार्च पास्ट में वर्णक्रम से शामिल होती हैं- पर दो अपवादों के साथ। यूनान, जहाँ प्राचीन ओलम्पिक खेल होते थे, मार्च पास्ट का नेतृत्व करके प्रथम स्थान का गौरव ग्रहण करता है, और मेजबान देश की टीम सबसे अन्त में स्टेडियम में प्रवेश करती है।

पहला चैम्पियन

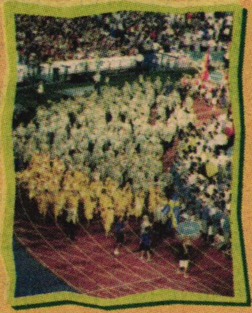

कोरोबस पहला ओलम्पिक चैम्पियन (प्राचीन ओलम्पिक्स) था, जो सिर्फ एक प्रतियोगिता में विजयी हुआ था, १९२ मी. की दौड़ में। इसे स्टेड कहा जाता था। कोरोबस बावर्ची का काम करता था। खेलों के दरम्यान यूनान में राज्यों के बीच लड़ाई नहीं रहती थी, इसलिए युद्ध नहीं होते थे। किसी को साथ में आयुध रखने की अनुमति नहीं थी।

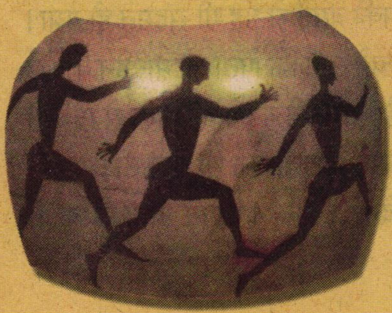

केवल पुरुष

यूनान के प्राचीन खेलों में पुरुष प्रतियोगियों को सभी खेलों की प्रतियोगिताओं में निर्वस्त्र होकर शामिल होना पड़ता था। इसलिए कोई महिला प्रतियोगी नहीं होती थी। महिलाओं को पहली बार सन् १९०० (पेरिस) में खेलों में भाग लेने की स्वीकृति दी गई, और वह भी केवल सीमित मदों में।

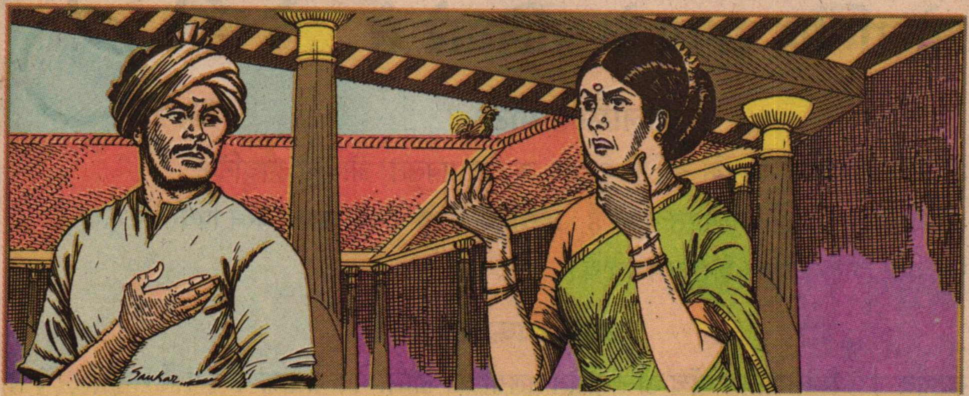

बूढ़े पिता और पत्नी

बहुत पुराने समय की बात है। एक बार बोधिसत्व ने काशी राज्य में एक किसान के घर जन्म लिया। उनके माता-पिता ने नाम रखा-कमल। कमल बड़े लाड़-प्यार में पलने लगा।

बचपन से ही उसकी बुद्धि तीक्ष्ण थी। अपनी अवस्था के बालकों से वह अधिक ज्ञानी और विचारवान था। माता-पिता का दुलारा था, लेकिन दादा का तो वह मानों प्राण था।

दादा बहुत ही बूढ़े थे। वे घर का कोई काम नहीं कर सकते थे। उलटे घर के लोगों को उनकी सेवा में रहना पड़ता। यह बात कमल की माँ को बहुत अखरती थी।

एक दिन कमल की माँ ने अपने पति से कहा, "मैं तो तुम्हारे पिता की सेवा करते-करते खुद ही स्वर्ग सिधार जाऊँगी। सारा दिन उसी की टहल करते रहो। लगता है घर में और काम ही नहीं हैं। आखिर यह कब तक चलता रहेगा!"

"जब तक उनकी आयु है, तब तक उनकी सेवा करना हमारा धर्म बनता है। आखिर मौत के पहले किसी का गला घोंट कर तो नहीं मार सकते।" किसान ने थोड़ी तेज आवाज़ में कहा।

"मार डालने में भी क्या बुराई है? ज़िन्दा रहने में न उसे सुख है न हमें। तिल-तिल कर मरने से तो अच्छा है एक बार मौत आ जाये।" किसान से अधिक पत्नी की आवाज़ तेज़ थी।

किसान को पहले पत्नी की बात बहुत बुरी लगती थी। लेकिन धीरे-धीरे पत्नी के दबाव में आकर उसकी बातों से वह भी सहमत हो गया। वह भी सोचने लगा कि पिता को मार देने में कोई पाप नहीं है, बल्कि वे बुढ़ापे की पीड़ा से मुक्त हो जायेंगे। उसने एक योजना भी बना ली।

एक दिन किसान ने अपने पिता से कहा,

जातक कथा

''बाबूजी! खेत में एक कुआँ खोदवाने के लिए पड़ोसी गाँव के महाजन से कर्ज़ ले रहा हूँ। महाजन कहता है कि दस्तावेज़ पर आप के हस्ताक्षर भी आवश्यक हैं। इसलिए मेरे साथ गाड़ी पर कृपा करके चलिये।''

उसका पिता बेटे की बात सच मान कर उसके साथ चल पड़ा। कमल भी ज़िद करके अपने दादा के पास बैठ गया।

रास्ते में एक छोटा-सा जंगल था। किसान ने जंगल के बीच गाड़ी रोक दी। वह एक फावड़ा लेकर उतर पड़ा और बोला, ''तुम दोनों गाड़ी में ठहरो। मैं अभी आता हूँ।''

पिता के जाने के बाद कमल भी एक फावड़ा लेकर उसी ओर चल पड़ा।

थोड़ी दूर पर कमल का पिता एक झाड़ी के पास गड्ढा खोद रहा था। उसी झाड़ी के दूसरी ओर कमल भी एक गड्ढा खोदने लग गया।

थोड़ी देर में कुछ आहट पाकर किसान रुक गया। जिधर से आहट आ रही थी, उधर जाकर उसने देखा। ''अरे कमल, तुम यहाँ गड्ढा क्यों खोद रहे हो?''

''जिस काम के लिए आप खोद रहे हैं, मैं भी उसी काम के लिए खोद रहा हूँ।'' कमल के उत्तर ने पिता को झकझोर दिया।

पिता ने साहस करके पूछा, ''क्या तुम्हें मालूम है कि मैं क्यों यह गड्ढा खोद रहा हूँ?''

''मुझे मालूम तो नहीं है लेकिन किसी कार्य के लिए ही ऐसा कर रहे होंगे। आप का अनुसरण

करने में क्या कोई दोष है?'' कमल के भोलेपन ने उसके हृदय को छू दिया।

वह अपने बेटे से कुछ छिपा न सका। उसने कहा, ''मैं अपने पिता को दफ़नाने के लिए यह गड्ढा खोद रहा हूँ। उनके मरने पर उनके अन्तिम संस्कार की जिम्मेदारी मुझ पर है, क्योंकि मैं उनका पुत्र हूँ।''

''लेकिन दादा तो अभी जीवित हैं।'' कमल ने जैसे पिता का षड्यंत्र ताड़ लिया हो।

''क्षणभंगुर जीवन का क्या भरोसा! वे किसी समय दम तोड़ सकते हैं। वे बहुत वृद्ध हो चुके हैं।'' पिता ने पुत्र को समझाने की कोशिश की।

''जीवन तो किसी का शाश्वत नहीं है। इसलिए मैं भी अपने पिता के लिए क़ब्र खोद रहा हूँ। पुत्र होने के नाते उन्हें दफ़नाने की जिम्मेदारी मेरी है।'' कमल उसी भोलेपन में कह गया।

उसके पिता को लगा जैसे वह आसमान से नीचे गिर गया हो। बेटे ने उसकी आँख की पट्टी खोल दी। उसे अब समझ में आया कि वह नीच कर्म करने जा रहा था। लज्जा से वह गड़ गया।

किसान अपने पिता और पुत्र के साथ घर लौट आया। किसान की पत्नी उस दिन बहुत प्रसन्न थी और विशेष भोजन तथा मिष्टान्न बना कर अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी।

लेकिन गाड़ी में ससुर को देख कर उसकी सारी प्रसन्नता निराशा में बदल गई।

किसान ने, अपनी पत्नी को कमल के गाड़ी में साथ जाने तथा अपने पिता के लिए गड्ढा खोदने का सारा समाचार सुना दिया।

उसकी पत्नी को काटो तो खून नहीं। वह सिर पीटती हुई बोली, ''हाय भगवान? कैसा युग आ गया! हम बेटे को कितना लाड़-प्यार से पालते हैं, लेकिन वह अपने जीवित पिता के लिए ही क़ब्र खोदता है !''

''लेकिन मैं भी तो वही काम करने जा रहा था। क्या उन्होंने मुझे बचपन में लाड़-प्यार से नहीं पाला?'' किसान ने पत्नी की ओर एक विशेष प्रयोजन से देखा।

उसके बाद पत्नी ने अपने बूढ़े ससुर के प्रति कोई शिकायत नहीं की।

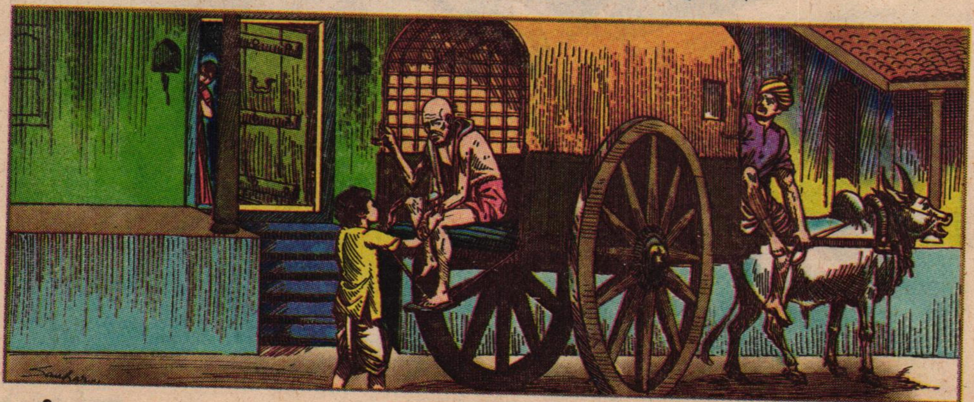

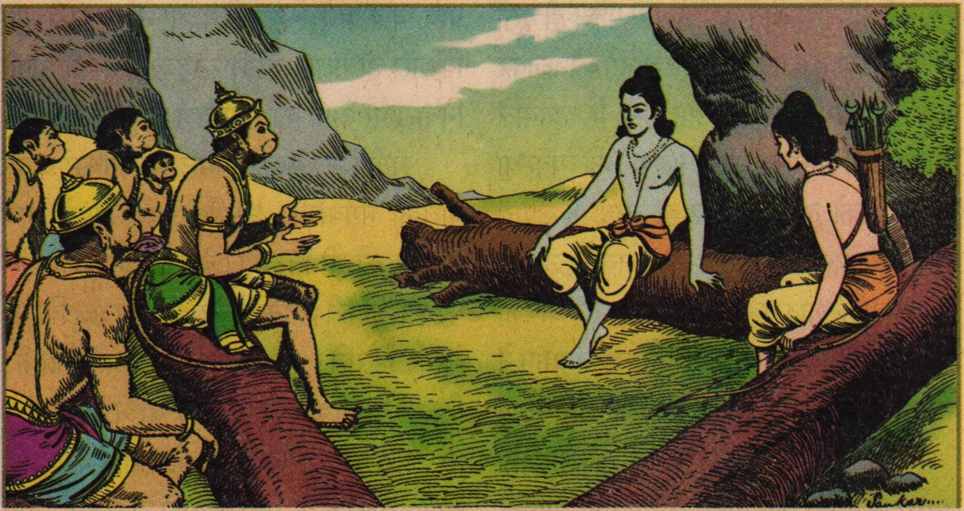

रामायण

तारा ने लक्ष्मण को रोककर कहा, ''जल्दी में सुग्रीव की निन्दा न करो। उसने राम के काम की उपेक्षा नहीं की है। सुग्रीव ने घोषणा करवाई है कि सब वानरों को पन्द्रह दिन में आना होगा, नहीं तो उनको मौत की सजा भुगतनी होगी। आज ही पन्द्रह दिन खत्म होते हैं। सुग्रीव, जो बहुत दिन कष्ट झेलता रहा, आज भोग विलास में मस्त है, यह सच है। परन्तु यह इतना बड़ा अपराध नहीं है। उसने अपने जीवन में अब तक कष्ट ही कष्ट और अपमान झेला है। यह स्वाभाविक है कि दुःख झेलने के बाद सुख की आशा करे। फिर भी अपना कर्त्तव्य उसे याद है। तुम इस बात के लिए माफ़ कर सकते हो। तुम क्रुद्ध न होओ।''

तारा की बातें सुनकर लक्ष्मण ज़रा नरमाया। यह देख सुग्रीव का हौसला कुछ बढ़ा। उसने लक्ष्मण से कहा, ''लक्ष्मण, राम ने जितनी मेरी सहायता की है, उसके लिए जो कुछ मैं करने जा रहा हूँ वह कितना है। यदि राम के काम में मैंने जाने अनजाने कुछ ढिलाई दिखाई है, तो मुझे माफ़ कीजिये। संसार में कोई ऐसा नहीं है, जिसने गलती न की हो।''

लक्ष्मण ने कहा, ''सुग्रीव, तुम्हारी सहायता, हमारे लिए देवताओं की सहायता के समान है। तुम स्वयं एक बार आकर दुखी राम को आश्वासन दे दो। वे बहुत दुखी और शोक विह्वल हो रहे हैं। उनका दुख मुझे सहा नहीं जाता। उनका दुख देखकर ही मैं क्रुद्ध हो उठा था। मुझे क्षमा करो।''

सुग्रीव ने हनुमान की ओर मुड़कर कहा,

किष्किन्धा काण्ड - ५

"वानरों को बुला लाने के लिए मैंने पहले ही दूतों को भेज दिया है। अब कुछ और वानरों को भेजकर पर्वतों में, समुद्र तट पर और वनों में रहनेवाले तरह तरह के वानरों को जल्दी बुलवाने की व्यवस्था करो। उनको लाने के लिए हर तरह के उपाय बरतो। जो वानर दस दिन में नहीं आयेगा, उसको प्राणदण्ड मिलेगा। यह मेरी आज्ञा है। यह घोषणा निकलवा दो।" इस आज्ञा के अनुसार हनुमान ने कई सारे वानरों को अनेक दिशाओं की ओर भेजा।

धीरे-धीरे वानरों के झुण्ड किष्किन्धा आने लगे! काले वानर, पीले वानर, सफ़ेद वानर, भयंकर लाल लाल वानर, सभी तरह के वानर आये। वानर अपने साथ तरह तरह के फल और सुगन्धवाले फूल लाये। उन्होंने उनको सुग्रीव को उपहार में दिये। सुग्रीव पर, जिसने उनके लिए बड़े पैमाने पर अब काम शुरू कर दिया था लक्ष्मण को अब विश्वास हो गया। उसने स्नेहवश उसको अपने निवास पर आने का निमन्त्रण दिया।

सुग्रीव ने उसका निमन्त्रण स्वीकार करके पालकी मँगवायी। उसमें, उसने अपने साथ लक्ष्मण को भी बिठाया। वे फिर राम के निवास की ओर निकले। वानरों ने उस पर श्वेत छत्र किया। चामर हिलाये। शंख बजाये। भेरियाँ बजायीं। सैकड़ों वानर पालकी के साथ चलने लगे।

प्रस्रवण पर्वत पर गुफ़ा के पास पालकी पहुँची। सुग्रीव लक्ष्मण के साथ पालकी से उतरा। राम के पास आकर उसने हाथ उठाकर नमस्कार किया, और वानरों ने भी उसी प्रकार नमस्कार किया। उनके हाथ राम को कमल डंडियों की तरह दिखाई दिये।

राम ने सुग्रीव के पास आकर उसका आलिंगन किया।

औपचारिक रूप से उन्होंने उसकी मदद माँगी। इस पर सुग्रीव ने कहा, "राम, मैं आप की मदद से एक नया जीवन पा सका, इसके लिए मैं आप का कृतज्ञ हूँ। मैं कुछ दिनों के लिए सुख और आनन्द के नशे में डूब गया था, इसलिए अपने कर्त्तव्य-पालन में कुछ विलम्ब हो गया। मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। मुझे आप के कष्ट और अपने कर्त्तव्य का बोध है। लक्ष्मण के जाने और याद दिलाने के पहले ही मैंने सभी दिशाओं से वानरों को बुलाने का प्रबन्ध कर दिया था। मैं आप का उपकार कभी नहीं भूलूँगा और अपने मैत्री धर्म के पालन में अपने प्राणों तक का उत्सर्ग कर दूँगा।" यह कह कर सुग्रीव राम से बार-बार क्षमा माँगने लगा। इसके बाद राम को आश्वासन देते हुए फिर कहा, "मेरे दूतों के कहने पर संसार के कोने कोने से पराक्रमी वानर लाखों और करोड़ों की संख्या में आ गये हैं। वे रावण को मारकर, सीता को आपके पास ला सकते हैं। आप निश्चिन्त रहिये।"

राम ने यह सुनकर सन्तुष्ट होकर कहा, "सुग्रीव, तुम जैसों की सहायता से मैं रावण को मारकर सीता को ला सकता हूँ। अब मुझे इसका पूरा विश्वास हो गया है।"

किष्किन्धा के आसपास अब भी धूल उड़ रही थी। असंख्य वानरों के पद चाप से भूमि काँप रही थी। वानर आते जा रहे थे। तारा का

पिता सुषेण दस हजार करोड़ वानरों के साथ आया। सुग्रीव का मामा, रूप का पिता तार, एक अरब वानरों के साथ आया। हनुमान का पिता केसरी, इक्कीस हजार आठ सौ सत्तर वानरों के साथ आया। लंगूरों का राजा गवाक्ष हजार करोड़ लंगूरों के साथ आया। दो धूम अरब भालुओं को लाया। इसी प्रकार पवन, नील, गवय, दरीमुख, अश्विनी देवताओं के लड़के भैंदद्विद, गज, जाम्बवन्त, रुमावन्त, गन्धमादन, अंगद आदि भी असंख्य सेना लाये। इन वानरों को वनों में, झरनों के पास पहाड़ों पर ठहराया गया। सुग्रीव ने इतनी सारी वानर सेना को राम को सौंपते हुए कहा कि और उससे वे जिस तरह चाहें, उसका उपयोग करें।

राम वानरों की इस असंख्य सेना को देख

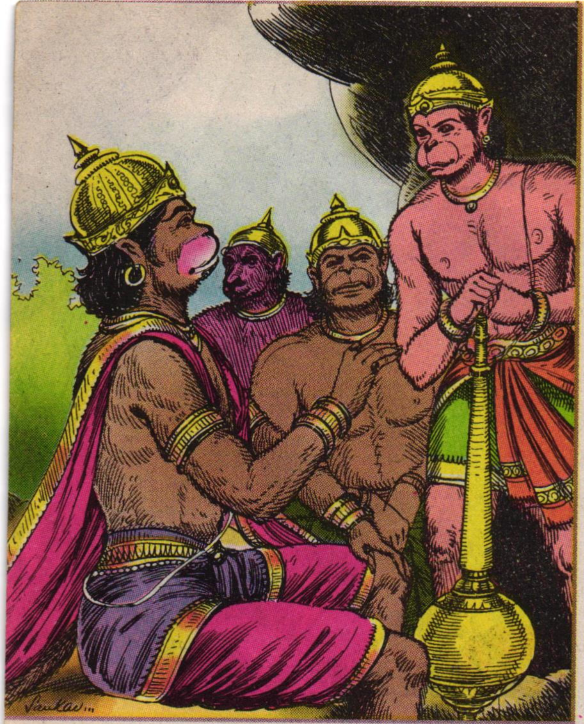

बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें विश्वास हो गया कि वे सीता को अवश्य खोज लेंगे। उन्हें सुग्रीव की मैत्री पर भी सन्देह न रहा। उन्हें अब पक्का विश्वास हो गया कि सुग्रीव मैत्री धर्म का पालन अवश्य करेगा और सीता का पता लगा कर रहेगा।

रावण को मार कर सीता को वापस लाने का काम तो वे स्वयं कर लेंगे। इसमें उन्हें कोई सन्देह न था। फिर कुछ सोचते हुए उन्होंने सुग्रीव से कहा, ''सुग्रीव, पहले हमें दो बातें तय करनी हैं। पहिले यह जानना है कि सीता जीवित है कि नहीं। फिर यह पता लगाना है कि रावण का निवास स्थल कहाँ है। इन दो बातों के मालूम होने पर ही आगे क्या करना है, सोचना है। मैं और लक्ष्मण हम दोनों, ये बातें नहीं जान सकते। यह काम तुम से ही हो सकता है।''

तब सुग्रीव ने विनत नामक वानर नेता को बुलाकर कहा, ''तुम लाख वानरों को लेकर पूर्व की ओर जाओ। रावण का निवास स्थल जानकर, सीता की स्थिति आदि के बारे में जानकर आओ। इस तरह जो ढूँढ़ने के लिए भेजे जायेंगे अगर, एक महीने में वापस न आये तो उनको मौत की सजा दी जायेगी।'' सुग्रीव ने कहा।

फिर उसने नील, हनुमान, महाबल जाम्बवन्त, महोत्र, शरारि, शरगुल्मण, गज, गवाक्ष, गवयुण, वृषभ, मैन्द, द्विविद, विजय, गन्धमादन, उल्कामुख, असंग, अंगद आदि वीरों को दक्षिण की ओर खोजने के लिए कहा, ''तुम दक्षिण के देशों को छान डालो। तुम दक्षिण में समुद्र के पास पहुँचकर, उसे पार करने का कोई उपाय सोचो। समुद्र में सौ योजनोंवाली लंका है। वह रावण का निवासस्थल है। सीता को वहाँ अच्छी तरह खोजो। समुद्र में और भी पर्वत हैं। दक्षिण देशों में यदि और भी कोई रहस्यपूर्ण प्रदेश हो, तो उनको भी देख आओ।

एक महीने के अन्दर जो आकर मुझे बतायेंगे कि उन्होंने ''सीता को देखा है'' तब मैं उनको अपने भोग भाग्य में बराबर हिस्सा दूँगा और मैं उसे उपने प्राणों से भी अधिक समझूँगा।''

इसी प्रकार सुग्रीव ने पश्चिम की ओर तारा के पिता सुषेण आदि को दो लाख वानरों के साथ भेजा। लाख वानरों के साथ शतवली को उत्तर की ओर भेजा।

यद्यपि वह इतने वानरों को इतनी दिशाओं

में भेज रहा था पर उसकी सारी आशाएं हनुमान पर ही थीं। इसलिए उसने हनुमान से कहा, ''तुम भूमि, जल और वायु में जा सकते हो। तीनों लोक तुम्हें मालूम हैं। तुम में अपने पिता वायु के समान प्रतिभा है। इसलिए सीता को पाने के लिए तुम्हें ही सारे प्रयत्न करने होंगे।''

यह सुनते ही राम जान गये कि सुग्रीव को हनुमान पर कितना विश्वास है। राम भी हनुमान की विलक्षण बुद्धि, ज्ञान, उनकी शक्ति और विनम्र भक्ति से बहुत प्रभावित थे। उन्हें वानरों में सबसे अधिक प्रतिभाशाली और सत्यनिष्ठ हनुमान ही लगे। इसलिए उन्हें भी यह आशा होने लगी कि हनुमान ही यह कार्य कर सकेगा। उन्होंने अपनी अंगूठी निकालकर इसलिए उसे दी, ताकि उसके कारण सीता उसे पहचान सके और उस पर विश्वास कर सके।

राम ने हनुमान से कहा, ''सीता यह अंगूठी देखकर ही विश्वास करेगी, भयभीत न होगी।'' हनुमान उस अंगूठी को सिर पर रखकर, राम को नमस्कार करके निकल पड़ा।

''हनुमान! मेरी सब आशाएँ तुम पर ही हैं। तुम यथाशक्ति सीता को ढूँढ़ने का प्रयत्न करो।'' राम ने हनुमान से जाते समय भाव विह्वल होकर कहा।

हनुमान अपने साथ के वानरों के साथ चल पड़ा और अन्य वानर समूह भी और दिशाओं की ओर निकल पड़े।

वे एक महीने बाद ही लौट कर आयेंगे, यह

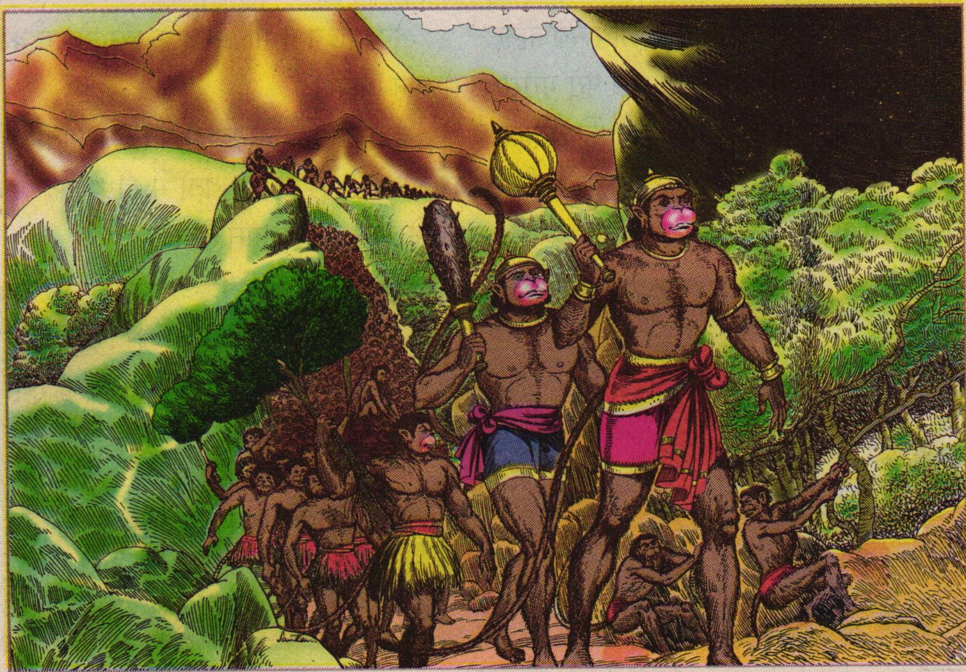

सोच कर राम और लक्ष्मण ने एक महीना प्रस्रवण पर्वत पर ही सीता के समाचार की प्रतीक्षा में काटा।

सुग्रीव को ऐसा लगा, जैसे उसने एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी पूरी कर दी हो।

उन वानरों ने, जो सुग्रीव द्वारा भेजे गये थे, चारों दिशाओं में सीता को खोजा। वे दिन भर सीता को खोजते और रात को किसी बाग में मिलते और वहाँ सो जाते। इस तरह वे एक महीने तक करते रहे।

एक महीना के पूरा होने पर पूर्व, पश्चिम, उत्तर से वानर वापिस आये। उन्होंने सुग्रीव को बताया कि वे सीता का पता नहीं लगा सके।

सुग्रीव को यह समाचार सुनकर बड़ी निराशा हुई। फिर भी, दक्षिण दिशा के वानरों पर उसकी आशा टिकी हुई थी। हनुमान के साथ गये वानर अभी नहीं लौटे थे। हनुमान पर उसे पूरा भरोसा था। इसलिए वह हनुमान के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। जो दक्षिण की ओर गये थे वे सीता को देखते देखते विंध्य पर्वत के पास पहुँचे। उस पर कितने ही शिखर हैं। कितनी ही गुफ़ाएँ हैं। उसके पास कितनी ही नदियाँ हैं। कितने ही दुर्गम अरण्य हैं। वानरों ने बड़ी सावधानी से सारा प्रदेश देखा।

एक जगह उनको एक भयंकर राक्षस दिखाई दिया। उसे ही रावण समझकर, उसको अंगद ने इस बुरी तरह मारा कि वह खून की उल्टी करता मर गया। उसके पास ही उन्होंने सीता को खोजा। पर वह वहाँ नहीं थी।

आखिर सब थककर एक वृक्ष के पास बैठ गये। तब अंगद ने औरों से कहा, '' सीता को ढूँढ़ने का प्रयत्न अभी तक सफल नहीं हुआ है। बहुत दिन हो गये हैं। सुग्रीव सख्त दण्ड देता है। इसलिए हमें और मेहनत करनी होगी। सोना भी छोड़ना होगा।''

गन्धमादन ने भी अंगद के इस निश्चय का समर्थन किया।

वे तुरंत उठे और विंध्य पर्वत में सीता को खोजने लगे। वे अभी पर्वतों में ही थे कि एक महीने की अवधि समाप्त हो गई।

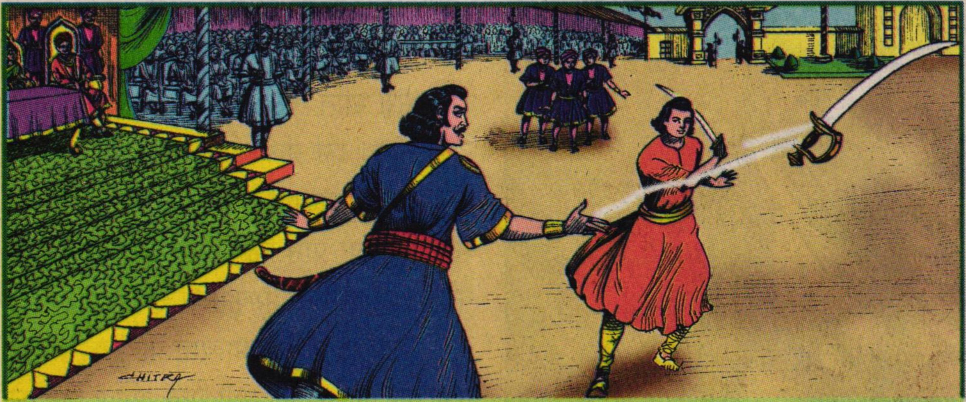

राजा की प्रतियोगिता

पुराने जमाने में कांभोज राज्य पर कुमारवर्मा शासन करता था। उसका विश्वास था कि समस्त विद्याओं में उसकी समता करनेवाला कोई नहीं है और शासन के कार्यों में वह सफल व्यक्ति है।

एक बार वार्तालाप के संदर्भ में रानी कर्पूरवल्ली ने अपने पति से मजाक में बताया कि पैतृक रूप में राजा बनने में कोई महत्व की बात नहीं है, बल्कि अपनी शक्ति के बल पर राज्य का संपादन करना ही बड़ी बात है। रानी ने ये बातें परिहासपूर्वक कहीं थीं, पर राजा कुमारवर्मा पर इन बातों का गहरा असर पड़ा। राजा ने सोचा कि अपने बड़प्पन को रानी के समझ साबित करना होगा। इसके वास्ते उसने प्रतियोगिताओं का प्रबंध किया।

उन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए देश के अनेक प्रांतों से उत्साही युवक आ पहुँचे। उन विद्याओं में कुशल व्यक्तियों ने निर्णायकों का कार्य किया। प्रतियोगिताएँ सफलतापूर्वक संपन्न हुईं। अब केवल पुरस्कार वितरण का कार्य शेष रह गया था।

राजा कुमारवर्मा ने खड्गविद्या में प्रथम आये रामराज नामक व्यक्ति को दिखाकर कहा, ''यह साबित हो गया है कि इससे बढ़कर खड्गविद्या-प्रवीण हमारे देश में दूसरा कोई नहीं है?''

सभी दरबारियों ने स्वीकृति दी।

''इस बात का निर्णय मुझे करना होगा।'' इन शब्दों के साथ राजा अपने हाथ में खड्ग लेकर रामराज के साथ युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हुआ। इस पर सभी लोग विस्मय में आ गये। रामराज तथा कुमारवर्मा के बीच बड़ी देर तक युद्ध होता रहा। अंत में रामराज ने कुमारवर्मा के हाथ के खड्ग को उड़ा दिया। कुमारवर्मा के चेहरे पर काटो तो खून नहीं।

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

इसी वक्त निर्णायकों ने घोषणा की कि रामराज ने प्रतियोगिता के नियमों का उल्लंघन किया है। उन लोगों ने रामराज के कानों में गुप्त रूप से कुछ कहा। रामराज ने राजा कुमारवर्मा के निकट पहुँचकर हाथ जोड़ते हुए कहा, ''महाराज, आप के अद्भुत कौशल के सामने न ठहरने की स्थिति में मैंने प्रतियोगिता के नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिए फिर एक बार युद्ध करने का मौका दिलाइए।''

महाराजा पराजित होकर क्रोध में था, इसलिए उसने झट से रामराज को अनुमति दी। इस बार कुमारवर्मा ने रामराज के खड्ग को आसानी से उड़ा दिया। पुरस्कार राजा को प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार साहित्य-गोष्ठी में सबको पराजित करनेवाले विद्यानाथ को राजा ने ललकारा। दोनों के बीच चर्चा चल रही थी, तभी निर्णायकों ने यह घोषणा करके पुरस्कार राजा को दिया कि विद्यानाथ ने व्याकरण की अनेक गलतियाँ कीं।

इसी भांति सभी क्षेत्रों के पुरस्कार राजा ने जीत लिए। इस प्रकार एक वर्ष नहीं, लगातार पाँच साल कुमारवर्मा ने प्रतियोगिताओं में स्वयं सभी पुरस्कार प्राप्त किये। यह बात उसने रानी को बताई, पर रानी मुस्कुराकर चुप रह गई।

उन्हीं दिनों में कुमारवर्मा को एक भयंकर समाचार प्राप्त हुआ। मंत्री भैरव अनेक दिनों से राज्य को हड़पने का षड्यंत्र कर रहा है। उसकी योजना लगभग पूरी हो चुकी है। किसी भी क्षण भैरव गद्दी पर बैठ सकता है।

यह समाचार मिलते ही राजा कुमारवर्मा अपनी पत्नी के साथ गुप्त रूप से वेष बदल कर राजधानी से भाग निकला। अब राजा एक साधारण मानव था।

कुमारवर्मा तथा कर्पूरवल्ली अपने राज्य के किसी कोने में स्थित एक छोटे से गाँव में पहुँचे। अपने नाम बदलकर गरीबों की भांति मेहनत करने अपने दिन बिताने लगे। जनता के बीच अपने दिन काटते कुमारवर्मा ने उनकी जरूरतों को समझा और उनके दुख सुख का अनुभव करते हुए यह समझ लिया कि उसका शासन जनता के लिए हितकारी न रहा था।

उस वर्ष भी राजा को यह ख़बर मिली कि पहले की भांति इस साल भी प्रतियोगिताएँ होनेवाली हैं। वह बहुत प्रसन्न हुआ। मगर उन प्रतियोगिताओं को लेकर युवकों में किसी भी

प्रकार का उत्साह न देख वह आश्चर्य में आ गया। उसने कई लोगों से इसका कारण पूछा। सबने कहा, ''इन प्रतियोगिताओं का मतलब ही क्या रहा? सारे पुरस्कार राजा को ही प्राप्त हो जायेंगे! ऐसी हालत में हम क्यों अपना समय व्यर्थ करके उनमें भाग लें!''

कुमारवर्मा यह सोचकर प्रसन्न हुआ कि जनता ने उसकी प्रतिभा को स्वीकार कर लिया है। लेकिन उस समय का राजा भैरव राजतंत्र को छोड़ और किसी विद्या में सामर्थ्य नहीं रखता था। इस कारण कुमारवर्मा यह सोचकर राजधानी की ओर चल पड़ा कि वह उन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त कर ले।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर कुमारवर्मा विजयी हुआ।

सभी क्षेत्रों में विजयी हुए व्यक्तियों को अंत में राजा भैरव ने अंतिम प्रतियोगिता के लिए ललकारा! उसके तथा कुमारवर्मा के बीच खड्ग युद्ध हुआ। कुमारवर्मा ने कुछ ही क्षणों में भैरव को बेहथियार कर दिया। तुरंत निर्णायकों ने बताया कि कुमारवर्मा ने प्रतियोगिता के नियमों का उल्लंघन किया है। इसके बाद उन लोगों ने कुमारवर्मा को अलग ले जाकर समझाया, ''पगले, तुम एक व्यक्ति के साथ स्पर्धा नहीं, एक बड़े पद के साथ कर रहे हो। तुम्हें भैरव के हाथों नहीं, सिंहासन के समक्ष हारना था! तुम राजा से क्षमा माँग लो और एक और मौक़ा माँगकर उनके हाथों से हार जाओ, वरना तुम ख़तरों में फँस जाओगे!''

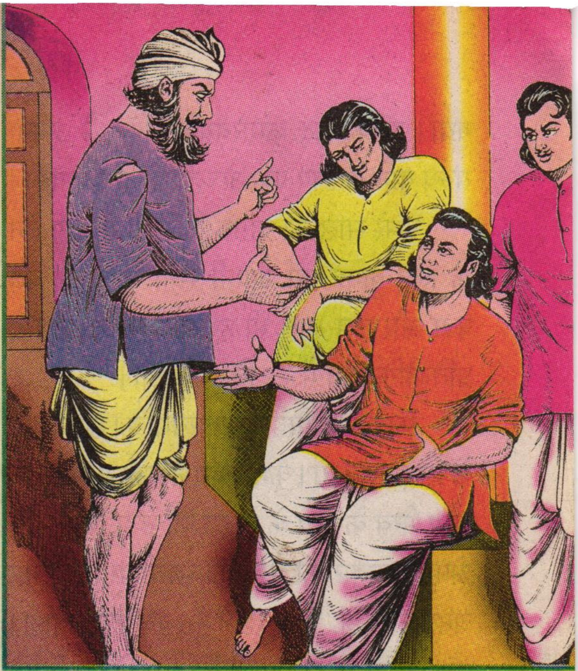

लाचार होकर कुमारवर्मा ने भैरव को विजयी होने दिया। तब जाकर कुमारवर्मा की समझ में यह बात आई कि उसके राजपद पर रहते कैसे वह सभी पुरस्कार प्राप्त कर पाया!

जब कुमारवर्मा गाँव को लौट आया, तब कुछ लोगों ने उसे टोका, ''क्या हुआ? राजा भैरव ही जीत गये हैं न? इसके वास्ते तुम नाहक़ राजधानी में गये ही क्यों? अगर तुम पुरस्कार पाना चाहते हो तो तुम्हें राजा बनना होगा।''

उधर भैरव के शासन में जनता का शोषण बढ़ता जा रहा था। इसे भांप कर कुमारवर्मा देशाटन पर निकल पड़ा। साहसी युवकों को अपने दल में मिला लिया और गुप्त रूप से एक सेना तैयार की। उस सेना के नायक के पद के लिए प्रतियोगिताएँ चलाई गईं। उन प्रतियोगिताओं में कुमारवर्मा विजयी हुआ और वह सेनापति चुना

गया। इसके बाद कुमारवर्मा ने फिर से अपना राज्य पाने के लिए एक अच्छी योजना बनाई।

दूसरे साल की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कुमारवर्मा अपनी सेना के साथ चल पड़ा और उस साल भी हर साल की तरह सभी प्रतियोगिताओं में वह विजयी हुआ।

इसके बाद भैरव ने कुमारवर्मा को खड्ग युद्ध के लिए ललकारा। कुमारवर्मा ने बड़ी सुगमता के साथ भैरव के हाथ के खड्ग को उड़ा दिया और अपनी तलवार को भैरव की छाती पर टिका कर जनता से कहा, ''इस दुष्ट ने मेरा बध करना चाहा। मगर अपने विश्वासपात्रों के द्वारा चेतावनी देने पर मैं बच निकला। मैं एक जमाने का आप लोगों का राजा कुमारवर्मा हूँ। यह भैरव अगर जनता पर अच्छा शासन करता तो मैं इसके काम में दखल न देता। मैं जनता के कल्याण के वास्ते आगे आया हूँ। तुम लोग मुझे फिर से राजा के रूप में स्वीकार करोगे या मुझे इस गद्दी के वास्ते युद्ध करना होगा?'' फिर कुमारवर्मा ने अपनी नकली पोशाकें हटा दीं।

दरबारियों ने कुमारवर्मा को पहचाना और जयकार किये। बिना खून ख़राबी के राज्य कुमारवर्मा के हाथों में आ गया।

इस पर रानी कर्पूरवल्ली ने अपने पति से पूछा, ''यदि आप पहले ही अपनी सेना को बता देते कि आप ही कुमारवर्मा हैं तो आप कभी राजा बन गये होते?''

''मैंने इस बार राज्य को पैतृक संपत्ति के रूप में नहीं, बल्कि अपनी शक्ति के बल पर प्राप्त किया है। यदि अपनी सेना को पहले ही बता देता तो अपने बल से राज्य पाने का मौका न मिलता और न ही इसे प्रमाणित करने का अवसर। अब अपनी शक्ति पर मुझे विश्वास है, इसलिए प्रतियोगिताओं में मुझे भाग लेने की ज़रूरत नहीं है।'' राजा ने कहा।

इसके उपरांत राजा ने प्रतियोगिताओं में भाग लेना बंद कर दिया, इस कारण राज्य की तरफ़ से चलाई जानेवाली प्रतियोगिताओं ने वास्तविक सामर्थ्य रखनेवाले युवकों को अपनी ओर आकृष्ट किया।

चित्रः गाँधी अय्या
26
अपराजेय गरुड़
अरुणा राजा मानवेन्द्र के साथ चन्द्रपुरी लौट जाती है। आदित्य वज्रपुरी चला जाता है। एक चील उसके कन्धों पर बैठती है मानो उसे चेतावनी दे रही हो। सेना शिविर के भीतर मंत्री पुष्पराज धीरसेन के साथ सन्धि की बातचीत कर रहा है। चील पुष्पराज पर हमला करती है। पुष्पराज धीरसेन के सामने आत्म समर्पण कर देता है।
जीर्णोद्धार किये गये मन्दिर में, राजगुरु ध्यानमग्न हैं।
यह क्या? गरुड़ की प्रतिमा के चारों ओर आभा मण्डल!
एक नीला वातावरण! आश्चर्य! यह किस बात का संकेत है?
हे प्रभु! कृपा करके सभी दुष्ट शक्तियों से आदित्य की रक्षा कीजिये!
राजगुरु उठकर जाने लगते हैं।
आभा मण्डल अदृश्य हो गया है! आशा करता हूँ, प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुन ली है।
पर्वत की गुफाओं में। आम्र पुरुष दो आदिवासी युवकों को बुलाता है।
राजा को चन्द्रपुरी की सीमा पर ले जाओ।

आपको मेरी सुरक्षा के लिए चिन्ता है, इसकी मैं सराहना करता हूँ।
आप को सफलता मिले!
आदित्य को जल्दी पकड़ो!
रवीन्द्र, अपने पिता से अपने गुरु की शक्तियों का आवाहन करने के लिए कहो।
राजा विक्रमसिंह और आदिवासी युवक पहाड़ी क्षेत्र को पार करते हैं।
आदित्य, सूर्यपुरी के कुछ सैनिकों के साथ पहाड़ी गुफाओं की ओर बढ़ते हैं।
वे गुफा मन्दिर के परिसर में पहुँचते हैं।
कमान, सैनिकों को बहिर्द्वारों पर पहरा के लिए लगा दो।
मैं उन्हें आज्ञा दे दूँगा, राजकुमार आदित्य।
मैं जाकर यह देखता हूँ कि वज्रपुरी की सेना हमारी सीमा से वापस चली जाये।
आप की जैसी इच्छा, राजकुमार!
सूर्यपुरी के सैनिक सभी बहिर्गामी तथा प्रवेश द्वारों पर तैनात हो जाते हैं।

HA! AH!
विक्रमसिंह तथा युवक जैसे ही जंगल में पहुँचते हैं, कि बाणों की वर्षा होने लगती है...
HA! AHGH!
महाराज! अपने को सम्भालिये। मैं आप को घोड़े से उतरने में मदद करता हूँ।
वहाँ! समय नष्ट न करो! राजा को अपने साथ ले जाओ! शीघ्र!
महाराज! कृपया उठिये। हमलोग तेजी से जायेंगे।
विक्रमसिंह को युवक के घोड़े पर रखा जाता है।
आदित्य एक आदिवासी दम्पति को अपनी ओर आते हुए देखकर रुकता है।
इन लोगों ने एक बार मुझे गुफा मन्दिर में हो रही नरबलि के बारे में कहा था।

महोदय, हमलोग यह बताने के लिए आये कि हमलोगों ने दो आदिवासी युवकों को एक राजा के समान दीखनेवाले व्यक्ति के साथ एक गुफा से बाहर आते हुए देखा है।
वे नागबन्धु दल के हैं। वे पूर्ववत् नरबलि देते आ रहे हैं।
और फिर क्या हुआ?
एक युवक और राजा बाणों से घायल होकर गिर पड़े। जो युवक सुरक्षित था, वह राजा को अपने घोड़े पर रखकर तेजी से मन्दिर की ओर गया।
और जो घायल हो गया था, उसका क्या हुआ?
उसे हमारे एक युवक द्वारा प्राथमिक चिकित्सा के लिए हमारे मुहल्ले में ले जाया गया।
उसे अवश्य ही किसी झोंपड़ी में ले जाया गया होगा।
मैं उसे देखना चाहता हूँ।
हमलोग आप को वहाँ ले जायेंगे।
तुम दोनों यहाँ मेरी प्रतीक्षा करना।
इस ओर महोदय!
आदित्य देखता है घायल युवक की चिकित्सा की जा रही है।
क्रमशः

भारत के विरासत-स्थल

अजन्ता की गुफाएँ

विश्व प्रसिद्ध अजन्ता की गुफाएँ महाराष्ट्र में औरंगाबाद से १०० कि.मी. दूर स्थित हैं। गुफाओं के नाम मात्र से भय और रहस्य की भावना हमें अभिभूत कर लेती है, विशेष कर बच्चों को। लेकिन अजन्ता की गुफाएँ नहीं, क्योंकि ईसा के जन्म से पूर्व अन्तिम २०० वर्षों की अवधि में जब इन गुफाओं का निर्माण किया गया, तब ये बौद्ध भिक्षुओं के निवास-स्थल के रूप में प्रयुक्त किये गये जो ध्यान और प्रार्थना के बाद खाली समय में गुफाओं के अन्तरंग भाग को चित्रांकन और मूर्तिकला से अलंकृत करते थे। इसके लिए विषय का चुनाव, स्वाभाविक ही, बुद्ध के जीवन से जब वे राजकुमार गौतम थे और उनके पूर्व जन्मों से, किया। भित्ति चित्रों के रूप में वर्णित चित्रकलाएँ धार्मिक प्रभाव डालते हुए प्रतीत होते हैं। चित्रांकन में ऐसे रंगों का प्रयोग उन्होंने किया कि वे सैकड़ों वर्षों तक फीके नहीं पड़े। जब रंग धूमिल पड़ने लगे तब पुरावशेष की महत्ता की दृष्टि से उन चित्रकलाओं के परिरक्षण के लिए प्रयास किये गये। इन गुफाओं की खोज अंग्रेज शिकारियों द्वारा सन १८१९ में की गई और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने चित्रकलाओं की प्रतिलिपियाँ बनाने की व्यवस्था की। कुल मिलाकर ३० गुफाएँ हैं, जिनमें पाँच चैत्य गृह हैं और अन्य शेष विहार या मठ हैं। ये गुफाएँ ठोस शिलाओं को खोखला करके निर्मित की गईं मालूम पड़ती हैं। प्रवेश द्वारों को उच्चकोटि की शिल्पकारिता से परिपूर्ण मूर्तिकलाओं से अलंकृत किया गया है। सन् १९८३ में, यूनेस्को ने अजन्ता की गुफाओं को विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल करते हुए कहा है कि ये चित्रकलाएँ और मूर्तिकलाएँ "बौद्ध धार्मिक कला की उत्कृष्ट कला-कृतियाँ (मास्टर पीसेज) हैं।"

समाचार पत्रों में बच्चे

अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता

बंडी, ओम प्रकाश तथा अमरलाल कभी ''बचपन बचाओ आन्दोलन'' (बी.बी.ए.) द्वारा संचालित जयपुर के एक अनाथालय 'बाला' के सदस्य थे। इन्हें बाल श्रम से निकालकर लाया गया था। इन तीनों को हाल में अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई है।

चौदह वर्षीय बंडी को पोगो किड्स अवार्ड दिया गया है। अनाथालय से घर वापस जाकर उसने ६० बच्चों को स्कूल में भर्ती कराने तथा उनकी शिक्षा में आर्थिक सहायता दिलाने में मदद की। पन्द्रह वर्षीय ओम प्रकाश गुर्जर को वर्ष २००७ के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बाल शान्ति पुरस्कार दिया गया। उसने राजस्थान में एक स्कूल के प्राचार्य तथा उसके कुछ अध्यापकों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया जो छात्रों से पैसे ले रहे थे यद्यपि वहाँ शिक्षा निःशुल्क है। इस समस्या को राज्य के मानवाधिकार कमीशन तक पहुँचाया गया। ओम प्रकाश उसी स्कूल में नवीं कक्षा का छात्र है।

अमरलाल को यूनेस्को के तत्वावधान में आयोजित शिक्षा शिखर में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया है। उसे 'बाल श्रम' तथा 'शिक्षा-बच्चों का अधिकार' पर बोलना है।

शतरंज चैम्पियन

पिछले दिसम्बर में दिल्ली में आयोजित राष्ट्रमण्डल शतरंज चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में कालीकट की सी.एच.मेघना ने लड़कियों की ८ वर्ष से नीचे की श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता। अधिक प्रतियोगी नहीं होने के कारण मेघना को ओपन कैटेगरी में शामिल किया गया। चैम्पियनशिप अर्जित करने के लिए उसने १० खेलों में ४ अंक जीते और ३ खेलों में वह बराबर पर रही। चौथी कक्षा की यह छात्रा ४ वर्ष की आयु से शतरंज खेल रही है।

आप के पन्ने

विज्ञान तुम्हारे लिए

रात में आकाश

तुम कितनी बार रात में आकाश को ध्यान से देखते हो? रात में आकाश का दृश्य उन टिमटिमाते तारों और चमकते चाँद के साथ कितना मोहक लगता है। रात्रि का आकाश प्राचीन युग के मनुष्यों के जीवन में एक मुख्य विशिष्टता रही होगी और इसका निरीक्षण आजकल के टी.वी. देखने के समान ही एक आवश्यक आदत बन गई होगी। क्या तुम्हें मालूम था कि सर्वप्रथम चीनियों ने सितारों की एक सुव्यवस्थित सूची संकलित की थी। ईसापूर्व चौथी शताब्दी में शिह शेन, कान ते तथा वु सेन-तीन खगोल शास्त्रियों ने इतने विस्तृत विवरण के साथ सूची का संकलन किया कि एक हजार वर्षों के बाद भी वे प्रयोग में आते रहे। चौथी शताब्दी ए.डी. में चेन चो ने इन सूचियों के आधार पर सितारों का एक मानचित्र तैयार किया। प्राचीन चीनियों ने ही तारामंडल को दिग्दर्शित करने के लिए बॉल और लिंक विधि आरम्भ की थी, जिसका प्रयोग आज भी सितारों की मान चित्रावली में किया जाता है।

तुम्हारा परिवेश

एक भगत कीट

यदि तुमने किसी पौधे पर घात लगाये प्रार्थना की मुद्रा में बद्धहस्त कीट को देखा हो तो तुम समझ जाओगे कि कैसे इसे अपना नाम मिला। इस लम्बे-पतले हरे कीट के सामने के दो पैर मानों प्रार्थना अथवा विनयपूर्वक नमस्ते की मुद्रा में जुड़े होते हैं। परन्तु इसके दिखावे के धोखे में न पड़ना। यह बहुत धूर्त और खतरनाक जन्तु है जिसकी नीयत ठीक नहीं होती। यह बद्धहस्त कीट वास्तव में प्रार्थना नहीं, बल्कि जीवित कृमियों का शिकार करता है। इस कीट के सामने के पैरों में तीक्ष्ण काँटे होते हैं। इनसे अपने शिकार को पकड़े रहता है। यह कृमियों को पकड़ने में दक्ष होता है। यह शरीर को हिलाये बिना अपने सिर को ऊपर, नीचे और बगल में मोड़ सकता है। जब यह सम्भावित शिकार को देखता है तो धीरे-धीरे बड़ी सावधानी से आगे बढ़ता है। जैसे ही शिकार उसकी पहुँच के अन्दर होता है, वह अपने सामने के पैरों को अन्दर खींच लेता है। और तब अचानक उन्हें फैलाकर काँटों से शिकार को दबोच लेता है।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

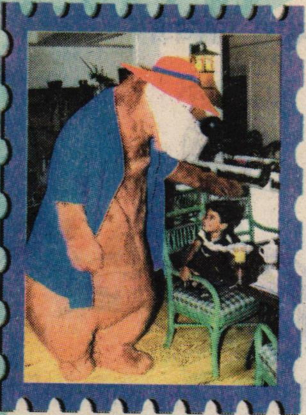

ANANTA PRABHAKARA DATTU

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

भारती शर्मा
ग्रा.: पोस्ट-भूमा बड़ा
भाया : जाजोड
जिला : सीकर-३३२३१८
राजस्थान

विजयी प्रविष्टि

अनुसंधान की लगन।
प्रयोग में मगन॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. पश्मीना छोटे भेड़ों की गर्दन के बाल से बने पशिम ऊन से बनाया जाता है। २. उत्कीर्ण किये पीतल के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध मुरादाबाद। ३. कश्मीर, पर्सियन मोटिफ और पैटर्न के लिए प्रसिद्ध। ४. स्वर्ण, चाँदी, ताम्बा, सीसा, टिन। ५. वाराणसी से।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. **Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)**

Get India's Most Loved Magazine for Children at your doorstep

Subscribe to *Chandamama*

Chandamama stories explore our traditions, folk tales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination. Generations of children have grown up reading *Chandamama* in their native language. Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

I want to subscribe to the following editions of Chandamama: (Tick all that apply)

☐ **English** ☐ **Language**.................................... ☐ **Junior Chandamama**

My Name .... Date of Birth ....

Send my issues to: Mr/Ms..

Address ....

....

....

City.................... State .... Pin ....

Telephone.................... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..

Cheque/DD no....................................Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. (Please add Rs 90 for non-Chennai cheques)

Your subscription will start in 4 weeks.

Please mail the subscribtion form to :

Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.

Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*Language/edition for one year is Rs. 180. Only English: Rs. 180 for 1 year. English + any language: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior + any language: Rs. 540 for 1 year.

*Conditions apply.

Chandamama (Hindi) March 2008 RNI No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08